दानिय्येल का अध्ययन

रेव्ह. पी.ए. चाको

फेथ मिनिस्ट्रीस पब्लिकेशन

दानिय्येल का अध्ययन

रेव्ह पी.ए. चाको

द्वारा

रेव्ह पी.ए. चाको

द्वारा

दानिय्येल का अध्ययन

फेथ मिनिस्ट्रीस प्रकाशन

STUDY OF DANIEL (HINDI)

दानिय्येल का अध्ययन

Author	:	Rev P.A.Chacko Faith Ministries India
Website	:	www.faithministriesindia.webs.com
email	:	faithministriesindia@gmail.com
Copyright	:	Binnies P. Chacko
Published by	:	Rev P.A.Chacko Binnies P. Chacko (E-version)
Printed by	:	Yadav Printers, Itarsi.
I Edition	:	November 2001
E-Version	:	2020

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any manner including Photocopy without written permission from Faith Ministries Publication. Permission is not needed for brief quotation embodied in critical articles and reviews.

Pritnted in India 2001

E-version Published from UK 2020

समर्पण

यह पुस्तक मेरे

गुरूजन

स्व.डॉ.रेव्ह. कुरियन थॉमस

स्व.रेव्ह. सी.के. डेनियल

एवं

लेखक पास्टर वाई. इज़ेकिएल

को समर्पित है

जिनका मेरे विषयाध्ययन

में अविस्मरणीय योगदान रहा

विषय सूची

लेखक की ओर से		1
परिचय	पुस्तक का नाम	4
अध्याय 1.	दानिय्येल का निर्णय	16
अध्याय 2.	दानिय्येल और मूर्ति के स्वप्न की व्याख्या	35
अध्याय 3.	दानिय्येल के भाई संकट में, नबुकदनेस्सर राजा और सोने की मूर्ति	55
अध्याय 4.	दानिय्येल और वृक्ष के स्वप्न का अर्थ बताना	65
अध्याय 5.	दानिय्येल और बाबुल के पतन का संदेश	79
अध्याय 6.	दानिय्येल सिंहों की मांद में	93
अध्याय 7.	दानिय्येल द्वारा "जन्तुओं का स्वप्न	100
अध्याय 8.	मेढ़ा और बकरे का स्वप्न	118
अध्याय 9.	दानिय्येल के "सत्तर सप्ताह का दर्शन	127
अध्याय 10.	दानिय्येल द्वारा "मसीह का दर्शन	149
अध्याय 11.	दानिय्येल द्वारा "विरूद्ध मसीह" का दर्शन	164
अध्याय 12.	दानिय्येल द्वारा "अन्तिम समय का दर्शन"	180

रेव्ह पी.ए. चाको

द्वारा

दानिय्येल का अध्ययन

FAITH MINISTRIES
PUBLICATION

लेखक की ओर से

"दानिय्येल का अध्ययन" नाम का यह पुस्तक हिन्दी भाषा में प्रथम पुस्तक है, जो कि महान परमेश्वर के अनुग्रह का एक और प्रमाण है। 1982 से मैं परमेश्वर के वचन का अध्यापन कार्य आरंभ किया। उस समय से अभी तक विभिन्न बाइबल कॉलेज में परमेश्वर के वचन के अनेक विषयों को सिखाता आ रहा हूँ। लेकिन उन विषयों में मेरी विशेष रुचि भविष्यवाणी के विषय में रही। बाइबल के भविष्यवाणी संबन्धी पुस्तकों में दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों को पिछले 15 साल से लगातार पढ़ाता रहा। उन प्रारंभिक दिनों के विद्यार्थी अपने अध्ययनकाल में मुझसे कहते रहे कि इन पुस्तकों की टीका तैयार की जाए तो सेवा के दौरान बाइबल अध्ययन और अध्यापन में हमें आसानी होगी। इस दिशा में प्रयत्न किया गया और प्रकाशितवाक्य की टीका तैयार की गयी और उसका दो भाग प्रकाशित करने में प्रभु ने सहायता की। तीसरा भाग बहुत अधिक चाहने पर भी अब तक प्रकाशित नहीं हो पाया। आर्थिक कठिनाई ही इसका एक मात्र कारण रहा।

इस बीच प्रभु ने मुझे प्रेरणा दी कि पहले दानिय्येल की पुस्तक तैयार करें। कारण यह है कि प्रकाशितवाक्य का अध्ययन दानिय्येल पर आधारित है। प्रकाशितवाक्य का अध्ययन दानिय्येल की पुस्तक के अलावा समझना असंभव है। दानिय्येल की पुस्तक में समय और भविष्य एवं अनन्तकाल तक का ज्ञान दिया गया है। दानिय्येल की सत्तर सप्ताह समय एवं भविष्य को जानने की समय सारणी है। संसार की राजनैतिक गतिविधियां और अन्त में परमेश्वर के कभी अन्त न होने वाले सनातन राज्य की स्थापना, पवित्र लोगों एवं पापियों के पुनरुत्थान, न्याय एवं अनन्तकालीन जीवन की आशा इस पुस्तक में निहित है। सो मैंने उचित जाना कि यह पुस्तक पहले पाठकों के हाथों में पहुँचे और उसके बाद प्रकाशितवाक्य की टीका जो अभी दो भागों में तैयार है, प्रकाशित किया जाए। अनेक वर्षों तक इस पुस्तक को अपने अन्दर रखा रहा। भविष्य संबन्धी सारगर्भित यह दानिय्येल की पुस्तक बहुत दिन तक गर्भावस्था में ही रही।

इस बीच सुसमाचार प्रचार का भ्रमण, बाइबल कॉलेज के अध्यापन

कार्य, आत्मिक यात्रा रेडियो कार्यक्रम में सक्रिय रुप में शामिल होना, इस विलम्ब का कारण है। यह रेडियों एक दैनिक कार्यक्रम होने से दिन रात लिखने एवं रिकार्ड करने में समय लगाना पड़ा। एक व्यस्ततम कार्य जिसने मुझ से अधिक समय की मांग की। इसके अलावा आर्थिक अभाव एक और मुख्य कारण रहा। ये सब इसके पुस्तक रुप में तब्दील होने में बाधा या विलम्ब का कारण रहा। याद रखिये मसीही जगत में अभी भी मसीही साहित्य का अभाव है। किसी ने कहा, **"मसीहियों ने पढ़ना सिखाया परन्तु, साम्यवादियों ने साहित्य पढ़ने को दिये"**। क्या ही दुःख और खेद की बात है। मसीही जगत में सही और आत्मिक साहित्य की अभी भी बड़ी मांग है। मै आपको भी इस ओर प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप खूब प्रार्थना करें और खूब धन इस ओर लगाएं ताकि स्वर्ग में आपको प्रतिफल की प्राप्ति हो। इस विषय में एक और बात मै समझाता हूँ और वह यह है कि परमेश्वर के निकट सब कार्यो का एक नियत एवं निर्धारित समय है। सो मैं सोचता हूँ और मानता भी हूँ कि यह समय परमेश्वर की ओर से निश्चित और निर्धारित सही समय है।

इस पुस्तक को लिखित रुप मे तैयार करने में अनेक महीना लगा एवं अनेक विद्वानों के पुस्तकों के अध्ययन द्वारा प्राप्त जानकारी इसके सरल लेखन में मदद साबित हुई। उनमें से स्टिवन्स और गॉर्डन लिन्डसे प्रमुख है। उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान हेतु मै उनका आभारी हूँ।

इस पुस्तक के पाण्डुलिपि तैयार करने में प्रिय भाई विनय मसीह एवं भाषा शुद्धि में भाई रोहित नागे ने कठिन परिश्रम किये। इसको पुस्तक रुप में लाने में मेरा बेटा बिन्नीस पी. चाको दिन रात लगातार यत्न किया। परमेश्वर इन सबके श्रम और कठिन परिश्रम का उचित प्रतिफल प्रदान करें।

इस अवसर पर यादव प्रिन्टर्स को मै बिल्कुल भी भुलाना नहीं चाहता जिन्होंने हमारे आर्थिक अभाव के बावजूद हमारे साथ सहयोग किया और समय पर इस पुस्तक को छापकर देने में साथ दिया। जीवित और सच्चा एवं सृष्टिकर्ता परमेश्वर उनके व्यापार पर बड़ी आशीष प्रदान करने पाए।

इस समय उन सब भाई बहनों का भी मै आभारी हूँ जिन्होंने अपने

दान द्वारा एवं फेथ मिनिस्ट्रीस बुक क्लब में सदस्यता लेकर इस प्रकाशन कार्य में अपना सहयोग एवं योगदान दिया। परमेश्वर आप सबके अर्थ (Finance) अपनी ऐसी असीम आशीष आने दे कि आपके पास रखने की जगह न रहे ताकि आप प्रभु की सेवा में अपनी आर्थिक आशीषों को और अधिक लगा सके। प्रभु हर्ष से देने वालों से प्रेम रखता है। सो प्रभु इस महान यत्न में साथ देने एवं सहयोग करने के कारण आपको आशीषित करने पाए।

उन अनेक भक्तों एवं मेरे शिष्यों को इस समय स्मरण करता हूँ जो इस शुभ कार्य के लिये निरन्तर प्रार्थना करते रहे। प्रभु ने आपकी प्रार्थना पर कान लगाया है और यह कार्य अब साध्य हुआ है। सो प्रभु आपको भी बहुतायत से आशीष प्रदान करें।

इस पुस्तक में दिये गये सभी सुन्दर और सुस्पष्ट चित्र मेरे प्रिय भाई और मेरे विश्वस्थ शिष्यों में से एक, पास्टर चन्द्रकान्त बी. घोड़के, कल्याण द्वारा तैयार किया गया है। यह शुभ कार्य इस समय सराहनीय है। प्रभु उनकी सेवकाई पर बड़ी आशीष प्रदान करे।

अन्त में इस पुस्तक को उन सब हिन्दी भाषी, समय और भविष्यवाणी को जानने में इच्छुक, प्रभु के वचन के प्रेमी विश्वासी भाई बहनों एवं प्रभु के सेवकों के आत्मिक लाभ हेतु, हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के पावन एवं पवित्र चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

पास्टर पी. ए. चाको
34,न्यू जागृति कॉलोनी
काटोल रोड़,
नागपूर

परिचय

पुस्तक का नाम

इस पुस्तक के बहुचर्चित व्यक्ति दानिय्येल होने से उसी के नाम से यह पुस्तक जानी जाती है। बाइबल धर्मशास्त्र में इसी नाम से दाऊद का दूसरा पुत्र (1 इति– 3:1) और एज्रा के समय का एक याजक भी है (एज्रा. 8:2;10:6; नहे.10:6)। दानिय्येल शब्द का अर्थ है–"परमेश्वर मेरा न्यायी"।

यहोयाकीम राजा के शासन के चौथे वर्ष में नबूकदनेस्सर द्वारा गुलाम बनाकर बाबुल ले जाए गये राजकीय सन्तान एवं यहूदा गोत्र के जवानों में से एक था दानिय्येल (दानि.1:3–6)। बन्धुवाई में रहते समय ईश्वरीय भक्ति एवं ज्ञान में वह प्रसिद्ध हुआ; (यहेज.14:14,20; 28:3)। उस के ईश्वर पर भरोसा एवं भक्ति के कारण दारा राजा के समय में देश के तीन अध्यक्षों में वह प्रमुख हो गया (दानि.6:1–3)। यहूदा राष्ट्र 70 साल की बन्धुवाई के पश्चात् यहूदा देश की ओर वापस जाते हुए देखने का भी सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ (दानि.6:28; एज्रा.1:1–11)। वृद्धावस्था के कारण यरूशलेम की ओर न लौटते हुए वह बाबुल में ही रहा और वहीं उसकी मृत्यु हुई एवं दफनाया गया। यह जानकारी हमें यहूदी परंपरा से प्राप्त होती है।

इतिहास की पुस्तकें

बाइबल की पुस्तकों में लेखों (Writings) का एक विभाग है। उसमें कुछ इतिहास की पुस्तकें आती हैं जैसा कि एज्रा, नहेम्याह, इतिहास की पुस्तकें और दानिय्येल। इन में से एज्रा, नहेम्याह और 1 और 2 इतिहास, इतिहास की पुस्तकें कहलाती हैं। पर दानिय्येल एक भविष्यवाणीयुक्त इतिहास की पुस्तक है। दूसरे विभाग के भविष्यवाणी की पुस्तकों में शामिल न करते हुए तीसरे भाग में इन्हें शामिल करने का कारण यह था कि इन पुस्तकों के लेखक अंगीकार किये गये भविष्यवक्ता नहीं थे। दानिय्येल एक राज्य का अधिपति और एज्रा एक याजक एवं नहेम्याह एक राज्यपाल था। इतिहास की पुस्तकों के लेखक एज्रा, यहूदी परंपरा के दावे के अनुसार एक याजक था। इस कारण दानिय्येल की पुस्तक बड़े नबियों (Major Prophets) एवं छोटे नबियों (Minor Prophets) के बीच में आती

है परन्तु वह न तो बड़े नबियों में शामिल है न छोटे नबियों में। वह एक भविष्यवाणीयुक्त इतिहास की पुस्तक है।

लेखक

बाबुल में रहने वाले दानिय्येल के द्वारा B.C. 6 वीं शताब्दी में यह पुस्तक लिखे जाने के संबन्ध में यहूदी एवं मसीही परंपरा गवाही देती है। इस गवाही के सत्य होने का प्रमाण निम्नलिखित है:–

1. स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने दानिय्येल की पुस्तक से उल्लेख करते हुए बताया है कि यह दानिय्येल के द्वारा लिखा गया है (मत्ती.24:15; दानि.9:27; 12:11)। दानिय्येल 9:27 और 12:11 के बारे में आलोचना करने वाले दावा करते हैं कि वह मकाबियों के समय में लिखा गया है, परन्तु उन्हीं भागों को यीशु मसीह उल्लेख करते हुए कहते हैं कि वह दानिय्येल ने कहा है।

2. यीशु मसीह की गवाही, इस पुस्तक के स्वयं के दावे के द्वारा भी प्रकट हुई है अर्थात् दानिय्येल यहां प्रथम पुरूष (First Person) में लिखता और यह दावा भी करता है, कि उसको ईश्वरीय दर्शन प्राप्त हुआ था (7:2; 4:6–8,28; 8:1–3,15,18; 9:2–4; 12:5–8)। उन्हें प्राप्त दर्शनों को एक पुस्तक के रूप में लिखे जाने के आदेश प्राप्त होने का वर्णन 12:4 में आया है।

दानिय्येल की संपूर्ण पुस्तक एक ही लेखक की लेखनी है। यदि दानिय्येल को इसका संपूर्ण दर्शन प्राप्त है तो इसका संपूर्ण लेखक भी दानिय्येल स्वयं ही है। यह संपूर्ण पुस्तक की एकता इसके एक लेखक होने का प्रमाण है जो निम्नानुसार है :–

क) इसका प्रथम भाग दूसरे भाग के लिये मार्ग तैयार करता है और द्वितीय भाग प्रथम भाग पर आश्रित है। दूसरे अध्याय में वर्णन किया गया विषय 7, 8 अध्यायों में दोहराया गया है। 7,8 अध्याय दूसरे अध्याय के बिना समझना मुश्किल है। अध्याय 9,10,11,12 के विषय को समझने के लिये दूसरा अध्याय मदद करता है। ये सभी अध्यायों का विषय दूसरे अध्याय पर आश्रित एवं आधारित है। इसके अलावा 2:28; 4:2,7,10 को 7:1,2,15 से मिलाईये।

ख) एक विभाग के विभिन्न भाग एक दूसरे से संबन्धित हैं। उदाहरण के लिये मन्दिर के पात्रों का ले जाया जाना (1:1,2), पांचवें अध्याय के बेलशस्सर

राजा के द्वारा तैयार किये गये जेवनार को समझने में रास्ता तैयार करता है। इसके अलावा 3:12 को 2:49; से मिलाईये, 9:21 को 8:15–17 से मिलाईये और 10:12 को 9:23 से मिलाकर अध्ययन कीजिये। इस प्रकार यह पुस्तक पढ़ें तो समझ में आता है कि इसके अलग–अलग भाग एक दूसरे से संबन्ध रखते हैं।

ग) दानिय्येल का स्वभाव संपूर्ण पुस्तक में एक समान दर्शाया गया है। एक ही दानिय्येल पुस्तक के आदि से अन्त तक प्रकट होता है।

घ) पुस्तक के साहित्यिक एकता बाइबल के सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। अनुकूल बोलने वाले विद्वान ही नहीं परन्तु आलोचना करने वाले विद्वान भी इस बात को मानते हैं, जैसा कि एस.आर. ड्राईवर, एच.एच.रोली, फैफर आदि आलोचना करने वाले भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

3. इस भविष्यवाणी की शुद्धता को नये नियम के निम्नलिखित भाग परोक्ष रूप में अंगीकार करते हैं (मत्ती.10:23,16:27–29;19:28;24:30; 25: 31;26:64)।
4. यह पुस्तक बाबुल, फारस आदि साम्राज्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रकट करती है।

दानिय्येल के लेखक होने की बात का विरोध करने वाला पहला व्यक्ति, ईसा सन् तीसरी शताब्दी में जीवित रहे दार्शनिक पोरफिरी (Porphyry) था। मसीहियों के खिलाफ लिखे 'Against the christians' नाम के निबन्ध में उन्होंने दानिय्येल की पुस्तक के बारे में यह मत प्रकट किया है कि यह पुस्तक अन्तियोकुस एप्पिपानस के समय में यहूदा में जीवित रहने वाले किसी ने लिखी है। उसका कारण यह था कि यह पुस्तक अन्तियोकुस एप्पिपानस के संबंध में ठीक–ठीक वर्णन करता है। इस कारण वह कहते हैं कि दानिय्येल की पुस्तक यह घटित होने के पश्चात् लिखा गया इतिहास है। कोई भी बात या घटना के घटित होने के पहले लिखा जाना, उनके विचार से असंभव सा है। परमेश्वर और उसके दर्शन एवं आध्यात्मिक बातों पर पोरफिरी के विश्वास के अभाव के कारण अमुक प्रकार के विचार के वे गुलाम बन गए, और वह इस प्रकार के निष्कर्ष पर पहुँचे।

पोरफिरि के आलोचनात्मक वक्तव्य के पश्चात् 17,18 शताब्दी में

चन्द लोगों ने दानिय्येल के लेखक होने की बात का विरोध किया। परन्तु पिछली शताब्दी में एल.बेलतोल्ट (L.Beltholt) ने गंभीर रूप से पुस्तक पर आक्रमण किया है। उस के पश्चात् दानिय्येल के लेखक होने की बात का खण्डन किया और यह घोषणा की कि यह पुस्तक B.C.दूसरी शताब्दी में मकाबियों के समय में लिखी गयी है। इस प्रकार की विचारधारा का बहुत से लोगों ने उसके बाद भी विरोध किया है। इस प्रकार दानिय्येल के लेखक होने के विचार का विरोध लोग क्यों कर रहे थे ?

पहली बात– दानिय्येल की पुस्तक 11 अध्याय 36–45 आयतों को छोड़कर येलगी राजवंश के समय के मिस्र और सीरिया के बीच युद्ध और अन्तियोकुस एप्पिपानरा के संबन्ध में ठीक–ठीक वर्णन किया जाता है । आठवें अध्याय में भी इस समय का वर्णन मिलता है। इस प्रकार की बातें एक चश्मदीद गवाह ही वर्णन कर सकता है। इस कारण यह घटित होने के पश्चात् ही दानिय्येल की पुस्तक लिखा जाना संभव है। यह उन आलोचना करने वालों का निष्कर्ष है। ईश्वरीय योजना के अन्तर्गत पहले से बातों को प्रकट करने की भविष्यवाणी के कार्य पर इनको विश्वास नहीं था।

दूसरी बात– आलोचकों के विचार के अनुसार इस भविष्यवाणी में ऐतिहासिक त्रुटियां एवं कई विरोधाभास की बातें हैं। यदि वास्तव में यह दानिय्येल के द्वारा लिखा होता तो इस प्रकार की त्रुटियां होने की संभावना नहीं होती। उन लोगों द्वारा दिखाई जाने वाली मुख्य त्रुटियां और उसके उत्तर निम्नानुसार हैं :–

1. दानि–1:1 के यहोयाकीम के शासन के तीसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर यरूशलेम पर चढ़ाई करने का वर्णन, समय के हिसाब से एक बड़ी त्रुटि है। कारण, कि यहोयाकीम के शासन के चौथे वर्ष तक कसदी लोगों ने यरूशलेम पर चढ़ाई नहीं की थी (यिर्म.25:1,9;46:2)। यिर्मयाह–25:1 के अनुसार यह यहोयाकीम के शासन का पहला वर्ष था। यदि दानिय्येल इसका लेखक होता तो इस प्रकार की एक त्रुटि नहीं होती।

इस का उत्तर यह है कि दानिय्येल बाबुल के क्रम के अनुसार और यिर्मयाह फलस्तीन के क्रम के अनुसार वर्ष के हिसाब करने से है। बाबुल की रीति के अनुसार, राजा सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष उनके शासन

का पहला वर्ष नहीं है, बल्कि वह उनके सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष है। उसका अगला साल, प्रथम वर्ष के रूप में गिनते थे। लेकिन फलस्तीन के हिसाब से सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष उन का पहला वर्ष है। इस कारण दानिय्येल के कथनानुसार यहोयाकीम के शासन का तीसरा वर्ष यिर्मयाह के अनुसार चौथा वर्ष ही है। वह निम्नानुसार समझ सकते हैं :-

बाबुल की रीति	–	फलस्तीन की रीति
सिंहासन पर विराजमान होने का वर्ष	–	पहला वर्ष
पहला वर्ष	–	दूसरा वर्ष
दूसरा वर्ष	–	तीसरा वर्ष
तीसरा वर्ष	–	चौथा वर्ष

इस प्रकार दानिय्येल की पुस्तक के तीसरे वर्ष की समस्या समाप्त हो जाती है। इस के अलावा तीसरे वर्ष की सूचना, दानिय्येल की पुस्तक दानिय्येल द्वारा ही लिखे जाने का एक और प्रमाण है। इसका कारण, दानिय्येल की पुस्तक के लेखक को यिर्मयाह की पुस्तक के संबंध में अच्छी जानकारी थी, (दानि.9:2)। इतना ही नहीं कि वह यिर्मयाह नबी की किताब को अच्छी तरह जानता था, बल्कि लेखक ने यिर्मयाह नबी की पुस्तक 25:1 पद भी पढ़ रखा था। क्योंकि इसी अध्याय में बाबुल की बन्धुवाई का भी वर्णन आता है अर्थात् बन्धुवाई 70 वर्ष की होगी (यिर्मयाह.25:11)। जिस प्रकार आलोचना करने वालों के कथनानुसार यदि दानिय्येल की पुस्तक का लेखक B.C.दूसरी शताब्दी का कोई एक अज्ञात व्यक्ति होता, तो यिर्मयाह के चौथे वर्ष के बदले वह तीसरा वर्ष क्यों अंकित करता? (क्योंकि यिर्मयाह के समय का वर्णन दानिय्येल जानता था)। यह गलती वह बाद वाले लेखक से क्यों हुई? एक बात स्पष्ट है कि यह दानिय्येल भविष्यवक्ता के पुस्तक के समय के वर्णन की गलती नहीं बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि यह पुस्तक निःसन्देह दानिय्येल ने स्वयं लिखी है।

2) दानिय्येल 5 अध्याय में बेलशस्सर को "राजा" कहा गया है। वास्तव में बाबुल का अंतिम राजा बेलशस्सर का पिता नेबोनिड्स था। यदि ऐसा है तो बेलशस्सर को राजा कहना लेखक की एक गलती नहीं है?

पिछले समय में प्राप्त मिट्टी के लेखों में बेलशस्सर को राजा का बेटा संबोधित किया गया है। लेकिन पिछली शताब्दी के मध्यान्तर समय में बाबुल से प्राप्त मिट्टी के लेखों में यह स्पष्ट लिखा है कि नेबोनिड़स, राजा का अधिकार अपने पुत्र बेलशस्सर को सौंपकर अरब की ओर चला गया। नेबोनिड़स की अनुपस्थिति में राज्य के शासन का भार बेलशस्सर द्वारा उठाया गया। राजा का आदेश शासन में रहने वाले के नाम से दिया जाता था और शपथ ग्रहण की जाती थी। ये दोनों कार्य नेबोनिड़स बेलशस्सर के नाम से किये जाने का प्रमाण इन लेखों में लिखा गया है। सो बेलशस्सर नेबोनिड़स के राजप्रतिनिधि (Regent) अर्थात् उन की अनुपस्थिति में शासन करने वाले के रूप में शासक रहा। इस प्रकार शासन के अधिकार में रहने के कारण बेलशस्सर को दानिय्येल द्वारा राजा कहे जाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

3) नेबोनिड़स बेलशस्सर का पिता है फिर भी दानि.5रू18 में नबूकदनेस्सर को बेलशस्सर का पिता कहा गया है। लेकिन यह दानिय्येल के द्वारा की गई कोई गलती नहीं है, बल्कि यह यहूदियों द्वारा उपयोग किये जाने वाला एक प्रयोग या एक साधारण सी शैली है । साधारण रूप में दादा को पिता कहने की रीति उनके बीच में प्रचलित थी। इसका अर्थ बाप–दादा या पूर्व पिता है (उदा.मत्ती.1:1)। इसके अलावा नबूकदनेस्सर के पश्चात् एविल मेरोड़क के द्वारा बाबुल साम्राज्य पर शासन करने का वर्णन यिर्मयाह द्वारा कहा गया है (यिर्म.52:28–31)। दानिय्येल यिर्मयाह नबी की पुस्तक के बारे में अच्छी तरह जानता था। सो उपरोक्त वर्णन में पिता का अर्थ दादा या पूर्व पिता है।

4) एक और आरोप यह है कि दारा राजा के बारे में जो वर्णन है, वह ऐतिहासिक दृष्टिकोण से गलत है (दानि.5:31–6:28)। क्योंकि इतिहास में या अन्य लेखों में ऐसे एक राजा के बारे में कोई वर्णन नहीं है। कुछ लोग इस राजा को कुस्रु के तीसरे अनुगामी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे कहते है, कि इसमें हिस्टास्पस के पुत्र दारा के साथ तुलना करने का प्रयास किया है। पर यह सही व्याख्या नहीं है, क्योंकि यहां बताया गया है कि दारा फारस के राजकीय वंश का है। लेकिन यहां दानिय्येल के द्वारा बताया गया दारा मादी देश का है। यदि ऐसा है, तो यह दारा कौन है ? पुरातनकाल के इतिहासकार इस प्रकार के एक राजा के बारे में नहीं बताते हैं। लेकिन बाबुल पर विजय पाने एवं आगे के शासन में कार्य करने वाला व्यक्ति लेखों और इतिहास के

अनुसार राज्यपाल गुबारू है और वही यह दारा है लेकिन इस में कुछ विरोधाभास होने से एच.एच. रोली जैसे आलोचकों ने इस विचार को त्याग दिया है।

लेकिन रोली के विरोधी विचार को पार करने वाले प्रमाण जे.सी. विट्कोम्प ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक **"मादी दारा"** में सूचित किया है। विट्कोम्प ने यह स्पष्ट किया है कि गुबारू बाबुल और नदी के उस पार के देशों पर कुस्रु द्वारा राज्यपाल नियुक्त हुआ था। कुस्रु के चार, छः, सात, आठ आदि वर्षों के लेखों में गुबारू का नाम आता है। विट्कोम्प का वक्तव्य यहाँ उल्लेख करता हूँ –"बेलशस्सर के बाद राजा बने एवं राज्य के ऊपर अधिपति, एवं अध्यक्षों को नियुक्त करने वाला दारा मादी, बाबुल पर और नदी के उस पार राज्यपाल नियुक्त गुबारू होने की बात में कोई शंका नहीं है। दानिय्येल की पुस्तक में दिया गया वर्णन और लेखों और इतिहास का वर्णन इसी व्यक्ति को प्रमाणित करता है", तो फिर एक और सवाल आता है कि इस व्यक्ति का नाम गुबारू है तो दानिय्येल ने इसको दारा क्यों पुकारा? इसका उत्तर सुप्रसिद्ध पुरातत्व वैज्ञानिक ऑलब्राइट देता है। उनका कहना है कि दारा नाम फारस की भाषा में दारियावहुश है, यह बाद में रोम साम्राज्य में कैसर के समान एक उपनाम बना। फारस की भाषा में दारा शब्द का अर्थ राजा होता था। दारियावहुश का मतलब है राजकीय जन (Royal one)। कुस्रु द्वारा राज्यपाल अथवा राजा नियुक्त किये गये दारा ने किस प्रकार सारी पृथ्वी पर रहने वाले देश–देश और जाति–जाति के सब लोगों और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वालों के पास आदेश भेजे? (दानि–6:25)। यह एक और शंका है, क्योंकि दारा मादी की शासन सीमा नबुकदनेस्सर के अधीन पाये जाने वाले पुराने साम्राज्य थे (एशिया मैनर, उत्तरी सीरिया, मादी अथवा फारस आदि नहीं आता है)। सारी पृथ्वी के लिये यहाँ उपयोग किये गये आरा (ara) जो अरामी शब्द है, उसका इब्रानी शब्द एरेस (eres) है, जिसका अर्थ समान राज्य या देश है। यदि ऐसा है तो यह प्रश्न स्वयं सही हो जाता है। एक और बात बताना आवश्यक है अर्थात् हम्मुरब्बी के समय से बाबुल के राजा स्वयं स्वीकार किया गया एक आधिकारिक नाम था "सारी पृथ्वी का राजा" अर्थात् सब लोगों का राजा। इस कारण दारा राजा वही पुरातन प्रक्रिया को फिर से दोहरा रहा था ।

5. दानिय्येल की पुस्तक को भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में शामिल नहीं

करने का कारण यही था, कि भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों के लिखे जाने के बाद यह लिखा गया है।

लेकिन यह विवाद बिलकुल भी सही नहीं है क्योंकि दानिय्येल की पुस्तक को भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों के साथ शामिल करने वाले पूर्वज आदिकाल में थे। उदाहरण के लिये सर्दीस के बिशप मिलेतुस (A.D.175) के एकलॉगस (Eclogues) में पुराने नियम की पुस्तकों की सूची तैयार करते समय इस प्रकार रखा गया है– "यशायाह, यिर्मयाह, 12 भविष्यवक्ता, दानिय्येल, यहजकेल, एज्रा आदि भविष्यवक्ता"। उनके सुरियानी बाईबल में भी यही क्रम रखा गया है। इसके अलावा कई यूनानी हस्तलेखों में भी दानिय्येल को भविष्यवक्ताओं के साथ रखा गया है।

विवाद के लिये इतना वर्णन किया है पर दानिय्येल को लेखों के विभाग में शामिल करने का मुख्य कारण यह था कि वह एक आधिकारिक नबी नहीं था। आधिकारिक रूप में वह एक राज्य का अध्यक्ष या एक राजनीतिज्ञ (statesman) था। पर दानिय्येल के अन्दर भविष्यवाणी की आत्मा थी। इस कारण उसे नये नियम में भविष्यवक्ता कहा गया है (मत्ती-24:15)। इसी अर्थ में बिलाम को भी भविष्यवक्ता कहा गया है (IIपतरस-2:16)। इन कारणों से लेखों के विभाग में दानिय्येल की पुस्तक शामिल की जाती है। इसलिये लिखने के समय के साथ कोई संबंध नहीं होने का ज्ञान प्राप्त होता है।

6. अपोक्रीपा के उपदेश में (B.C.175), यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल आदि की सूचना है लेकिन दानिय्येल के संबंध में मौन धारण किया गया है। इस कारण कहते हैं कि उस समय तक दानिय्येल की पुस्तक को लिखा नहीं गया था। लेकिन यह दानिय्येल की पुस्तक उस समय तक नहीं लिखे जाने का एक प्रमाण नहीं है क्योंकि आसा, यहोशापात, मोर्दकै, एज्रा आदि के बारे में भी उपदेशक की पुस्तक में कोई संकेत नहीं है। भविष्यवक्ताओं के झुण्ड में दानिय्येल को शामिल नहीं करने का कारण वह एक आधिकारिक भविष्यवक्ता नहीं होने से था।

7. मसीहा, स्वर्गदूत, पुनरूत्थान, न्याय आदि उन्नतिशील दैवीय शास्त्र विधियों के बारे में इस पुस्तक में वर्णन होने के कारण वह बन्धुवाई के पश्चात्

के समय को दर्शाता है ।

यह विवाद भी सही नहीं है क्योंकि ये सब विषय पुराने नियम के अन्य भागों में भी वर्णन किये गये हैं। मसीहा के संबन्ध में वर्णन उत्पत्ति के आरंभ में ही (3:15) आया है, और पूरे पुराने नियम में यह विचार व्याप्त है। भजन दो में मसीहा शब्द उपयोग किया गया है (2:1,2)। मसीहा का अर्थ है – अभिषिक्त। स्वर्गदूत के संबंध में आदि से अन्त तक वर्णन आता है। पुनरूत्थान का वर्णन पुराने नियम के अन्य भागों में भी पाया जाता है (यशा. 26:19; 53:10; यहेज.37; अय्यूब.19:25; 1राजा.17; 2राजा.4)। लेकिन दानिय्येल में केवल एक ही स्थान पर पुनरूत्थान का वर्णन आता है (दानि.12:2)। न्याय के संबन्ध में भी पुराने नियम के अन्य स्थानों में वर्णन आता है (यशा.42:2–4; योएल 3:9–17; भजन.1:5; 9:7,8; 68:14; 76:9)।

इस प्रकार दानिय्येल की पुस्तक के लेखक दानिय्येल होने के विचार के विपरीत बहुत से विचारों को प्रस्तुत किया है, पर वह उसके लेखक होने की सच्चाई को दुर्बल नही करती। अतः दानिय्येल ही इस पुस्तक का लेखक है।

पुस्तक का उद्देश्य

इस पुस्तक का उद्देश्य यह प्रकट करना है कि इस्राएल का परमेश्वर अन्य जातियों के देवी देवताओं से महान है। इस्राएल को दण्ड देने के.लिये अन्य जातियों का इस्तेमाल किया है परन्तु वे सब निकाल दिये जायेंगे। अन्तिम समय में, "स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा" (दानि.2रू44)। क्रोध का अन्त परमेश्वर के लोगों के लिये भारी क्लेश के समय के साथ होगा। उस समय मसीहा आयेगा और वह अपना अविनाशी एवं सदा ठहरने वाला राज्य स्थापित करेगा। उस राज्य में यहूदी लोग शामिल किये जायेंगे। संसार के राष्ट्रों के ऊपर परमेश्वर के अधिकार होने का वर्णन दानिय्येल इस पुस्तक द्वारा प्रमाणित करता है।

पुराने नियम में सबसे मुख्य भविष्यवाणी की पुस्तक दानिय्येल की पुस्तक है। नया नियम के मुख्य भविष्यवाणी का विषय अर्थात् विनाश के पुत्र

का प्रकट होना, भारी क्लेश, यीशु मसीह के महिमा में प्रकट होना, पुनरूत्थान, एक हजार साल का राज्य आदि का एक प्रारंभिक वर्णन भी इस पुस्तक में पाया जाता है। बाबुल की बन्धुवाई से आरंभ होने वाला अन्य जातियों का समय (लूका.21रू24),एवं यीशु मसीह का पुनरागमन और मसीहा के राज्य की स्थापना तक के सभी विषयों का वर्णन इस पुस्तक में पाया जाता है।

इस पुस्तक की दो भाषा

दानिय्येल की पुस्तक लिखने के लिये मुख्य रूप में दो भाषा प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक के 2:4–7:28 तक अरामी भाषा में और बाकी इब्रानी में लिखा गया है। इस प्रकार दो भाषाओं में यह पुस्तक लिखे जाने के संबंध में बहुत से कारण और मत सामने आये हैं लेकिन उन में से सबसे ज़्यादा ग्रहण योग्य एक ही विचार है, वह यह है कि संसार के राष्ट्रों के बारे में वर्णन करने के लिये अरामी भाषा और परमेश्वर के राज्य के बारे में वर्णन करने के लिये इब्रानी भाषा का प्रयोग किया गया है।

पुस्तक का विभाजन

इस पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला भाग इतिहास मात्र है (अध्याय 1–6) और दूसरा भाग भविष्यवाणी है (अध्याय 7.12)। दूसरा भाग पहले भाग पर आधारित है और इसका पहला भाग दूसरे भाग के लिये मार्ग तैयार करता है। इस कारण पहले भाग के अध्ययन के द्वारा ही दूसरे भाग को समझ सकेंगे।

इस्राएली इतिहास

इससे पहले कि हम प्रथम अध्याय में प्रवेश कर इस पुस्तक का अध ययन आरंभ करें, हमें इस्राएली इतिहास का थोड़ा ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। इस्राएल राष्ट्र का आरंभ इब्राहिम से हुआ है। परमेश्वर ने आदम को बनाया और उस से वाचा बान्धी अर्थात् उसको एक नियम दिया (उत्पत्ति 2:16,17)। जलप्रलय के बाद वाले समय के आरंभ में परमेश्वर ने नूह से एक

वाचा बान्धी या एक और नियम दिया (उत्पत्ति.9:8–17)। सार्वलौकिक स्वभाव के थे दोनों नियम अपने उद्देश्य में विफल हो गये। इस कारण परमेश्वर ने अपने लिये एक अलग जाति तैयार करने का विचार किया। उसके लिये परमेश्वर ने एक मनुष्य को विशेष कर के बुलाया और उसको कुछ आज्ञाएं दी। उस व्यक्ति का नाम था, इब्राहिम। इब्राहिम से इसहाक और इसहाक से याकूब एवं याकूब से 12 गोत्र तैयार हुए। उन्हें संख्या में बढ़ाने के उद्देश्य से मिस्र ले जाया गया। इस्राएल जाति मिस्र देश में 215 साल के निवास के दौरान 25 लाख के रूप में बदल गये और बढ़ गये। 215 साल के पहले जब वे मिस्र की ओर याकूब के नेतृत्व में गये तब वे केवल 70 प्राणी थे (उत्पत्ति. 46:27)। 215 वर्ष पश्चात् जब वे मूसा के नेतृत्व में मिस्र से निकल कर आ रहे थे, तब वे 25 लाख की संख्या में बढ़ गये।

वे यात्रा कर के प्रतिज्ञा के देश में आ गये। वहां पहुँचने के पश्चात् परमेश्वर ने उनके ऊपर न्यायियों को नियुक्त किया ताकि उन पर शासन करें। न्यायियों के दो प्रकार के कार्य थे। एक, शत्रुओं के हाथ से इस्राएलियों को छुड़ाना और दूसरा, इस्राएल पर शासन करके उन का न्याय चुकाना। ओत्निएल से लेकर शिमशोन तक (न्यायि.3:7–16:31) अनेक न्यायियों ने उन पर शासन किया और शामुएल उनका अन्तिम न्यायी और पहला नबी था। परमेश्वर स्वयं न्यायियों के द्वारा उन पर शासन कर रहे थे। तब शामुएल के समय में इस्राएलियों ने अन्य जातियों के समान राजा की मांग करके परमेश्वर का तिरस्कार किया।

परमेश्वर ने उन्हें राजा दिया। इस्राएल का पहला राजा शाऊल था। दूसरा राजा दाऊद और तीसरा राजा दाऊद का बेटा सुलैमान था। सुलैमान के समय में इस्राएल देश में मूर्तिपूजा बढ़ गई। सुलैमान एक ज्ञानी राजा था। वचन में आया है कि न उसके समान कोई ज्ञानी पहले कभी हुआ, न उस के बाद होगा। परन्तु उसने अनेक अन्यजाति स्त्रियों से ब्याह किया और उन स्त्रियों के द्वारा वह मूर्तिपूजा की ओर घसीटा गया। परमेश्वर ने उससे क्रोधित होकर राज्य को दो भागों में विभाजित करने का विचार प्रकट किया। लेकिन परमेश्वर ने कहा यह विभाजन सुलैमान के जीवनकाल में नहीं किया जायेगा। सुलैमान के पुत्र रहोबाम के समय में देश दो भागों में विभाजित हो गया। 10 गोत्र वाला उत्तरी भाग, इस्राएल राज्य के नाम पर और दो गोत्र

वाला दक्षिणी भाग यहूदा राज्य के नाम पर आगे बढ़ने लगा। इस्राएल राज्य का प्रथम राजा यारोबाम था। उसके बाद शासन में आए प्रायः सभी राजा यहोवा परमेश्वर के विरूद्ध कार्य करने के कारण वह राज्य B.C. 722 में स्वदेश से निकाल दिये गये (यशा.10:5,6) और वे अश्शूर की बन्धुवाई में पहुँचाएं गये। यहूदा राज्य 116 वर्ष और स्वदेश में रहा परन्तु यहूदा राज्य के राजाओं के बलवा और मूर्तिपूजा रूपी पाप के कारण वह राज्य भी B.C.606 में बाबुल की बन्धुवाई में ले जाए गये। बाबुल का राजा नबुकद्नेस्सर द्वारा यरूशलेम पर चढ़ाई की गयी और तीन बार में यहूदियों को बाबुल ले जाया गया। पहला झुण्ड B.C.606 में, दूसरा झुण्ड B.C.598 में और तीसरा झुण्ड B.C.587 में बाबुल की ओर गये। इस प्रकार बन्धुवाई में पाए जाने वाले यहूदा राष्ट्र का वर्णन ही दानिय्येल की पुस्तक का विषय है।

अध्याय 1

दानिय्येल का निर्णय

1:1,2:- "यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसको घेर लिया। तब परमेश्वर ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कई पात्रों सहित उसके हाथ में कर दिया और उसने उन पात्रों को शिनार देश में अपने देवता के मन्दिर में ले जाकर, अपने देवता के भण्डार में रख दिया"।

यहूदा राज्य के ऊपर परमेश्वर ने अपने न्याय को आने दिया। यह न्याय उन राजाओं के कारण आया जो यहूदा राज्य के ऊपर शासन किया करते थे। विशेषकर मनश्शे राजा का पाप स्मरण करने योग्य है। जिस समय बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई की तब यहोयाकीम यहूदा देश पर शासन कर रहा था। नबूकदनेस्सर के आगमन का और आक्रमण का कारण उपरोक्त पद में स्पष्ट रूप में लिखा गया है अर्थात् यहोयाकीम राजा ने परमेश्वर के खिलाफ पाप किया (2राजा.23:37)। लेकिन इतना बड़ा न्याय उसके ऊपर आने के लिये वह परमेश्वर के क्रोध का पात्र क्यों बन गया था? यिर्मयाह के पुस्तक में पढ़ने को मिलता है कि उसने परमेश्वर के वचन को जला डाला (यिर्मयाह.36:23)। इस कारण उसके ऊपर आने वाले न्याय के संबंध में परमेश्वर ने पूर्व सूचना दी (यिर्म. 36:30;20:11,18,19)। परमेश्वर के वचन के साथ अयोग्य रूप में व्यवहार करने के कारण मिलने वाले नतीजे के लिये यह राजा यहोयाकीम एक चितौनी है। उस राष्ट्र के पतन के साथ–साथ जो प्रथम बार बन्धुवाई की ओर गए, उन में दानिय्येल और उसके तीन साथी शामिल थे।

जब पहली बार नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई की तो यहोयाकीम राजा को भी जंजीरों से बान्धकर बाबुल ले गये। परन्तु उसे कुछ समय बाद स्वतन्त्र किया गया और उसके शासन का अधिकार उसे पुनः प्रदान किया गया (2इति.36:6)। लेकिन यह आदेश दिया गया कि वह बाबुल के राजा के अधीन रह कर यहूदा के शेष लोगों पर जो यरूशलेम में रह गये थे, शासन करे (1राजा.24:1)। पहले आक्रमण में यहूदा राज्य का पतन एवं नीचा दिखाया जाना और बाबुल के अधीन कर दिये जाने तक ही सीमित रहा। इसे एक आंशिक गुलामी कह सकते हैं। लेकिन इस समय के बाद वे अपने एक स्वयं का शासन और स्वतन्त्र राज्य का आनन्द नहीं उठा सके। इसके अलावा प्रथम आक्रमण से **"अन्य जातियों का समय"** (लूका 21:24), अर्थात् परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर एवं दुनिया के अन्य देशों पर अन्य जातियों का शासन आरंभ हुआ।

परमेश्वर ने इस्राएल को इस कारण एक राष्ट्र के रूप में तैयार किया था कि परमेश्वर इस प्रजा के द्वारा संसार के अन्दर एक ईश्वरीय शासित राष्ट्र (Theocratic Nation) एवं शासन प्रणाली को आरंभ करें। परन्तु यह प्रजा परमेश्वर के मार्ग से भटक गयी और अन्य देवी देवताओं की आराधना करने लगी। परमेश्वर ने कई बार अपने दासों और भविष्यवक्ताओं को अपने लोगों के बीच में समय–समय पर भेजा और उन्हें चिताया, पर वे परमेश्वर के मार्ग से सदा दूर ही रहे। सो परमेश्वर ने संसार का शासन अन्य जातियों के हाथ में सौंप दिया। यह अन्य जातियों का समय एक विशेष एवं लम्बा समय है। यह B.C.606 में नबूकदनेस्सर के समय से आरंभ हुआ और आज भी चल रहा है, और आगे भी चलता रहेगा। यह समय यीशु मसीह आकर संसार में अपना राज्य स्थापित कर के अपना शासन आरंभ करने तक चलता रहेगा (लूका.21:24)। अन्य जातियों का पहला राजा नबूकदनेस्सर और अंतिम राजा विरुद्ध मसीह (Anti Christ) है। मतलब विरुद्ध मसीह के शासन के साथ यह विशेष समय का और शासन का अन्त हो जायेगा।

सो यहोयाकीम को वापस भेज दिया गया और स्वतन्त्र करके शासन करने का फिर से अवसर दिया गया। लेकिन यहोयाकीम ने तीन वर्ष के पश्चात् परमेश्वर की इच्छा के विपरीत बाबुल के राजा की अधीनता को अस्वीकार कर नबूकदनेस्सर के खिलाफ बलवा किया और इस कारण यहूदा

देश में अधिक विनाश आने का कारण बना (2राजा.24:2)। उसके शासन के पॉच सालों में उसने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को क्रोध दिलाया और यहूदा पर एक भयंकर आक्रमण के लिये उसको बाध्य किया। यह समाचार सुनकर कि नबूकदनेस्सर यहूदा पर आक्रमण करने हेतु क्रोध से भर गया है और एक सशक्त सेना को यहूदा के खिलाफ भेज रहे हैं, यहोयाकीम राजा को दिल का दौरा पड़ गया, और उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई (यिर्मयाह.22:17,19)। इससे पहले कि आक्रमणकारी यहूदा देश में पहुँचे, यहोयाकीम राजा का देहान्त हो गया। तुरन्त यहोयाकीन जो उसका बेटा था, राजा बनकर सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह केवल 100 दिन ही शासन कर पाया और बड़ी दुष्टता के साथ शासन किया। जैसा पिता वैसा बेटा। खैर, उसके बलवा करने के स्वभाव के कारण वह दण्डित किया गया। यहोयाकीम राजा, उसका पूरा परिवार, उसकी माता जो रानी थी, और प्रजा में से बहुत लोगों एवं मन्दिर और महल के सारी संपत्ति समेत बाबुल की बन्धुवाई के स्थान में पहुँचा दिये गये (2राजा.24:8–16)। इस प्रक्रिया को या इस आक्रमण को आम तौर से बन्धुवाई कहते हैं (B.C.598)।

उस के पश्चात् लगभग 11 साल बाद यहूदा पर शासन करने वाला राजा, सिदकियाह के समय में परमेश्वर ने फिर से नबूकदनेस्सर को भेजा । उस समय प्रजा का बलवा पूरी तौर से अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया और उसने फिर से यहूदा पर अपना आक्रमण कर दिया। वह अपनी सेना समेत आए और नगर को और मन्दिर को भी जला डाला। इस प्रकार परमेश्वर ने यहूदा राज्य पर अपना न्याय पूरा किया। उस समय यहूदी लोगों को अन्तिम बार बन्दी बना कर बाबुल ले जाया गया (यिर्म.24)। मन्दिर के समस्त बहुमूल्य वस्तुओं को ले जाकर राजा ने अपने देवता के मन्दिर में रख दिया। तब यिर्मयाह नबी और अन्य कुछ लोगों ने बाबुल जाने से इनकार किया और मिस्र की ओर जाना पसन्द किया। मिस्र में पहुँचे परमेश्वर के लोगों के मध्य में भविष्यवाणी की सेवा करते हुए यिर्मयाह नबी ने अपना जीवन निर्वाह किया और वहीं उनका देहान्त हुआ।

पद–1:3-7:- "तब उस राजा ने अपने खोजों के प्रधान अश्पनज को आज्ञा दी कि इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से ऐसे कई जवानों को ला जो निर्दोष, सुन्दर और ज्ञान में निपुण और विद्वान

और राजमन्दिर में हाज़िर रहने के योग्य हों और उन्हें कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा दे। और राजा ने आज्ञा दी कि उसके भोजन और पीने के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने पीने को दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण होता रहे तब उसके बाद राजा के सामने हाज़िर किये जाएं। उनमें यहूदा की सन्तान से चुने हुए, दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह नाम यहूदी थे। और खोजों के प्रधान ने उनके दूसरे नाम रखे अर्थात् दानिय्येल का नाम उसने बेलतशस्सर, हनन्याह का शद्रक, मीशाएल का मेशक, और अजर्याह का नाम अबेदनगो रखा"।

यहूदा राज्य बाबुल की बन्धुवाई में

यहूदा राज्य तीन बार में बाबुल ले जाया गया जो उन के बन्धुवाई के लिये परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया था। पहला झुण्ड B.C. 606 में ले जाया गया। उस झुण्ड में यहोयाकीम राजा को भी जंजीरों से बन्धा हुआ ले गया जो यहूदा राज्य का 18 वां राजा था। पर बाद में उसे स्वतन्त्र किया गया और वापस स्वदेश भेज दिया। उस देश में शेष रह गये लोगों के ऊपर शासन करने हेतु वह फिर से नियुक्त किया गया। लेकिन उसे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर राजा के आदेश और निर्देश के अनुसार शासन करना था। इस पहले झुण्ड के साथ दानिय्येल और उसके साथी भी बाबुल ले जाए गये थे। दूसरा झुण्ड B.C.598 में ले जाया गया। इस समय यहोयाकीन राजा और उसका सारा परिवार और उस की माता जो रानी थी, सबको बान्ध कर बाबुल ले जाए गये। B.C. 587 में तीसरे झुण्ड के साथ यहूदा राज्य के अन्तिम राजा सिदकिया और मन्दिर के सब बहुमूल्य वस्तुओं समेत ले जाए गये। यह यहूदा राज्य के 70 साल के बन्धुवाई का आरंभ है।

इस प्रकार यहूदा राज्य पर नबूकदनेस्सर द्वारा आक्रमण करने का मुख्य उद्देश्य यह था कि इस राज्य से योग्य लोगों को ले जाएं ताकि बाबुल शहर का सुन्दर तरीके से निर्माण किया जा सके। बाबुल का राजा अपने नगर को दुनियां का सबसे बड़ा और मशहूर नगर के रूप में बनाना चाहता था। उसके लिये मजदूरी के कार्य करने के लिये साधारण लोगों की भी

आवश्यकता थी, सो यहूदा देश के साधारण लोगों को भी गुलाम बनाकर ले गये। इसके अलावा कई जवानों को भी ले गये जो राज घराने के थे। याद रखिये यह आक्रमण और अधीनता की प्रक्रिया केवल यहूदा राज्य के साथ ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी नबूकदनेस्सर ने किया। उसने अपनी सैन्य शक्ति के द्वारा कई अन्य देशों को भी अपने अधीन कर लिया। वहाँ से भी लोगो को गुलाम के रूप में बांध कर बाबुल लाये गये। उन देशों के भी राज घराने के जवानों को चुन लिया जो सुन्दर और योग्य थे। सब लोगों को इस्तेमाल कर के बाबुल नगर को संसार के अन्दर एक सशक्त साम्राज्य बनाने का उद्देश्य था। उस नगर में एक बढ़िया राजमहल बनाया गया। राजा के दरबार में कार्य करने के लिये राजघराने के सुन्दर एवं सुयोग्य नौजवानों को चुन कर बाबुल का ज्ञान और कसदियों की भाषा सिखाने का आदेश दिया गया।

यहां यहूदा के साथ भी वही दुखद घटना घटित हुई। लेकिन याद रखिये यह घटना अचानक एवं अकस्मात् नहीं हुई। परन्तु यह परमेश्वर ने अपने दास भविष्यवक्ताओं के द्वारा पहले से कह दिया था। यह भविष्य का वचन यहूदा का राजा हिजकियाह के समय में हुआ था। उस के शासन के अन्तिम दिनों में वह बीमार होकर मरने वाला था तब उसने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे चंगा कर दिया। इतना ही नहीं उसकी आयु भी 15 साल के लिये बढ़ा दी गई। बाबुल का राजा बरोदकबलदान जो बलदान का पुत्र था, हिजकियाह के रोगी होने और चमत्कारिक चंगाई का समाचार सुनकर उस के पास पत्री और भेंट भेजी। इस समय हिजकियाह राजा ने एक गलती की कि उस पत्री और भेंट लाने वालों का मान रखकर उनको अपने अनमोल पदार्थों का सब भण्डार, सोना, चांदी, सुगंध द्रव्य, उत्तम तेल, अपने हथियारों का पूरा घर और अपने भण्डारों में जो–जो वस्तुएं थीं, सब दिखाई। हिजकियाह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु न रही जो उसने उन्हें न दिखाई हो (2राजा.20:12,13)।

इस के तुरन्त बाद यशायाह नबी हिजकियाह के पास आया और उससे बातें की और परमेश्वर का वचन अर्थात् भविष्यवाणी का वचन उसे सुनाया और वह इस प्रकार है –

"तब यशायाह भविष्यवक्ता ने हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा,

वे मनुष्य क्यां कह गए? और कहां से तेरे पास आए थे? हिजकिय्याह ने कहा, वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल से आए थे। फिर उसने पूछा, तेरे भवन में उन्होंने क्या क्या देखा है। मेरे भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो मैंने उन्हें न दिखाई हो। यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, यहोवा का वचन सुन ले ऐसे दिन आने वाले हैं जिनमें जो कुछ तेरे भवन में हैं और जो कुछ तेरे पुरखाओं का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारों में हैं वह सब बाबेल को उठ जाएगा; यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हैं उनमें से कितनो को वे बन्धुवाई में ले जाएंगें; और वे खोजे बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे" (2राजा.20:14—18)।

"तौभी जब बाबेल के हाकीमों ने उसके पास उसके देश में किये हुए चमत्कार के विषय पूछने को दूत भेजे तब परमेश्वर ने उसको इसलिये छोड़ दिया, कि उसको परखकर उसके मन का सारा भेद जान ले " (2 इति.32:31)।

"उस समय बलदान का पुत्र बरोदकबलदान, जो बाबुल का राजा था, उसने हिजकिय्याह के रोगी होने और फिर चंगे हो जाने की चर्चा सुनकर उसके पास पत्री और भेंट भेजी। इनसे हिजकिय्याह ने प्रसन्न होकर अपने अनमोल पदार्थों का भण्डार और चांदी, सोना, सुगंध द्रव्य, उत्तम तेल, और अपने हथियारों का सब घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं, वे सब उनको दिखलाई। हिजकिय्याह के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु नहीं रह गई जो उसने उन्हें न दिखाई हो। तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन लेः ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिनमें जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ आज के दिन तक तेरे पुरखाओं का रखा हुआ तेरे भंडारों में है, वह सब बाबुल को उठ जायेगा; यहोवा यह कहता है कि कोई वस्तु न बचेगी......" (यशा.39:1—7)।

परमेश्वर ने अपने दास यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया वचन पूरा किया। जिस समय बाबुल के राजा बरोदकबलदान के लोगों को सारा

भण्डार दिखाया तभी उनके अन्दर उन वस्तुओं को प्राप्त करने का विचार उत्पन्न हुआ पर वह परमेश्वर का समय नहीं था। लेकिन आने वाले आक्रमण के बारे में परमेश्वर ने अपने दास भविष्यवक्ता द्वारा कह सुनाया और वह B.C. 606 में अक्षरसः पूरा भी हुआ। बाबुल का राजा नबुकदनेस्सर के समय में आकमण की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। सब कुछ वे लूट कर ले गये और लोगों को भी ले गये। उनमें दानिय्येल और साथी भी शामिल थे।

दानिय्येल बाबुल में

जैसा कि ऊपर लिखा गया है, दानिय्येल पहले निर्वासन में ही बाबुल पहुँच गया था। वहां पहुँचने पर वह और उसके तीन अन्य साथी हनन्याह, मीशाएल, अजर्याह तीनों राजघराने के होने के कारण राजा के दरबार में सेवा हेतु नियुक्त किये गये। उन्हें अशपनज नाम खोजों के प्रधान के हवाले कर दिया गया। राजा की ओर से यह आदेश दिया गया कि इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से कई जवानों को लाएं। उनकी योग्यताएं भी वचन में लिखी गयी है अर्थात वे निर्दोष होने चाहिए। यह उन की शारीरिक स्थिति की ओर संकेत करता है। मतलब लंगड़ा, लूला, काणा या इस प्रकार की कोई शारीरिक खोट या कमी नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा वे सुन्दर होने चाहिए। यह उन के रूप और व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। इस के अलावा बुद्धिमान एवं प्रवीण, ज्ञान से परिपूर्ण, विद्वान और राजमन्दिर में हाज़िर रहने योग्य हों। उन्हें कसदियों की भाषा सीखना आवश्यक था।

उनके भोजन की व्यवस्था

राजा ने खोजों के प्रधान को यह आदेश दिया कि उनके भोजन की व्यवस्था राजा के मेज से ही की जाए। राजा जो भोजन करते हैं और दाखमधु पीते हैं, वही उन्हें दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण करें। तब वे राजा के सामने उपस्थित किए जाएं। यहूदियों में से चुने गये दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह आदि चार जवान इस बात से परेशान हो गये। यहूदी होने के कारण उनके पास एक व्यवस्था थी। मूसा के द्वारा दी गयी व्यवस्था में यह बताया गया है कि परमेश्वर के लोग क्या खाएं और क्या नहीं खाएं (लैव्य.व्य 11:1-47)। वे एक

धर्मसंकट में पड़ गये। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि मूसा और व्यवस्था एक ओर खड़े है और दूसरी ओर नबूकदनेस्सर राजा का आदेश लेकर खोजों का प्रधान अशपनज खड़ा है। अब उन्हें क्या करना है? ऐसे समय में स्वाभाविक रूप में जवान लड़के होने से हां बोलकर राजा के भोजन ग्रहण करने की परीक्षा में वे पड़ सकते थे।

लेकिन उन जवानों ने राजा के भोजन ग्रहण करने से इनकार किया। वे जाकर खोजों के प्रधान से कहने लगे कि हम राजा का भोजन ग्रहण करके अपने आप को अशुद्ध नहीं करेंगे। चार भाईयों में दानिय्येल ने इस बात का दृढ़ संकल्प कर लिया कि राजा का भोजन नहीं खायेंगे न राजा के मेज़ पर लाए जाने वाला दाखरस पीयेंगे।
उसके संबंध में लिखा है – **"परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होगा"**, इसलिये उसने खोजों के प्रधान से बिनती की कि उसे अपवित्र न होना पड़े (दानि.1:8)।

यह दानिय्येल की ओर से एक पक्का निर्णय था कि राजा के मेज पर आने वाले भोजन ग्रहण कर के अपने को अशुद्ध नहीं करेगा। जब दानिय्येल ने ऐसा मन में ठान लिया तो परमेश्वर ने भी उसकी मदद की।
लिखा है **"परमेश्वर ने खोजों के प्रधान के मन में दानिय्येल के प्रति कृपा और दया भर दी"** (दानि.1:9)।

जब हम परमेश्वर के लिये और उसके वचन के लिये और परमेश्वर के कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्प करते हैं, तो परमेश्वर भी हम से प्रसन्न हो जाता है और हमारे लिये अजीब तरीके से मार्ग खोलता है।

दानिय्येल के निर्णय को सुनकर खोजों का प्रधान भयभीत हो गया। उसने कहा, **"और खोजों के प्रधान ने दानिय्येल से कहा मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूँ, क्योंकि तुम्हारा खाना पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो कि वह तेरा मुंह तेरे संगी जवानों से उतरा हुआ और उदास देखे और तुम मेरा सिर राजा के सामने ज़ोख़िम में डालो"**(दानि.1:10)। भोजन की व्यवस्था राजा की ओर से होने के कारण उसका परिवर्तन भी राजा की ओर से होना चाहिए। लेकिन राजा से इस संबंध में बोलने की हिम्मत अशपनज के पास नहीं थी। वह बिलकुल भयभीत है। दानिय्येल को इस संबंध में कोई चिन्ता नहीं है और वह तनिक भी

भयभीत नहीं है। उसको मालूम है कि उनका परमेश्वर उन लोगों की सहायता करेगा।

इस कारण दानिय्येल ने उस मुखिया को आश्वासन दिया और हिम्मत बंधाई। लिखा है, "**तब दानिय्येल ने उस मुखिया से, जिसको खोजों के प्रधान ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अर्जयाह के ऊपर देखभाल करने के लिये नियुक्त किया था, कहा, मैं तेरी बिनती करता हूँ, अपने दासों को दस दिन तक जांच, हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी ही दिया जाए। फिर दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं, उनके मुंह को देख, और जैसा तुझे दिखाई पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना। उनकी यह बिनती उसने मान ली, और दस दिन तक उनको जांचता रहा। दस दिन के बाद उनके मुंह राजा के भोजन के खाने वाले सब जवानों से अधिक अच्छे और चिकने दिख पड़े। तब वह मुखिया उनका भोजन और उनके पीने के लिये ठहराया हुआ दाखमधु दोनों छुड़ाकर, उनको सागपात देने लगा** (दानि.1:11–16)।

परमेश्वर पर अटल विश्वास रखने और परमेश्वर के वचन को मानने वाले एक सच्चे विश्वासी को कभी भी अविश्वासियों के निर्णय के अनुसार बदलने और विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। उसको चाहिये कि अपने अटल और अटूट विश्वास और दृढ़ संकल्प के द्वारा अन्य लोगों को अपने विश्वास की ओर आकर्षित करे। हमारे निर्णय के अनुसार उन्हें कार्य करना है। यह दानिय्येल और उसके भाईयों के सामने एक चुनौती का समय था। ऐसे समय में हमें अवसरवादी नहीं बनना चाहिये। ऐसा नहीं कि चलो बन्धुवाई के देश में प्रभु परमेश्वर ने हमारे लिये क्या अच्छा प्रबन्ध किया है, धन्यवाद करके खाने लग जाएं। उन्हें मालूम था कि यह अन्य जाति राजा है और उनके खाने का कोई नियम नहीं है न ही पीने का नियम। मेज पर जो भी आ जाए वह खा सकते थे। यहूदी मांस–मछली का सेवन कर सकते हैं पर खूर फटे और पागुर करने वाले जानवरों एवं छिलके वाली मछलियां और उड़ने वाले पक्षियों में भी कुछ वे खा सकते थे। यह भी हो सकता है कि वह भोजन वस्तु मूर्तियों के सामने अर्पित किया हुआ हो (1कुरि.8:1–13)। दाखरस भी जो अंगूर का ताज़ा रस जो दाखरस कहलाता है, पी सकते थे।

लेकिन राजा ऐसा करने नहीं देगा। वह उफान लाने वाला दाखरस (Fermented wine) पीते थे जो पीने के पश्चात् कुछ उत्तेजित करता हो। वह यहूदियों के लिये मना है, सो दानिय्येल ने उन चार भाईयों में नेतृत्व करते हुए मन में ठान लिया कि राजा का भोजन खाकर और दाखरस पीकर अपने को अपवित्र नहीं करेंगे।

याद रखिये हमारे शरीर को स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त रखने के लिये, क्या खाएं इससे बढ़कर महत्व उस बात में है कि हम कैसे खाते हैं। यदि हम समय पर भोजन करें और भोजन का सम्मान करते हुए खाएं और भोजन का प्रबन्ध करने वाले परमेश्वर को धन्यवाद करते हुए, परमेश्वर के वचन के आधार पर आनन्द के साथ संतृप्ति के साथ खाएं। वह हमारे शरीर में असर करेगा। वह हमारे शरीर को स्वस्थ, सुन्दर एवं सुडौल बनायेगा। कई लोगों के भोजन का कोई समय नहीं, न कोई नियम है। घर में खाते ही हैं, फिर होटलों में खायेंगे, आवश्यकता से कहीं अधिक खायेंगे और कोई व्यायाम नहीं करेंगे। इस कारण चारों तरफ फैल जाते हैं और बीमार हो जाते हैं और समय से पहले जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं। कुछ लोगों के लिये भोजन एक आशीष नहीं बल्कि अभिशाप है। आदम हव्वा ने खाएं और वे मर गये। इस्राएली लोग खाते गये और कुड़कुड़ाते गये और लिखा है कि वे सब मरुस्थल में ढेर हो गये। पहली सदी की कलीसिया की सबसे पहली समस्या भोजन ही तो था (प्रेरित 6:1–10)। भोजन के द्वारा कइयों को आशीष से बढ़कर अभिशाप और परेशानियां प्राप्त होती हैं। कारण कि, उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप और परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं खाया (सभो. 10:16,17)। प्रिय पाठक, आप क्या–क्या खा रहे हैं ? यह मुंह ईश्वर ने इसलिये नहीं बनाया कि आपके सामने आने वाली सब वस्तुओं को, जब भी मिले बिना जांचे परखे, खाएं एवं पीएं और समय से पहले पत्नी को विधवा बना कर और बच्चों को अनाथ छोड़कर अनन्तकाल की ओर चले जाएं।

दानिय्येल और उनके साथियों ने इस संबंध में ठोस निर्णय लिए कि क्या खाएं और क्या पीएं। इस निर्णय से परमेश्वर प्रसन्न हो गया और खोजों के प्रधान के मन में उनके प्रति दया उत्पन्न की। उन लोगों ने बिलकुल साधारण एवं मामूली भोजन ग्रहण करने का निर्णय लिया। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी। साधारण भोजन पर असाधारण आशीष एवं आरोग्यता उन्हें प्राप्त हुई और उनके मुंह चिकने दिखने लगे। अन्य जवानों

की अपेक्षा जिन्होंने राजा का भोजन ग्रहण किया, वे अधिक अच्छे दिखाई दिये। उन्होंने सागपात और पानी धन्यवाद के साथ एवं बड़े आनन्द के साथ खाया। उन्होंने अपने मन में यह कभी नहीं सोचा अरे हम कहां फंस गये, और क्या खाना पड़ रहा है। वे अपने लिये खाने से बढ़ कर परमेश्वर की महिमा के लिये खा रहे थे। सो परमेश्वर ने उन्हें विशेष रूप से आशीषित और आसूदा किया। वे उस भोजन से प्रसन्न थे। उन्होंने अपनी सन्तुष्टि से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा को अधिक महत्व दिया। परमेश्वर के वचन को उन लोगों ने अपने भोजन के विषय में भी महत्व एवं सम्मान दिया। परमेश्वर की विशेष आशीष उनके शरीर में रही। हम मसीहियों को खाने पीने के संबंध में गंभीरतापूर्वक सोचना है।

इस निर्णय में दानिय्येल का नैतिक और धार्मिक स्वभाव प्रकट होता है। दानिय्येल ने उस नये और उन्नतिशील नगर में उच्च स्थान और पदवियां प्राप्त की तो भी उसने अपने पवित्र उद्देश्यों की उपेक्षा नहीं की। उसने अपने लिये और अपने भाईयों के लिये उचित निर्णय लिये। कहा जाता है कि उस समय दानिय्येल केवल 19 साल का था। दानिय्येल का जन्म B.C. 625 का माना जाता है। इस प्रकार एक उचित और ठोस निर्णय लेने के लिये उसे प्रेरणा शक्ति कहां से मिली? यह प्रेरणा उसे उसके देश के इतिहास से ही प्राप्त हुई है। वह यहूदा देश के राजघराने से संबंध रखता था। इस कारण उसका उस देश के उच्च श्रेणी के लोगों के साथ अच्छा और निकट संबंध था। इनमें से प्रथम व्यक्ति योशिय्याह (हिजकिय्याह) राजा ही हो सकता है। यह अन्दाज़ा लगाते हैं कि जब दानिय्येल बाबुल में पहुँचा तो वह 19 साल का था। यह यहोयाकीम राजा के शासन का तीसरा वर्ष था। योशिय्याह राजा के शासन के 15 वे वर्ष में दानिय्येल की जन्मतिथि निश्चित करता है (2इति.34:1)। इसके अलावा दाऊद का जीवन भी दानिय्येल के लिये प्रेरणा का श्रोत रहा है। दाऊद के समान योशिय्याह राजा भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला था।

लिखा है, **"उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, और जिन मार्गों पर उसका मूल पुरुष दाऊद चलता रहा, उन्हीं पर वह भी चला करता था और उसने न तो दाहिनी ओर मुड़ा, और न बायीं ओर"** (2इति.34:2)। आगे लिखा है, **"वह अपने मूल पुरुष दाऊद के परमेश्वर**

की खोज करने लगा'' (2इति.34:3)। जब उसने शासन को अपने हाथ में लिया तो उस सारे देश से मूर्तिपूजा को पूरी तौर से नष्ट कर दिया। लिखा है, **''फिर मनश्शे, एप्रैम और शिमौन के वरन नप्ताली तक के नगरों के खण्डहरों में, उसने वेदियों को तोड़ डाला। और अशेरा नाम और खुदी हुई मूरतों को पीस कर बुकनी कर डाला, और इस्राएल के सारे देश की सूर्य की सब प्रतिमाओं को काटकर यरूशलेम को लौट गया''** (2इति.34:6,7)।

इस प्रकार के सुधार कार्य के समय दानिय्येल सयाना और समझदार हो गया और इस धीरता और दिलेरी के कार्य से उसको प्रेरणा मिली होगी। इस शुभ कार्य के पश्चात् योशिय्याह राजा ने मन्दिर की मरम्मत के लिये आदेश दिया (2इति.34:8–13)। उस समय उन्हें परमेश्वर के भवन से यहोवा की व्यवस्था की एक प्रति प्राप्त हुई। उन्होंने उसको पढ़ा और उसके मुताबिक जीवन बिताने का निर्णय लिया और परमेश्वर की आशीषों की प्रतिज्ञा भी प्राप्त की (2इति.34:14–28)। उन्हों ने व्यवस्था के वचनों को सुनकर परमेश्वर के सम्मुख वाचा बान्धी कि परमेश्वर के वचनानुसार आगे को जीवन निर्वाह करेंगे (2इति.34:29–33)। जब योशिय्याह ने अपने पहले वर्ष से यह सुधार कार्य आरंभ किया तो उसे नौजवान नबी यिर्मयाह का भी सहयोग प्राप्त हुआ जो भविष्यवक्ता के कार्य के लिये नियुक्त हुआ था (यिर्म. 1:2)। यिर्मयाह नबी का कार्य आन्तरिक सुधार एवं योशिय्याह राजा का कार्य बाहरी सुधार का रहा। यिर्मयाह के प्रयास से लोगों के मुखौटे हटाए गए और उन्हें ईश्वर का सच्चा भक्त बना दिया गया। इन तमाम प्रभावशाली कार्यों ने दानिय्येल के जवान दिल को प्रभावित एवं प्रेरित कर दिया और उसने अच्छे कार्यों के लिये अपने मन को मोड़ लिया। उसने यह दृढ़ संकल्प किया कि मैं मेरे जीवन में अच्छा कार्य ही करूंगा भले वह संघर्षमय परिस्थिति में क्यों न हो।

इस प्रकार अतीत के अनुभव और अच्छे प्रशिक्षण ने दानिय्येल को उस विपरीत और विषम परिस्थिति में, शासकीय एवं सशक्त राजकीय आदेश के बाद भी अपने व्यक्तिगत जीवन में सकारात्मक एवं सशक्त निर्णय के लिये सक्षम बना दिया। उसने अन्य जातीय शक्ति का ही नहीं वरन् मूर्तिपूजा का भी डट कर मुकाबला किया। हालांकि वह राजनैतिक दृष्टिकोण

से बाबुल के अधीन में था परन्तु अपनी नैतिकता एवं आत्मिकता के कारण उसने बाबुल को अपने अधीन कर दिया, अपने पांवों के तले कर दिया। इस निर्णय ने उसको एक चट्टान के समान दृढ़ सतह पर खड़ा किया, जो चट्टान मसीह यीशु स्वयं है (1कुरि.10:4)। उस चट्टान के समान सतह पर परमेश्वर ने दानिय्येल का स्वभाव और भविष्य का निर्माण किया। यह हम मसीहियों के लिये एक आदर्श है कि हम भी हमारे जीवन में निर्णय लेते समय उन भक्तों के जोश और सरगर्मी को ग्रहण करें जिन्होंने अतीत में आत्मिक संघर्ष करके अनन्तकाल के जीवन में प्रवेश किया। तब हमारा भी जीवन एवं भविष्य उज्ज्वल होगा। दानिय्येल ने अपने लिये और अपने साथियों के लिये यह निर्णय लिया कि वे राजा के मेज़ पर आने वाले भोजन को ग्रहण नहीं करेंगे।

उनके नामों में परिवर्तन

दानिय्येल और उनके साथियों के यहूदी नाम जो उनके परमेश्वर के साथ जुड़ा था, बाबुल के राजा के आदेश के अनुसार खोजों के प्रधान ने बदल दिया। दानिय्येल के नाम का अर्थ था **"परमेश्वर मेरा न्यायी"**। पर उसका नाम बेलतशस्सर रखा गया जिसका अर्थ है बेल देवता द्वारा सुरक्षित (Protected by Bel)। हनन्याह का शद्रक जिसका अर्थ है राजकीय (Royal), मीशाएल का नाम मेशक रखा गया जिस का अर्थ है मेहमान (Guest), और अर्जयाह का अबेद्नेगो रखा जिस का अर्थ है नेगो देवता का सेवक (Servant of Nego), लेकिन इस नाम के परिवर्तन को भी दानिय्येल और उसके साथियों ने ग्रहण नहीं किया। जब भी वे एक दूसरे को पुकारते और संबोधित करते थे तो वे अपने यहूदी नाम से ही पुकारते थे (दानि-2:18,19)। हमें देश के अनुसार और परिस्थिति के अनुसार बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहते हैं न –"जैसा देश वैसा भेष"। पर नाम का जहां तक सवाल है, हमें बदलने की आवश्यकता नहीं है। यहां नाम बदलने का विचार यह था कि वे पूरी तौर से यहूदी धर्म एवं रीति विधियों से अलग किया जाएं और बाबुल के रीति रिवाज़ के अनुसार उनका संपूर्ण जीवन हो। लेकिन इस परिवर्तन से उनकी मानसिकता में ज़रा भी परिवर्तन नहीं आया।

दानिय्येल और उसके साथियों के खोजे बनाया जाना

इस बात का दानिय्येल की पुस्तक में वर्णन नहीं है कि वे खोजे बना दिये गये। पर यह एक वास्तविकता है। यह एक भविष्यवाणी की पूर्ति है जो यशायाह नबी द्वारा कही गयी थी। जब राज्य के ऊपर हिजकियाह राजा शासन करता था। अपने शासन के लगभग अन्तिम दिनों में वह बीमारी से अच्छा हुआ तब बाबुल का राजा बरोदकबलदान ने हिजकियाह राजा के लिये पत्री और भेंट भेज दी और यह भी निर्देश दिये होंगे कि राज्य का भेद भी लेकर आए। सो हिजकियाह राजा ने अपना सारा भण्डार उन मनुष्यों को दिखाया। वे सब कुछ देखकर अपने देश की ओर लौट गये। तब यशायाह भविष्यवक्ता ने हिजकियाह राजा (योशिय्याह) के पास आकर पता लगाया कि वे मनुष्य कौन थे। राजा ने उत्तर दिया कि वे बाबेल से आये हुए लोग थे। तब नबी ने राजा को एक भविष्यवाणी का वचन दिया, वह इस प्रकार है कि **"ऐसे दिन आने वाले हैं, जिन में जो कुछ तेरे भवन में हैं, और जो कुछ तेरे पुरखों का रखा हुआ आज के दिन तक भण्डारों में है वह सब बाबेल को उठ चला जायेगा; यहोवा यह कहता है, कि कोई वस्तु न बचेगी। और जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उनमें से भी कितनों को वे बन्धुवाई में ले जायेंगे; और वे खोजे बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे"** (2राजा.20:17,18)। इस वचन के अनुसार दानिय्येल और उनके साथी बाबेल के राजा की विशेष आज्ञा के अनुसार खोजे बना दिये गये। इसके अलावा यशा.39:5–7 पदों को भी पढ़ कर देखिये। ये जवान सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व रखने के कारण राजा के महल में उनके रखेलियों द्वारा आकर्षित होकर उन जवानों के साथ गलत संबंध के डर के मारे ऐसा किया जाना संभव है। कुछ भी हो परमेश्वर का वचन पूरा होना अनिवार्य है। इन जवानों के विवाह एवं पारिवारिक जीवन का कोई ज़िक्र दानिय्येल की पुस्तक में नहीं आता है। इस प्रकार वे हर तरह से शैतान के द्वारा बदल दिये गये ताकि वे लोग निराश और निष्क्रिय बन जाएं। पर परमेश्वर उनके साथ था। उन्होंने हर परिस्थिति में परमेश्वर को महिमा देने और उसके नाम को ऊंचा करने का प्रयास किया।

पद–17:– "और परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों, और

सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी; और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया''

उन्होंने परमेश्वर और परमेश्वर के वचन के लिये अपने जीवन को समर्पित किया तो परमेश्वर ने उनकी खूब सहायता की। दानिय्येल और उनके साथी हमारे संसारिक जीवन की सफलता के लिये एक अच्छा उदाहरण हैं। हमारा जीवन एक दोमुखी जीवन है। एक सामान्य या नैसर्गिक जीवन एवं दूसरा असामान्य और दैवीय जीवन। इस दोमुखी जीवन को सफल बनाने के लिये हमें स्वर्गीय आशीषें एवं अनुग्रह की बहुत आवश्यकता है। परमेश्वर ने उन चारों जवानों को बुद्धिमानी और प्रवीणता दी (पद-17) यहां परमेश्वर के अनुग्रह का एक झरना जो ऊपर से उन पर आते हुए दिखाई दे रहा है जिससे ऐसी सामर्थ्य प्राप्त की कि एक गलत संसार को सही दिशा दिखाने में सक्षम हुए। यह मानुषिक ज्ञान और बुद्धि से नहीं किया जा सकता था, क्योंकि लिखा है **''परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी''**। उनके ज्ञान और बुद्धि ने नबुद्कनेस्सर राजा को और उसके सिंहासन को झंझोड़ दिया। अन्य जवानों से बढ़ कर उन्हें हर प्रकार की आशीषें मिली और उन्होंने उनसे 10 गुणा अधिक ज्ञान प्राप्त किया। इस ज्ञान ने उन शासनकर्ताओं को परमेश्वर की इच्छा पर चलने के लिये सहायता प्रदान की।

इसके अलावा, वहां के 3 साल के अध्ययन के द्वारा प्राप्त होने वाले ज्ञान के अतिरिक्त अपने जीवन में उन असामान्य आत्मिक दानों को भी प्राप्त किया जिससे वह अपने विश्वस्त साथियों से बढ़कर परमेश्वर का प्रतिनिधि (Agent) बना। लिखा है, **''और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया''** (पद-17)। सांसारिक ज्ञान के साथ–साथ वह ईश्वरीय ज्ञान का भी खोजी रहा। आज संसार में बहुत से ज्ञानी और बुद्धिमान हैं, जिन्हें केवल दुनियां का ज्ञान है। भाषा एवं कुछ विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं और यह मनुष्य के दोमुखी जीवन में से एक ही भाग की ही प्राप्ति कर पाते हैं। एक आध्यात्मिक भाग भी मनुष्य में है और वह स्वर्गीक ज्ञान से भरा जाना ज़रूरी है। वह परमेश्वर से संपर्क बिना संपूर्ण नहीं होगा। दानिय्येल को बाबुल के विश्वविद्यालय के विषयों का ज्ञान मिला,

कसदियों की भाषा आ गई। लेकिन इसके अलावा वचन के अनुसार परमेश्वर ने उसे सब प्रकार की बुद्धि और ज्ञान और प्रवीणता प्रदान की। सब प्रकार की बुद्धि और ज्ञान का अर्थ उस ज्ञान से है जो सांसारिक और स्वर्गीय है। उसके अन्तर्गत दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया। सांसारिक ज्ञान के साथ–साथ परमेश्वर से संपर्क कर स्वर्गीय ज्ञान की भी प्राप्ति करें तो व्यक्तिगत जीवन धन्य होगा और जिस देश में आप रहते हैं वह देश भी आपके द्वारा आशीषित और धन्य होगा।

परमेश्वर द्वारा तैयार किया जाना

परमेश्वर ने दानिय्येल और साथियों को राजा के सामने उपस्थित होने के लिये विशेष रूप से तैयार किया। परमेश्वर के वचन में इस संबंध में यूं लिखा है –**"तब जितने दिन के बाद नबुकदनेस्सर राजा ने जवानों को भीतर ले आने की आज्ञा दी थी, उतने दिन के बीतने पर खोजों का प्रधान उन्हें उसके सामने ले गया। और राजा उनसे बातचीत करने लगा; और दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह के तुल्य उन सबमें से कोई न ठहरा; इसलिये वे राजा के सम्मुख हाज़िर रहने लगे। और बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय में जो कुछ राजा उनसे पूछता था उसमें वे राज्य भर के सब ज्योतिषियों और तन्त्रियों से दस गुणे निपुण ठहरते थे। और दानिय्येल कुस्रु राजा के पहले वर्ष तक बना रहा" (दानि.1:18–21)।**

तीन साल के अध्ययन के पश्चात् जो कसदियों की भाषा और विशेष शिक्षा थी, दानिय्येल और उसके तीन साथी राजा के दरबार में उपस्थित किये गये, ताकि उनका गहन परीक्षण किया जा सके। ये चारों इब्री जवान अन्य सभी प्रशिक्षित जवानों में अव्वल दिखाई दिये। इस कारण दानिय्येल की सेवा राजा के दरबार में बहुत लम्बे समय तक रही। उसने न केवल लम्बे 14 साल तक नबुकदनेस्सर के दरबार में प्रधानमंत्री का पद भार सम्भाला बल्कि बाबुल के अन्य बादशाहों के शासन में भी कार्य किया, यहाँ तक मादी फारसी साम्राज्य में भी बना रहा। जैसा कि पद 21 में लिखा है, "और दानिय्येल कुस्रू राजा के पहले वर्ष तक बना रहा"।

इस का मतलब यह है कि दानिय्येल यहूदियों के बाबुल की बन्धुवाई के पूरे 70 साल तक आधिकारिक पदवी में बना रहा। यहां तक फारस के राजा कुस्रु के पहले वर्ष तक रहा जिसके समय में यहूदियों को बन्धुवाई से मुक्त कर दी गयी। हो सकता है कि दानिय्येल के राजमहल की सेवा की अन्तिम उपलब्धि यह रही कि उसने कुस्रु राजा के साथ यहूदियों की रिहाई के संबंध में बातचीत की और उन्हें अपने जीते जी स्वतन्त्र होते हुए देखा। इस वार्तालाप और विशेष सौदे के कारण कुस्रु राजा ने यहूदियों की रिहाई का आदेश दिया। निश्चित ही इस बात के संबंध में दानिय्येल ने परमेश्वर द्वारा पहले से भविष्यवक्ताओं के मार्फत प्रकट किये गये वचन से कुस्रू राजा को अवगत कराया होगा। उसने यह बताया कि परमेश्वर ने कुस्रु राजा के संबंध में अपने वचन में क्या अंकित कर रखा है। यह सदियों पूर्व लिखा गया वचन था जिसको दानिय्येल ने राजा के समक्ष प्रकट किया। वह इस प्रकार है, **"जो कुस्रु के विषय में कहता है, वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा; यरूशलेम के विषय कहता है, वह बसाई जायेगी और मन्दिर के विषय कि तेरी नींव डाली जायेगी" (यशा–44:28)।**

"यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रु के विषय यों कहता है, मैंने उसके दाहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है कि उसके सामने जातियों को दबा दूँ और राजाओं की कमर ढीली करूं। उसके सामने फाटकों को ऐसा खोल दूँ कि वे फाटक बन्द न किये जाएं। मैं तेरे आगे आगे चलूंगा और ऊँची–ऊँची भूमि को चौरस करूंगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूँगा और लोहे के बेड़ों को टुकड़े–टुकड़े कर दूंगा। मैं तुझ को अंधकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूंगा, जिससे तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित मैंने नाम लेकर तुझे बुलाया है; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैंने तुझे पदवी दी है। मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तो भी मैं तेरी कमर कसूंगा, जिससे उदयांचल से लेकर अस्तांचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं; मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं है" (यशा.45:1–6)।

इस भविष्यवाणी को यशायाह से निकालकर दानिय्येल ने कुस्रू राजा को दिखाया। इसके अलावा उसने यिर्मयाह के द्वारा की गयी भविष्यवाणी भी पढ़कर सुनाई है जो यहूदा राज्य के बाबुल की बन्धुवाई से छूटने का निश्चित समय बताती है जो B.C.536 में पूरी हो रही थी। वह कुस्रु राजा के शासन का प्रथम वर्ष था। यह भविष्यवाणी यिर्मयाह 25:8–14 और 26:10 में दी गयी है। वह इस प्रकार है, **"सारी जातियों का वह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियां सत्तर वर्ष तक बाबुल के राजा के अधीन रहेंगी। जब सत्तर वर्ष बीत चुके तब मैं बाबुल के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों को अधर्म का दण्ड दूंगा, यहोवा की यह वाणी है; और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूंगा"।**

इन भविष्यवाणी के वचनों के निर्देश के अनुसार जो दानिय्येल के द्वारा कुस्रु राजा को बताया गया तब राजा ने स्वयं उस रिहाई का आदेश दिया। उसके संबंध में लिखा है, **"फारस के राजा कुस्रु के पहले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था, वह पूरा हो। इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और इस आशय की चिट्ठियां लिखवाई कि फारस का राजा कुस्रु कहता है, कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरूशलेम जो यहूदा में है उसमें मेरा एक भवन बनवा; इसलिये हे उसकी प्रजा के सब लोगों, तुम में से जो कोई चाहे कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहे, तो वह वहां रवाना हो जाए" (2इति.36:22,23)।**

इन तमाम वचनों और भविष्यवाणियों द्वारा दानिय्येल ने अपने जीवन और भविष्य का निर्माण किया। इसके अलावा अपने लोगों की रिहाई का भी उपाय किया। परमेश्वर ने दानिय्येल को सुशिक्षित एवं सुसज्जित किया कि वह अपने लोगों के बन्धुवाई से छुटकारे का भी प्रबन्ध करने में सक्षम हो जाए। अपनी शिक्षा और योग्यता के द्वारा समस्त राजाओं को प्रभावित करता रहा और हर शासनकर्ताओं के समय में जीवित परमेश्वर को ऊँचा करता रहा और अन्त में कुस्रु राजा को ऐसा प्रभावित किया कि उसे अपने लोगों के

छुटकारे के लिये विवश किया। हम हमारी शिक्षा और योग्यताओं से क्या कर रहे हैं? इस अध्याय में दानिय्येल का ठोस निर्णय और परमेश्वर की सहायता दिखाई दे रही है और यह भी कि यदि परमेश्वर सहायता करेगा तो वह सामयिक नहीं बल्कि लम्बे समय के लिये होगी, जब तक कि लक्ष्य प्राप्ति न हो जाए।

अध्याय–2

दानिय्येल और मूर्ति के स्वप्न की व्याख्या

पद–1:–"अपने राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिससे उसका मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद नहीं आई"

नबुकदनेस्सर राजा ने अपने शासन के दूसरे वर्ष में एक स्वप्न देखा। पहले ही इस पुस्तक की प्रारंभिक बातों के बारे में वर्णन करते हुए समय के बारे में समझाया था। बाबुल में जो प्रथा है वह इस प्रकार है कि जिस वर्ष सिंहासन पर राजा विराजमान होता है वह वर्ष सिंहासन पर बैठने का वर्ष मानते हैं और उस साल को पहला वर्ष नहीं गिनते हैं। उस के दूसरे वर्ष को पहला वर्ष गिनते हैं। तीसरे वर्ष को दूसरा वर्ष गिनते हैं। ऐसा है तो नबूकदनेस्सर का दूसरा वर्ष वास्तव में फलस्तीन देश के हिसाब से तीसरा वर्ष है। मतलब दानिय्येल और उसके साथी अपने प्रशिक्षण के बाद निकल आये और राजा के दरबार में कार्य करना आरंभ कर चुके थे। तो नबूकदनेस्सर के स्वप्न का समय वास्तव में उसके शासन का तीसरा साल ही था।

राजा सिंहासन पर विराजमान होने का समय B.C.605 था। अर्थात् यह दानिय्येल के बन्धुवाई के दूसरे वर्ष में था। इस पद के अन्दर स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि अब तक दानिय्येल अपना प्रशिक्षण समाप्त कर राजा के दरबार की सेवा आरम्भ कर चुका था। यह कभी भी B.C. 603 से पहले नहीं हो सकता था। मतलब नबूकदनेस्सर राजा का स्वप्न उसके तीसरे वर्ष में ही हुआ था।

नबूकदनेस्सर राजा का स्वप्न

इस अध्याय का मुख्य विषय नबूकदनेस्सर का स्वप्न है जो उसने रात को देखा और सुबह तक भूल गया। याद करने की खूब कोशिश की पर उसको याद नहीं आया। इस स्वप्न के समय नबूकदनेस्सर राजा को यह पूरी

तौर से निश्चित हो गया था कि राज्य और सिंहासन उसके अधिकार में आ गया है। इस स्वप्न के समय तक नबूकदनेस्सर ने अपने सैनिक कार्य और लड़ाईयां समाप्त कर दी थी। बहुत से देशों पर उसका अधिकार हो चुका था। उसने मिस्र के राजा, नेको को पराजित किया जिसके बारे में भविष्यवक्ता यहेजकेल अपनी पुस्तक में वर्णन करता है **"हे मनुष्य की संतान, बाबुल के राजा नबुकदनेस्सर ने सौर को घेरने में अपनी सेना से बड़ा परिश्रम कराया; हर एक का सिर चन्दला हो गया, और हर एक के कन्धों का चमड़ा उड़ा; तो भी उसको सोर से न तो इस परिश्रम की मजदूरी कुछ मिली और न उसकी सेना को" (यहेज-29:18,19)।** उसके पश्चात् वह पेलूसी देश पर चढ़ाई कर ही रहा था कि उसे यह सन्देश प्राप्त हुआ कि उसके पिता नबोपोलासर की मृत्यु हो गयी। पिता की मृत्यु से यह निश्चित हो गया था कि सिंहासन का दावेदार वह स्वयं हो गया है। उस समय बाबुल का अधिकार सारे संसार में फैल चुका था अर्थात् बाबुल एक साम्राज्य बन चुका था। उसके मन में यह भी घमण्ड था कि उसने यहूदा राज्य को जीतने से यहोवा परमेश्वर पर भी जीत हासिल कर ली। तब वह अपने मन में सोचने लगा कि उसका भविष्य क्या होगा और यह तमाम् जीत हासिल हुई तो उसके राज्य का भविष्य क्या होगा? संसार के सारे देश नबूकदनेस्सर के अधीन में आ गए। इसके संबंध में भविष्यवक्ता यिर्मयाह भी वर्णन करता है **"और उनको उनके स्वामियों के लिये यह कहकर आज्ञा देना, कि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपने-अपने स्वामी से यों कहो कि पृथ्वी को और पृथ्वी पर के मनुष्यों और पशुओं को अपनी बड़ी शक्ति और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा मैंने बनाया, और जिस किसी को मैं चाहता हूँ उसी को उन्हें दिया करता हूँ। अब मैंने ये सब देश, अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को आप ही दे दिया है; और मैदान के जीव जन्तुओं को भी मैंने उसे दिया है कि वे उस के अधीन रहें। ये सब जातियां उसके और उसके बाद उस के बेटे और पोते के अधीन उस समय तक रहेगी जब तक उस के भी देश का दिन न आए; तब बहुत सी जातियां और बड़े-बड़े राजा उससे भी अपनी सेवा करवायेंगे। सो जो जाति व राजा बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के अधीन न हों और उसका जुआ अपनी गर्दन पर न ले ले, उस जाति को मैं तलवार, महंगी और मरी का दण्ड उस समय तक देता रहूँगा जब तक उसको**

उस के हाथ के द्वारा मिटा न दूं यहोवा की यही वाणी है (यिर्म. 27:4–8)।

सो सारे संसार के राज्यों पर नबूकदनेस्सर का अधिकार हो गया। बाबुल एक साम्राज्य में बदल गया। नबूकदनेस्सर के अलावा अब उस साम्राज्य पर और कोई दावेदार नहीं रहा। तब एक रात अपने सुन्दर मुलायम बिस्तर पर लेटे लेटे सोचने लगा कि मैं सारे संसार का सम्राट बन गया हूं। मैं बहुत दिन तक शासन करता रहूंगा। मेरे साम्राज्य का अर्थात् बाबुल का कभी अन्त नहीं होगा। ऐसे अपने बिस्तर पर लेटे लेटे सोचता हुआ धीरे–धीरे निद्रा की ओर फिसल गया। अर्ध–निद्रा की हालत में वह एक स्वप्न देखता है और स्वप्न के कारण उसका हृदय व्याकुल हो जाता है। उसकी नींद चली जाती है। वह निद्राविहीन एवं चिन्तामग्न हो उठता।

पद–2–7:–"तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषियों, तन्त्री, टोन्हे और कसदी बुलाए जाएं कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएं, सो वे आए और राजा के सामने हाज़िर हुए। तब राजा ने उनसे कहा, मैंने एक स्वप्न देखा और मेरा मन व्याकुल है कि स्वप्न को कैसे समझूं। कसदियों ने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे। अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका फल बतायेंगे। राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूँ कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े टुकड़े किये जाओगे, और तुम्हारे घर फुंकवा दिये जायेंगे। और तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे। इसलिये तुम मुझे फल समेत स्वप्न को बताओ। उन्होंने दूसरी बार कहा, हे राजा स्वप्न तेरे दासों को बताया जाए, और हम उसका फल समझा देंगे"।

दूसरे अध्याय के चौथे पद से लेकर सात अध्याय के अन्त तक अरामी भाषा में लिखा गया है। बाकी पूरी पुस्तक इब्रानी भाषा में लिखी गयी है। बाबुल की बन्धुवाई में 70 साल रहने के कारण, बन्धुवाई के पश्चात् अरामी भाषा यहूदियों की भाषा बन गयी। खैर, इस भाग का मुख्य वर्णन नबूकदनेस्सर राजा का भूला हुआ स्वप्न है। राजा ने स्वप्न देखा और भूल गया। स्वप्न भूल

जाने से वह बहुत परेशान हो गया। उसकी नींद टूट गयी। दूसरे दिन सबेरें राजा ने सारे विद्वानों को दरबार में बुलाया। विद्वानों के सभी विभाग के लोगों को अपने सामने हाजिर होने की आज्ञा दी। उनमें ज्योतिषी, तन्त्री, टोन्हा करने वाले और कसदी शामिल थे। वे सब बढ़िया तैयार होकर राजा के दरबार में हाज़िर हो गये। सबने राजा को प्रणाम किया। राजा के दीर्घ जीवन की कामना की।

तब राजा ने कहा कल रात मैंने स्वप्न देखा और वह स्वप्न मेरी स्मरण शक्ति से ओझल हो गया। अब तुम लोग मेरा स्वप्न और उसका फल भी बताए। राजा ने जो स्वप्न देखा, उससे वह बहुत ही आकर्षित और प्रभावित हो गया। लेकिन इससे पहले कि स्वप्न को याद करें वह बिलकुल उसके दिमाग से मिट गया। खूब कोशिश की कि याद आ जाए। पर याद ही नहीं आया। सो वह रात से ही परेशान रहा। उसकी नींद खराब हो गयी। राजा ने अपने दरबार की सेवा हेतु, विशेष कर इस प्रकार के संकटमय समय में राजा की सहायता के लिये, बहुत से ज्ञानियों को पाल रखा था। तुरन्त उन्हें बुलाया। वे तन्त्री और टोन्हा करने वाले, सब प्रकार के काला जादू जानने वाले, ज्योतिषी लोग जो नक्षत्रों के अध्ययन द्वारा भविष्य बताने का अभिनय करने वाले आदि थे। वे तारों के स्थान एवं ग्रहों का अध्ययन करके भविष्य की बातों को बता सकते थे। जादूगर लोग और ओझा या भूतविद्या करने वाले दावा करते थे कि मरे हुए लोगों से संपर्क करके उनसे बात कर सकते थे। लेकिन कसदी लोग तत्वज्ञानी या दार्शनिक थे जो उस समय के भौतिकशास्त्र के अध्ययन करने वाले थे। दानिय्येल और उसके साथी इसी विभाग के थे।

तो राजा ने इन सब लोगों को अपने सामने जमा किया और अपनी समस्या बताई। राजा ने कहा मैंने स्वप्न देखा पर स्वप्न भूल गया। स्वप्न बताना पड़ेगा और उसका अर्थ भी। यह सुनकर विद्वानों के सभी विभाग के लोग बहुत ही भयभीत एवं साहसहीन हो गये। वे लोग स्वप्न सुनने पर उसका फल बताने को तैयार थे। पर जो स्वप्न भूल गया उसे स्मरण कराना बहुत ही मुश्किल काम था। वे राजा से बार–बार विनती करने लगे कि राजा हमें स्वप्न बताएं ताकि हम फल समझा सकें। इससे राजा और भी व्याकुल और परेशान हो गया। आपको मालूम है परेशान व्यक्ति अन्य लोगों को भी

जाने से वह बहुत परेशान हो गया। उसकी नींद टूट गयी। दूसरे दिन सबेरे राजा ने सारे विद्वानों को दरबार में बुलाया। विद्वानों के सभी विभाग के लोगों को अपने सामने हाजिर होने की आज्ञा दी। उनमें ज्योतिषी, तन्त्री, टोन्हा करने वाले और कसदी शामिल थे। वे सब बढ़िया तैयार होकर राजा के दरबार में हाज़िर हो गये। सबने राजा को प्रणाम किया। राजा के दीर्घ जीवन की कामना की।

तब राजा ने कहा कल रात मैंने स्वप्न देखा और वह स्वप्न मेरी स्मरण शक्ति से ओझल हो गया। अब तुम लोग मेरा स्वप्न और उसका फल भी बताएं। राजा ने जो स्वप्न देखा, उससे वह बहुत ही आकर्षित और प्रभावित हो गया। लेकिन इससे पहले कि स्वप्न को याद करें वह बिलकुल उसके दिमाग से मिट गया। खूब कोशिश की कि याद आ जाए। पर याद ही नहीं आया। सो वह रात से ही परेशान रहा। उसकी नींद खराब हो गयी। राजा ने अपने दरबार की सेवा हेतु, विशेष कर इस प्रकार के संकटमय समय में राजा की सहायता के लिये, बहुत से ज्ञानियों को पाल रखा था। तुरन्त उन्हें बुलाया। वे तन्त्री और टोन्हा करने वाले, सब प्रकार के काला जादू जानने वाले, ज्योतिषी लोग जो नक्षत्रों के अध्ययन द्वारा भविष्य बताने का अभिनय करने वाले आदि थे। वे तारों के स्थान एवं ग्रहों का अध्ययन करके भविष्य की बातों को बता सकते थे। जादूगर लोग और ओझा या भूतविद्या करने वाले दावा करते थे कि मरे हुए लोगों से संपर्क करके उनसे बात कर सकते थे। लेकिन कसदी लोग तत्वज्ञानी या दार्शनिक थे जो उस समय के भौतिकशास्त्र के अध्ययन करने वाले थे। दानिय्येल और उसके साथी इसी विभाग के थे।

तो राजा ने इन सब लोगों को अपने सामने जमा किया और अपनी समस्या बताई। राजा ने कहा मैंने स्वप्न देखा पर स्वप्न भूल गया। स्वप्न बताना पड़ेगा और उसका अर्थ भी। यह सुनकर विद्वानों के सभी विभाग के लोग बहुत ही भयभीत एवं साहसहीन हो गये। वे लोग स्वप्न सुनने पर उसका फल बताने को तैयार थे। पर जो स्वप्न भूल गया उसे स्मरण कराना बहुत ही मुश्किल काम था। वे राजा से बार–बार विनती करने लगे कि राजा हमें स्वप्न बताएं ताकि हम फल समझा सकें। इससे राजा और भी व्याकुल और परेशान हो गया। आपको मालूम है परेशान व्यक्ति अन्य लोगों को भी

राजा को यह बता सके। इस पर राजा ने झुंझलाकर, और बहुत ही क्रोधित होकर, बाबुल के सब पण्डितों को नाश करने की आज्ञा दे दी" (पद.8–12) ।

जैसा कि आज कल के हमारे खगोलशास्त्री हैं, वैसे उस समय बाबुल के विद्वान और खगोलशास्त्री भी भविष्य की बात बताने की कला जानते थे। वे कुछ जानकारियों को एकत्रित कर के अन्दाज़ लगाकर अपनी भाषा में किसी न किसी प्रकार से भविष्य में होने वाली घटना को भविष्य कथन के रूप में कहा करते थे। कभी–कभी वह सही भी निकल जाता था। सो विद्वान लोग एवं भावी कहने वाले चाहते थे कि राजा उन्हें स्वप्न बताएं ताकि वे अन्दाज़ लगा कर उसका अर्थ बताएं ताकि राजा को संतुष्ट कर दे। लेकिन राजा इस प्रकार आसानी से धोखे में आने वाला व्यक्ति नहीं था। जब उन्होंने देखा कि विद्वान लोग केवल गपशप कर के समय आगे बढ़ा रहे हैं तो राजा की सहनशीलता, सहनशक्ति और सब्र खत्म हो गया और कहने लगा कि वे सब कपटी और ठगने वाले हैं, क्रोध में और आक्रोश में आकर राजा ने सभी विद्वानों को नाश करने का आदेश दे दिया। दानिय्येल और उसके साथी भी इस विभाग में शामिल होने से वे भी इस विनाश में नाश होने वाले थे। लेकिन वे किसी कारणवश उस समय राजा के सामने उपस्थित न थे। हो सकता है राजा यह इनाम और प्रतिष्ठा गैर यहूदी विद्वानों को देने के विचार में था। राजा का आदेश निकला तब दानिय्येल को यह पता चला और इससे पहले कि दानिय्येल उपाय निकाले, जल्लाद राजा की आज्ञा से विद्वानों को मार डालने के लिए निकल चुके थे।

दानिय्येल और राजा के स्वप्न की समस्या

इस समस्या के बारे में दानिय्येल को पता चला और उसने राजा के सम्मुख जाकर समस्या के समाधान के लिये समय मांगा।

लिखा है, **पद.13–16 "सो यह आज्ञा निकली, और पण्डित लोगों का घात होने पर था; और लोग दानिय्येल और उसके संगियों को ढूंढ रहे थे कि वे भी घात किये जाएं। तब दानिय्येल ने, जल्लादों के प्रधान अर्योक से, जो बाबुल के पण्डितों को घात करने के लिये**

निकला था, सोच विचार कर और बुद्धिमानी के साथ कहा; और राजा के हाकिम अर्योक से पूछने लगा, यह आज्ञा राजा की ओर से ऐसी उतावली के साथ क्यों निकली? तब अर्योक ने दानिय्येल को इसका भेद बता दिया। दानिय्येल ने भीतर जाकर राजा से बिनती की, कि उसके लिये कोई समय ठहराया जाए, तो वह महाराजा को स्वप्न का फल बता देगा''।

इस आशाहीन अवस्था में उस अन्धकारपूर्ण माहौल का अंत करते हुए दानिय्येल ने राजा को आशा प्रदान की। दानिय्येल ने बातों का पता लगाया। परिस्थिति का जायज़ा लिया। उसको मालूम था कि यह मनुष्य की शक्ति एवं कल्पनाओं से परे कोई अनोखी बात है पर यह परमेश्वर प्रकट कर सकता है। दानिय्येल का भरोसा उसके परमेश्वर के ऊपर था। जो समस्या मानव से असंभव है वह परमेश्वर से संभव है। याद रखिये किसी भी ज़माने में रहने वाले मानव क्यों न हों, उसकी समस्या के समाधान के लिये उसे परमेश्वर के पास जाना होगा। व्यक्तिगत हो या पारिवारिक, सामाजिक हो या सरकार से संबंधित, या कोई भी समस्या क्यों न हो, परमेश्वर के लिये कोई बात असंभव नहीं है। दानिय्येल को मालूम था कि इस समस्या का समाधान कहां मिलेगा। आज हम समस्या के बारे में अध्ययन नहीं करते हैं न ही हम इस बात को जानते हैं कि समस्या का समाधान कौन कर सकता है। हम बेवजह परेशान होते और अन्य लोगों को भी परेशान करते रहते हैं।

दानिय्येल और उसके साथी प्रार्थना सभा में

जब समस्या का पता चला तो दानिय्येल अपने घर की ओर चला। समस्या से भागने और फरार होने का विचार नहीं कर रहा है। फिर वह क्या कर रहा है? आगे इस अध्याय में उसका वर्णन है।

पद.17-24:- ''तब दानिय्येल ने अपने घर जाकर, अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बताकर कहा, इस भेद के विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये यह कहकर प्रार्थना करो, कि बाबुल के और सब पण्डितों के संग, दानिय्येल और उसके संगी भी नाश न किये जाएं। तब वह भेद दानिय्येल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रकट किया गया, परमेश्वर का नाम

युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं। समय और ऋतुओं को वही पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझदारों को समझ भी वही देता है; वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रकट करता है; वह जानता है कि अंधियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है। हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूं, क्योंकि तूने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है, और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से मांगा था, उसे तूने मुझ पर प्रकट किया है, तूने हमको राजा की बात बताई है तब दानिय्येल ने अर्योक के पास, जिसे राजा ने बाबुल के पण्डितों के नाश करने के लिये ठहराया था, भीतर जाकर कहा, बाबुल के पण्डितों का नाश न कर, मुझे राजा के सम्मुख भीतर ले चल, मैं फल बताऊंगा"।

यह बाबुल के अन्दर जीवित परमेश्वर से की जाने वाली पहली प्रार्थना सभा थी। दानिय्येल ने जाकर अपने संगी भाईयों को इस विनाशकारी समस्या से अवगत कराया और उस रात प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के सम्मुख समस्या को रखने हेतु उन्हें प्रोत्साहित किया। इन चारों जवानों का अपने परमेश्वर के साथ अच्छा संबंध था। याद रखिये दूसरे अध्याय में समस्या का सामना करने से पहले उन लोगों ने अपने परमेश्वर के साथ संबंध जोड़ने वाला एक पहला अध्याय तैयार किया। पहले अध्याय में उन्होंने परमेश्वर के लिये और परमेश्वर के वचन के लिये अपने जीवन को समर्पित कर दिया। कई लोग समस्या के समय परमेश्वर को ढूंढते हैं। लेकिन दानिय्येल ने ऐसा नहीं बल्कि अच्छे समय में, अनुकूल परिस्थिति में परमेश्वर के साथ अच्छा संबंध जोड़ा। परमेश्वर के लिये बड़ा त्याग किया और परमेश्वर के लिये अपने जीवन को समर्पित किया।

अब जब समस्या आ गयी, तब परमेश्वर उनकी सहायता के लिये फुर्ती कर रहा है। शाम के समय जब विनाशकारी समस्या का पता चला तो उसने अपने संगी भाईयों को साथ लेकर प्रार्थना के लिये कमरे में प्रवेश किया। समस्या साधारण नहीं है, मृत्यु और जीवन का सवाल है। बहुत ही बोझ के साथ, एकता के साथ प्रार्थना करना पड़ा। सबसे पहले उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद किया। परमेश्वर के महान कार्यों को स्मरण किया।

उसकी स्तुति और प्रशंसा की। पूर्वजों को याद किया। इसका मतलब यह है कि वे इस बात को अंगीकार कर रहे थे कि परमेश्वर वायदों को पूरा करने वाला वाचा का परमेश्वर है। इस प्रकार परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए उनकी समस्या के लिये प्रार्थना की तो वह भेद परमेश्वर ने दानिय्येल पर प्रकट किया। दानिय्येल अति प्रसन्न हुआ और अपने भाईयों को भी इस बात से अवगत कराया। एक आपातकालीन प्रार्थना सभा और आश्चर्यजनक तरीके से उसका उत्तर प्राप्त किया जाना। इस समस्या के समाधान के लिये परमेश्वर ने देर नहीं की। हमारा परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देने वाला और संकट के समय अति सहज से मिलने वाला सहायक है।

जब प्रार्थना का उत्तर मिला तो दानिय्येल बहुत ही प्रसन्नचित्त हो गया। उसने दूसरे दिन सुबह जल्लादों के प्रधान अर्योक के पास जाकर कहा कि उसे शीघ्र राजा के सम्मुख ले जाए। उसने कहा कि वह राजा के स्वप्न का फल दे सकता है। परमेश्वर पर विश्वास करने वाले और प्रार्थना करने वाले भक्तों के पास दुनियां की समस्याओं का समाधान पाया जाता है। ईश्वररहित लोग समस्या के कारण व्याकुल और विचलित होते हैं तो परमेश्वर के लोगों के अन्दर एक अटूट एवं अद्‌भुत विश्वास और भरोसा रहता है। उन्हें मालूम है कि जो मनुष्य से असंभव है वह परमेश्वर से संभव है। वे तुरन्त परमेश्वर के सम्मुख पहुँच जाते हैं। परमेश्वर उन्हें तुरन्त उत्तर देकर आनन्दित एवं आसूदा करता है। प्रिय मित्र, क्या आज आपका संबंध परमेश्वर के साथ सही है ? यदि संबंध सही नहीं है तो आज आप के लिये मौका है कि अपना संबंध यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर के साथ दुरुस्त करें। काश! कि परमेश्वर आपकी सहायता करें।

दानिय्येल राजा के सम्मुख

परमेश्वर ने इस भेद को दानिय्येल पर प्रकट किया। अर्योक ने दानिय्येल को शीघ्र राजा के सम्मुख पहुँचाया। वहां यूं लिखा है, **पद–2:25-30:- "तब अर्योक ने दानिय्येल को राजा के सम्मुख शीघ्र ले जाकर उस से कहा, यहूदी बन्धुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है, जो राजा को स्वप्न का फल बतायेगा। राजा ने दानिय्येल से जिस का नाम बेलतशस्सर भी था, पूछा क्या तुझमें इतनी शक्ति है कि जो**

स्वप्न मैंने देखा है, उसे फल समेत मुझे बताएं? दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित, न तंत्री, न ज्योतिषी न दूसरे भावी बताने वाले राजा को बता सकते हैं। परन्तु भेदों का प्रकटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को बताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होने वाला है। तेरा स्वप्न और जो कुछ तूनें पलंग पर पड़े हुए देखा, वह यह है; हे राजा, जब तुझको पलंग पर यह विचार हुआ कि भविष्य में क्या क्या होने वाला है, तब भेदों को खोलने वाले ने मुझको बताया कि क्या क्या होने वाला है। मुझ पर यह भेद इस कारण नहीं खोला गया कि मैं और सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान हूं, परन्तु केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वप्न का फल राजा को बताया जाए, और तू अपने मन के विचार समझ सके"।

अब दानिय्येल राजा के सेनापति अर्योक के पास गया और कहा कि राजा के सम्मुख उनके स्वप्न का अर्थ बताने के लिये मुझ को ले जाए। रात्रि की प्रार्थना सभा में परमेश्वर ने दानिय्येल पर राजा का स्वप्न और उसका अर्थ भी प्रकट किया। सो दानिय्येल राजा के पास जाने में सक्षम हो गया। जैसे ही दानिय्येल ने यह समाचार राजा के सेनापति अर्योक को बताया तो वह दानिय्येल से भी ज्यादा जल्दी करने लगा। राजा के समस्या का उत्तर प्रदान करने में उसको भी सम्मान प्राप्त होने वाली बात थी। वह जाकर राजा से कहता है "**यहूदी बन्धुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है**"। अर्योक यह भूल गया कि दानिय्येल इससे पहले राजा के सम्मुख उपस्थित हो चुका है। राजा दानिय्येल से पूछता है, क्या तुझमें इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैंने देखा है, उसे फल समेत मुझे बताए ? इस का मतलब है, राजा को शंका थी कि दानिय्येल पण्डितों से बढ़कर कुछ कर सकता है। कारण यह था कि इस समस्या में सारे पण्डित और जादू टोन्हा करने वाले पूरी तौर से पराजित हो चुके थे।

लेकिन इस निराशाजनक परिस्थिति में दानिय्येल ने राजा को फिर से भरोसा दिलाया। इस बड़े कार्य में दानिय्येल ने अपने लिये जरा भी सम्मान नहीं लिया। दानिय्येल इस अवसर पर यह बात बताने के लिये बिलकुल भी नहीं झिझका कि एक परमेश्वर जीवित है जो यहूदियों का परमेश्वर है और

वह सच्चा है। यह भी बताया कि इस प्रकार की समस्या का केवल वही जीवित परमेश्वर समाधान कर सकता है। यह बुद्धिमानों और पण्डितों का कार्य नहीं है। दानिय्येल ने अपने परमेश्वर को ऊंचा करने में जरा भी विलम्ब नहीं किया।

यहां दानिय्येल राजा के स्वप्न को याद दिलाता है और उसका अर्थ भी बताता है। राजा को बताने लगा कि आप पलंग पर पड़े थे तो आपके मन में यह विचार आया कि सिंहासन और राज्य पर किसी और का दावा नहीं है। पूरा पूरा अधिकार नबूकदनेस्सर राजा के पास आया है, पर अब क्या होगा? साम्राज्य का भविष्य क्या होगा ? इस प्रकार आप भविष्य के बारे में सोच कर पलंग पर लेटे रहे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने राजा को साम्राज्य के भविष्य संबंधी बात स्वप्न द्वारा दिखाई।

दानिय्येल ने राजा को उसका स्वप्न बताया तो उसकी भावना का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल नहीं था। जब स्वप्न का वर्णन किया तो राजा को वह सब दृश्य वैसा ही याद आया जैसा राजा ने स्वप्न में देखा था। दानिय्येल के द्वारा स्वप्न के वर्णन ने राजा को विश्वास दिलाया कि वह स्वप्न का अर्थ भी बता सकता है। इस पर राजा बहुत ही आश्चर्यचकित हुआ। उसको मालूम हुआ कि दानिय्येल एक बड़ा अन्तरदृष्टि वाला और बुद्धिमान मनुष्य है। इतना ही नहीं वह दानिय्येल द्वारा स्वप्न की व्याख्या पर भी विश्वास करने लगा।

राजा को बताया कि उनका स्वप्न एक बडी मूर्ति का था जिसका अन्य जाति राज्यों के समय के बारे में एक पूर्वदर्शन है। यह मूर्ति चार धातुओं (Metals) से निर्मित थीं अर्थात सोना, चांदी, पीतल, लोहा और दोनों पांव एवं अंगुलियां कुछ मिट्टी और कुछ लोहे से बनी थी। फिर भविष्यवक्ता दानिय्येल ने वर्णन कर बताया कि ये चार धातु वाली मूर्ति संसार में उठने वाले चार साम्राज्यों का संकेत है। जो बात दानिय्येल ने राजा को बताई वह बाबुल के विद्वान राजा को बताने की कभी हिम्मत नहीं करेगा। कारण यह था कि इस मूर्ति के फल में वास्तव में नबूकदनेस्सर राजा की पराजय और उसके पश्चात् 3 अन्य निम्न श्रेणी के साम्राज्यों के उदय का वर्णन आता है और निश्चित रूप में यह मूर्ति अन्य जाति शासन की संपूर्ण समय सीमा को

बताती है (लूका.21:24)। मतलब इससे अन्य जाति शासन की समय सीमा में इन चारों साम्राज्यों को एक के बाद एक संसार में प्रकट होना था। उसके पश्चात् एकदम अन्त में परमेश्वर का सार्वलौकिक साम्राज्य की स्थापना इस संसार में होना निश्चित है। वह साम्राज्य अनन्तकाल तक स्थिर रहने वाला है।

इस समय सीमा में इस्राएल और अन्य राष्ट्र इन अन्यजाति साम्राज्यों के अधीन रहेगा। पर अन्यजातियों के समय की समाप्ति पर इस्राएल महान परमेश्वर की अधीनता में आ जायेगा। इसके संबंध में होशे नबी भी अपने पुस्तक में वर्णन करता है, क्योंकि इस्राएली बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना लाठी, और बिना एपोद व गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। उसके बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूंढ़ने लगेंगे, और अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आयेंगे (होशे.3:4,5)। नबूकदनेस्सर का स्वप्न इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है जो पहले से चित्रित किया गया है। दानिय्येल का अनुवाद जो इस स्वप्न के संबंध में किया गया है, वह धर्मशास्त्र की विश्वसनीयता और ईश्वरीय प्रेरणा का अनोखा एवं अद्वितीय प्रमाण है।

अब हम उस मूर्ति के संबंध में जो चार साम्राज्यों को संकेत करता है, एक के बाद एक नियमित रूप में अध्ययन करें।

बाबुल का साम्राज्य (सिर जो सोने का है)

B.C. 606-536

नबुकदनेस्सर ने जिस मूर्ति को स्वप्न में देखा, उसका सिर सोने का था। दानिय्येल ने उसका अनुवाद करके बताया है कि, यह सोने का सिर स्वयं नबुकदनेस्सर राजा है। परमेश्वर ने उसको उस समय के समस्त राष्ट्रों के ऊपर अधिकार दिया था। यह भी कहा गया था कि जब तक वह जीवित रहेगा अर्थात उस के पागलपन के सात साल को छोड़कर, वह संपूर्ण साम्राज्य पर पूरा अधिकार रखेगा। उसके समस्त अनुगामी हर बात में उससे कम थे। उसका दामाद एविल मेरोड़क की अधम एवं अप्रतिष्ठित दो साल के शासन के पश्चात् उसके साले नेरिगलिसार द्वारा उसकी धोखे से हत्या कर दी गयी और उसने सिंहासन अपने अधिकार में कर लिया। चार साल बाद

वह लड़ाई में मारा गया। उसके पश्चात् उसका मूर्ख एवं अशक्त बेटा लेबोरोसोअर्क्रड ने केवल 9 महीने शासन किया और वह भी मारा गया। उसके पश्चात् नबुकदनेस्सर के एक और दामाद नेबोनिड्स ने सिंहासन हासिल किया। बाबुल का अन्तिम राजा बेलशस्सर था।

दानिय्येल ने राजा को बताया, हे राजा, तू तो महाराजाधिराज है, क्योंकि स्वर्ग के परमेश्वर ने तुझको राज्य, सामर्थ, शक्ति और महिमा दी है, और जहां मनुष्य पाए जाते हैं, वहां उसने उन सभी को और मैदान के जीव जन्तु, और आकाश के पक्षी भी तेरे वश में कर दिए हैं, और तुझको उन सबका अधिकारी ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही है (दानि.2:37,38)। इन वचनों को बताया तो राजा बहुत खुश हुए। लेकिन दानिय्येल रुका नहीं। वह आगे बोलते हुए कहने लगा, तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझसे छोटा होगा (पद.39)। इस कथन से राजा बहुत दुखी हो गया होगा। कोई भी यह नहीं चाहता कि उनके अलावा कोई उस स्थान में आ जाए। ऐसा विचार रखते हैं कि सिर्फ वही महान रहे। यही कुछ विचार नबुकदनेस्सर का भी हुआ होगा। लेकिन महान परमेश्वर की इच्छा को कौन टाल सकता है।

मादी फारसी साम्राज्य (चांदी का सीना और हाथ)

B.C. 536-330

बाबुल साम्राज्य के अन्तिम समय में बेलशस्सर राजा शासन कर रहा था। उस अन्तिम राजा के समय में बाबुल साम्राज्य से हर प्रकार से कम शक्ति वाला साम्राज्य जो मूर्ति का सीना और हाथों के द्वारा प्रकट किया गया है, संसार में उदय हुआ। मादी और फारसी नाम के द्विसंख्यक (Dual) साम्राज्य ने आकर बाबुल पर आक्रमण किया और बाबुल साम्राज्य को समाप्त किया। पहले शासन का अधिकार मादियों को दिया गया। मादियों का शासन मूर्ति के बाएं हाथ के द्वारा बताया जाता है जो शक्तिहीन है। मूर्ति का दाहिना हाथ जो शक्तिशाली है, वह फारसी शासन का संकेत है। इस राज्य के बारे में दानिय्येल लिखता है कि, **"तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा"** (पद–39)। लम्बे समय के फारसी राजाओं के शासन के पश्चात् मादी फारसी साम्राज्य समाप्त हुआ और यूनान साम्राज्य का उदय

हुआ।

यूनान साम्राज्य (पीतल का पेट और कमर)

B.C. 330-146

तीसरा साम्राज्य यूनान था जो मूर्ति के पेट और कमर के द्वारा प्रतिनिधित्व करता है। इस साम्राज्य का पहला शासनकर्ता सिकन्दर महान था। अध्याय 8 के दर्शन के अनुसार सिकन्दर महान की मृत्यु के पश्चात् यह साम्राज्य 4 भागों में विभाजित हो गया। धीरे धीरे उनमें से एक एक राज्य शिथिल होते गये और अन्त में यीशु मसीह के प्रथम आगमन के कुछ समय पहले रोमी साम्राज्य स्थापित हो गया।

यही उसके लिये वर्णन आया है **"और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिसमें सारी पृथ्वी आ जायेगी"** (पद39)। इस तीसरे साम्राज्य के बारे में वर्णन आया है कि मूर्ति के पेट और जांघें पीतल की थी। यहां जांधों के बदले जांघों का भाग याने जांघों का आधा हिस्सा और उसके ऊपर का भाग जो पेट को मिला कर है, वह यूनान साम्राज्य को संकेत करता है।

रोम साम्राज्य (लोहें की जांघ और पैर)

B.C. 146- A.D.476

जांघों का आधा हिस्सा और दोनों पैर लोहे के थे जो चौथा साम्राज्य रोम को संकेत करता है। जिस प्रकार मूर्ति के दोनों पैर लम्बे थे ठीक इसी प्रकार यह साम्राज्य बहुत लम्बे समय तक शासन करता रहा। लेकिन जांघों के नीचे पैर दोनों अलग अलग दिखाई देते हैं ठीक वैसा ही रोमी साम्राज्य A.D.364 में दो भागों में विभाजित हो गया अर्थात् पश्चिमी रोमा और पूर्वी रोमा।

यह साम्राज्य लोहे के भाग के द्वारा प्रतिनिधित्व करता है। इस साम्राज्य की विशेषता यह थी कि वह अपने सामर्थ्य के द्वारा प्रशस्त था। जिस प्रकार लोहा सख्त रहता है तथा सब चीज़ों को चकनाचूर कर देता है, और सब चीज़ों को अपनी शक्ति के अधीन कर देता है, ठीक वैसा ही उसके सामना किये गये सबको उसने चकनाचूर कर दिया। यह साम्राज्य चौथी

नबुकदनेस्सर का स्वप्न

साम्राज्यवाद की मूर्ती (दानि. 2 : 31- 45)

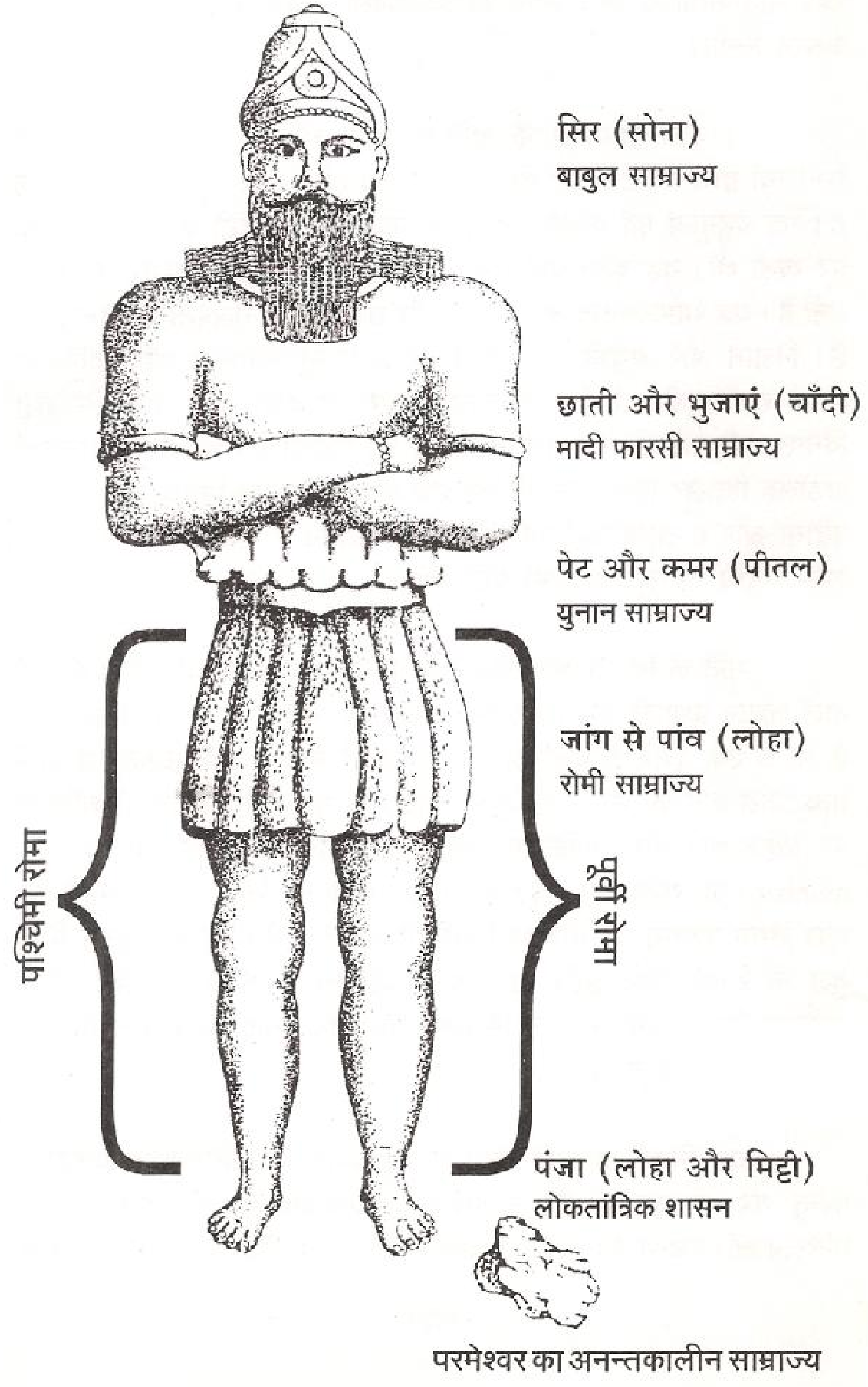

शताब्दी में दो भागों में विभाजित हो गया। जैसा कि मूर्ति के दो पैर अलग अलग दिखाई देते हैं और जैसे पैर दोनों लम्बे हैं वैसे ही रोमी साम्राज्य विभाजित हो गया और उस साम्राज्य का शासनकाल बहुत लम्बे समय तक रहा। यह साम्राज्य अन्य साम्राज्यों की अपेक्षा अधिक समय तक संसार पर शासन किया।

इस चौथे साम्राज्य के अन्तिम दिनों को उस मूर्ति के पांव और उंगलियों द्वारा प्रकट किया गया है जो, कुछ लोहा और कुछ मिट्टी से बना है। यह बहुमूल्य एवं बलवन्त साम्राज्य वाली मूर्ति मिट्टी के कमज़ोर पांवों पर खड़ी थी। यह दोनों पांव लोहा और मिट्टी के एक कमज़ोर मिश्रण से बना है। यह साम्राज्यवाद की उन्नति और तरक्की एवं मजबूती का दृश्य नहीं है। विज्ञान और अनुसंधान तरक्की पर है परन्तु नैतिकता और धार्मिकता इसके साथ जुड़ी नहीं है। इस कारण मनुष्य का बढ़ता हुआ ज्ञान और बुद्धि विनाशकारी परिणाम को उत्पन्न करता है। राक्षसी एवं भयंकर शासनकर्ता अडोल्फ हिटलर जिसने जर्मनी को एक पशु समान एवं निर्दयी रूप में आगे बढ़ाया और 6 लाख यहूदियों को गैस के ओवन में डालकर मरवा डाला। आज मनुष्य दयालु और धर्मी नहीं रहा।

मूर्ति के मिट्टी और लोहे से बना पांव और उंगलियां भविष्य में आने वाले शासन प्रणाली की ओर संकेत करता है। मिट्टी और लोहा मिला हुआ है, पर वे एक दूसरे से घुलमिल कर एक दूसरे में समा नहीं सकते। ये दोनों तत्व किस बात का संकेत हैं? कुछ समय तक यह अलग अलग दो शक्तियों का संकेत था। लोहा फासिसम (Phasism) और मिट्टी साम्यवाद (Communism) का संकेत था। कई बार ऐसा लगता था कि ये दोनों एक है, पर कुछ समय पश्चात् ये संघर्षमय स्थिति में आ जाते थे। यह बात दूसरे विश्व युद्ध के समय स्पष्ट हुई। यह युग के अन्तिम संघर्ष में भी प्रकट होंगे। अडोल्फ हिटलर और रूस ने मिलकर एक संधि बनाई पर बाद में वह टूट कर चकनाचूर हो गई।

यह मिट्टी हालांकि रूस के साम्यवाद का प्रतिनिधित्व करती है परन्तु यह समाजवाद और अनार्किसम (Anarchism) के लिये भी एक प्रतिरूप और लक्षण है। इसके अलावा भारत के राजनैतिक रवैये को देखें तो

पता चलता है कि आज के मौजूदा शासन के लिये यह एक ठोस और पुख्ता उदाहरण है। कई दल मिलकर शासन के लिये सरकार बना रहे हैं पर किसी न किसी मुद्दे को लेकर उनमें कुछ समय बाद मतभेद और मनमुटाव हो जाता है और कोई एक मज़बूत दल अपना समर्थन वापस ले लेता है। इस मतभेद और मनमुटाव से मानसिक तनाव एवं मनोमालिन्य पैदा होती है। इस कारण शीघ्र ही शासन समाप्त हो जाते हैं। कुछ ही समय में कई प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री बदलने की नौबत आ जाती है और मंत्रिमंडल को बर्खास्त करना पड़ता है। बातचीत के द्वारा फिर एकजुट होते हैं किसी दूसरे दल को समर्थन देते हैं और वह सरकार बनाता है। पर कुछ समय पश्चात् वह भी गिरा दी जाती है। अस्थिर शासन एवं शासनकर्ता आज के प्रजातंत्र का स्वभाव है। यही मिट्टी और लोहे के मिश्रण जैसा शासन है। यह वर्तमानकालीन प्रजातंत्र का एक अच्छा उदाहरण है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों में कुछ इसी प्रकार का शासन चल रहा है।

मूर्ति की 10 उंगलियां अन्तिम समय में फिर से उदय होने वाले रोमी (Revived Rome) साम्राज्य के 10 संयुक्त राजाओं को दर्शाता है। मिट्टी और लोहे के अस्थाई शासन प्रणाली अर्थात् प्रजातंत्र के समय की समाप्ति में रोमी साम्राज्य जो जनसमुदाय रूपी सागर में डूबा पड़ा है, फिर से उदय होगा और उसमें 10 राजा होंगे। इन दस राजाओं के बारे में हम 7 अध्याय में और भी विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

पद–44, 45 :– और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जायेगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर–चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा। जैसा हमने देखा कि एक पत्थर किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड़ में से उखड़ा, और उसने लोहे, पीतल, मिट्टी, चांदी और सोने को चूर–चूर किया, इसी रीति से महान परमेश्वर ने राजा को जताया कि इसके बाद क्या क्या होने वाला है। न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ सन्देह है।

फिर से उदय होने वाले रोमी साम्राज्य के 10 संयुक्त राजाओं के शासनकाल में विरुद्ध मसीह विश्वशक्ति के रूप में प्रकट होगा। उस समय

10 राजा उसका मुकाबला करेंगे। लेकिन विरुद्ध मसीह अपनी शक्ति के प्रभाव को प्रयोग कर के 10 में से 3 राजाओं को खत्म कर देगा। तब बाकी 7 राजा विरुद्ध मसीह के आगे अपने आप को समर्पित कर देंगे। इस के बाद विरुद्ध, मसीह 8 वां राजा के रूप में उनमें शामिल हो जायेगा। विरुद्ध मसीह शासन का बागडोर अपने हाथ में लेगा। उस समय अर्थात् इन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक, स्थाई और सदा स्थिर रहने वाला राज्य स्थापित करेगा। वह राज्य सर्वदा रहेगा। इतना ही नहीं वह राज्य किसी अन्य जाति को नहीं दिया जायेगा।

यह प्रकिया, इन राजाओं के विनाश के पश्चात् की होगी। यह मूर्ति जो साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करती है, उसके पांव पर एक पत्थर आकर मारेगा जो पहाड़ से बिन हाथ के छुए, उखड़ कर आयेगा। यह लोहा मिट्टी, पीतल, चांदी, सोना आदि वस्तुओं से निर्मित इस मूर्ति के पावों पर गिरा और संपूर्ण मूर्ति को चकनाचूर कर दिया। संसार को विश्व शक्ति के रूप में जोड़ने वाले चारों साम्राज्य को सत्यनाश कर दिया। मानवीय शासन अर्थात् मनुष्य के साम्राज्यवाद को इसी के साथ पूरी तौर से नष्ट कर दिया गया। वह पत्थर सारे संसार में फैल गया। यह पत्थर स्वयं प्रभु यीशु मसीह है। उस पत्थर के बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैलने का मतलब (2:35) है, यीशु मसीह का शासन सार्वलौकिक हो जाना। संसार के सब देशों में यीशु मसीह का ही शासन रहेगा। इस के साथ साथ अन्य जातियों का शासन हमेशा के लिये समाप्त हो जायेगा। सारी पृथ्वी पर यीशु मसीह का राज्य एवं शासन होगा।

नबुकदनेस्सर राजा का निर्णय

स्वप्न का अर्थ बताने के पश्चात् दानिय्येल राजा के समक्ष अपने परमेश्वर को ऊंचा करने में नहीं झिझका। वह कहने लगा, **"इसी रीति से महान परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या क्या होने वाला है। न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ संदेह है" (पद.45)।** दानिय्येल ने कहा सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने भविष्य की बातें अर्थात् दुनियां की राजनीतिक स्थिति का स्पष्टीकरण इस स्वप्न के द्वारा प्रकट किया है। याने नबुकदनेस्सर के द्वारा संचालित बाबुल साम्राज्य का एक दिन अन्त हो

जायेगा। उसके बाद 3 और साम्राज्य उदय होंगे और उन तीन साम्राज्यों के अन्त में एक प्रजातन्त्र वाला शासन आयेगा। किसी को बहुमत न मिलने के कारण मिलीजुली सरकार बनायेंगे पर एक दूसरे से मिलेंगे नहीं। इसके लिये आज की भारतीय राजनीतिक गतिविधियां एक उदाहरण है। उसके अन्त में फिर से उदय होने वाले रोमी साम्राज्य के 10 संयुक्त राजाओं का शासन होगा। उनके समय में विरुद्ध मसीह अन्य जातियों के अन्तिम शासनकर्ता के रूप में प्रकट होगा। आते ही वह तीन राजाओं को पराजित करके 8 वां राजा के रूप में शासन आगे बढ़ायेगा। उन राजाओं के दिनों में प्रभु यीशु मसीह अपने शासन को संसार में स्थापित करेगा। यह भी दानिय्येल ने समझाया कि यह परमेश्वर की ओर से है, सो स्वप्न में और उसके फल में कोई सन्देह नहीं है।

इतनी बातें स्पष्ट रूप में सुनकर राजा भयभीत हो गया। लिखा है **"इतना सुनकर नबुकदनेस्सर राजा ने मुंह के बल गिरकर दानिय्येल को दण्डवत की, और आज्ञा दी कि उसको भेंट चढ़ाओ, और उसके सामने सुगन्ध वस्तु जलाओ" (2:46)**। राजा ने ये बातें सुनकर जीवित परमेश्वर को दण्डवत करने की बजाय वह दानिय्येल के सामने गिरकर दानिय्येल को दण्डवत कर रहे थे। यह भी कहने लगे कि दानिय्येल के सामने भेंट चढ़ाओ और सुगन्ध वस्तु जलाओ। मनुष्य की पूजा अर्चना करने लगा। कुछ भी हो दानिय्येल का सबके सामने आदर हुआ। परमेश्वर का वचन कहता है, **"क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करुंगा" (शमु.2:3)**। यदि मैं और आप अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर का आदर करें तो परमेश्वर हमारा भी आदर सम्मान करेगा।

"फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलने वाला है, इसलिये तू यह भेद प्रकट कर पाया" (2:47)। इस घटना से नबुकदनेस्सर राजा को यह समझ में आया कि संसार में एक ही परमेश्वर है। याने इस घटना से नबुकदनेस्सर राजा ने यह मान लिया कि दानिय्येल का परमेश्वर सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलने वाला है। वह इस घटना से निरुत्तर हो गया। पर यह केवल एक दिमागी प्रभाव रहा। खैर राजा ने दानिय्येल का पद बड़ा किया याने उसकी

पदोन्नति की गयी और इतना ही नहीं उसको बड़े बड़े दान और इनाम दिये गये। यह पदोन्नति के प्रमाण के रूप में घोषणा की गयी कि वह बाबुल के सारे प्रान्त पर हाकिम बना रहेगा। एक और बात राजा ने कहा कि वह बाबुल के तमाम पण्डितों के मुख्य प्रधान बने रहेंगे। पण्डितों की अगुवाई करना और उन्हें मार्गदर्शन करना भी दानिय्येल का काम हो गया (2:4-8)।

याद रखिये जब हम हमारी उन विपरीत और संकटमय परिस्थितियों में भी परमेश्वर को महिमा देने की कोशिश करते हैं, तो परमेश्वर हमारी भी फिक्र करता है। इस संसार के जीवन और सेवकाई में रहकर हम जितना ज्यादा परमेश्वर को ऊंचा करेंगे उतना अधिक परमेश्वर हमें भी पदोन्नति एवं ऊंचाई प्रदान करेंगे। इस कारण मेरा आप से निवेदन है कि हमारे जीवन और सेवकाई के द्वारा हम हमारे परमेश्वर को सदा ऊंचा करें, भले ही हम बाबुल की अवस्था में क्यों न पाए जाएं।

साथियों के लिये सिफारिश

एक और महत्वपूर्ण कार्य दानिय्येल ने इस अध्याय में किया और वह उसके अन्तिम पद में लिखा गया है। **"तब दानिय्येल के विनती करने से राजा ने शद्रक, मेशक, और अबेदनेगो को बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त कर दिया। परन्तु दानिय्येल आप ही राजा के दरबार में रहा करता था" (2:49)।** स्वप्न के अर्थ का प्रकट किया जाना चारों व्यक्तियों की प्रार्थना से हुआ है। प्रार्थना करने के दौरान रहस्य को परमेश्वर ने दानिय्येल पर प्रकट किया, पर इनाम सब लोगों को मिलना चाहिये। प्रार्थना में बड़ी शक्ति है। उन्होंने प्रार्थना की और समस्या का समाधान मिल गया। समस्या का समाधान स्वप्न के अर्थ के रूप में प्रकट हुआ और दानिय्येल ने उसे राजा को बता दिया तो दानिय्येल को प्रतिफल और पदोन्नति मिल गयी। पर दानिय्येल जानता था कि इस बड़े यत्न में उसके सहयोगी शद्रक, मेशक, और अबेदनेगो भी शामिल थे।

लेकिन यह रहस्य राजा को नहीं मालूम था। सो यह दानिय्येल का कर्त्तव्य था कि राजा के समक्ष अपने उन सहयोगियों को भी प्रस्तुत करें। दानिय्येल इस शुभ कार्य में विमुख नहीं रहा। दानिय्येल के कहने से उन तीनों भाइयों की भी पदोन्नति हो गयी।

कई बार हम परमेश्वर को ऊंचा करते हैं। परमेश्वर को महिमा देते हैं और उस कारण परमेश्वर हमें भी उन्नति की शिखर की ओर ऊंचा उठाता है। पर हम हमारे जीवन में इस बात से वंचित रह जाते हैं, कि हम अपने सहयोगियों को बराबरी पर या समान सम्मान की ओर उठाएं। हम चाहते हैं कि हम ही एकदम ऊपर रहें। लेकिन दानिय्येल इस प्रकार का एक स्वार्थी प्रभु का सेवक नहीं था। यह विचार हमारे मन में कभी न रहे कि हम कार में चलें और हमारे सहयोगी पैदल चलें । क्या आपके अन्दर दानिय्येल की आत्मा है?

अध्याय–3

दानिय्येल के भाई संकट में, नबुकदनेस्सर राजा और सोने की मूर्ति

तीसरे अध्याय का वर्णन दूसरे अध्याय के अन्तिम भागों के वर्णन से बिलकुल भिन्न एवं विपरीत है। दूसरे अध्याय में राजा ने दानिय्येल के परेमश्वर को, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को ईश्वरों का ईश्वर और राजाओं का राजा माना। पर यहां सब कुछ भूल कर राजा कुछ और कर रहा है। एक मूर्ति बनाने और उसकी आराधना करने के लिये लोगों को मजबूर कर रहा है। यह दूसरे अध्याय की घटना के काफी दिन बाद हो सकता है। याने राजा यरूशलेम नगर की ओर फिर से आक्रमण के उद्देश्य से गया और यरूशलेम नगर को पूरी तौर से आग द्वारा भस्म कर दिया। अब यह निश्चित हो गया है कि वह सारे संसार के राज्यों पर सर्वाधिकारी एवं शासनकर्ता बन गया है।

इस प्रकार कई वर्ष बीत गये तो नबुकदनेस्सर राजा का, इस्राएल के परमेश्वर के प्रति जो आदर और सम्मान था वह खत्म हो गया। लेकिन आज भी वह उस मूर्ति का स्वप्न याद कर रहा है जिस के सोने का सिर वह स्वयं है। वह अपने राज्य को विशाल रूप में देख कर जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार के लोग हैं, उन्हें एक एकता में लाने का प्रयास कर रहा है। उसके लिये कोई न कोई एक ऐसा साधन चाहिये जिसके अधीन सबको लाकर खड़ा करे। जैसा कि मुकुट ब्रिटेन के राष्ट्रमण्डल (Common Wealth) क

चिन्ह था। रोमी साम्राज्य के शासन काल में सारे संसार के लोगों के लिये आराधना का विषय कैसर था। वे स्वयं ईश्वर के स्थान को अदा करते थे।

इसी प्रकार नबूकदनेस्सर राजा इस मूर्ति के निर्माण करने के द्वारा उसके साम्राज्य के सब प्रकार के लोगों को एकता के सूत्र में बांधना चाहता है। उसके लिये उसने इस मूर्ति का निर्माण कराया। यह आवश्यक नहीं कि राजा ने जो मूर्ति बनवाई वह पूर्ण रूप से सोने की हो। वह पत्थर काठ या भूसे और मिट्टी के हो सकते हैं जो कि बाहर से सोने से मढ़ा हो। बाहर से देखने में पूरी–पूरी सोने की मूर्ति दिखाई देती थी पर अन्दर से ऐसा होना ज़रूरी नहीं। जब वह बनकर तैयार हुआ तो उसका रूप देखने में भयानक था। जो कुछ नबूकदनेस्सर ने किया वह सब बहुत ही बड़ी मात्रा में था। जैसा कि झूलेदार बगीचा, बाबुल शहर के बाहर वाली शहरपनाह, जिसकी तुलना किसी भी चीज़ के साथ नहीं की जा सकती थी।

मूर्ति की लम्बाई साठ हाथ (लगभग 90 फुट, स्टैंड के साथ) और उसकी चौड़ाई छः हाथ थी। उसका रूप देखने से ही लोगों को गिरकर दण्डवत् करने की भावना या विचार उत्पन्न हो जाएं। वैसे शुरू से ही मानव अपने से बड़े और डरावनी वस्तुओं की आराधना करते चले आएं। सो इस भयंकर रूप को देखकर और राजा के बलपूर्वक एवं क्रूरतम आदेश के कारण लोगों ने मूर्ति के आगे दण्डवत करने का विचार किया। नबूकदनेस्सर के मन में एक निश्चित भावना है कि उसने दुनियां के सब राष्ट्रों पर विजय प्राप्त कर ली है और उन सब राष्ट्रों के लोगों को गुलाम बनाकर बाबुल में लाया है।

उन सबका अलग–अलग धर्म एवं आराधना की विधि है। पर इस कार्य के द्वारा वह सब लोगों को एक झण्डे के नीचे लाना चाहता है। दूरा नामक मैदान में इस बड़ी आराधना को वह राजनैतिक बना रहा है। दूसरे शब्दों में उसका उद्देश्य एक राजकीय धर्म (State Religion) बनाना था।

लड़ाईयां पूर्ण कर जयवंत स्वदेश लौट आए नबुकदनेस्सर ने इस मूर्ति का निर्माण किया। इसके पीछे एक विशेष बात के होने का विचार है अर्थात् यह उस स्वप्न में देखी गई मूर्ति की यादगारी में बनायी गयी है।

इसके संबंध में दानिय्येल ने कहा, **"वह सोने का सिर तू ही है"** (2:3)। या यह मूर्ति नबुकदनेस्सर राजा का इष्ट देवता मेरोड़क की हो सकती है जो लड़ाईयों का प्रभु या देवता कहलाता है। सारे संसार के राष्ट्रों के साथ लड़ाई में पूर्ण विजय पाने की खुशी में अपने इष्ट देवता की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने का विचार भी सही हो सकता है। यह मूर्ति उस अन्तिम समय में विरुद्ध मसीह द्वारा बनवाई जाने वाली मूर्ति की ओर एक संकेत है (प्र.वा.13:14,15)। नबुकदनेस्सर आने वाले विरुद्ध मसीह के लिये एक संकेत या छाया है।

मूर्ति और मूर्तिपूजक

(3:2-7)

नबुकदनेस्सर राजा के द्वारा खड़ी कराई गयी मूर्ति की पूजा के लिये साम्राज्य के सभी अधिकारियों को निमंत्रण दिया गया। अधिपतियों, हाकिमों, गवर्नरों, जजों, खजांचियों, न्यायियों, शास्त्रियों आदि प्रांत-प्रांत के सब अधिकारियों को बुलावा भेजा कि वे उस मूरत की प्रतिष्ठा में आएं जो राजा ने खडी कराई थी। राजा के निमंत्रण के आधार पर वे सब आराधना के लिये जमा हुए। इस पूजा के प्रारंभ में यह नियम था कि ढिंढोरिये ऊंचे शब्द से पुकार कर कहे, देश-देश और जाति-जाति के लोगों एवं भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले, जब नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो तो उसी समय गिरकर नबुकदनेस्सर राजा की खड़ी कराई हुई मूर्ति को दण्डवत करें। इस आदेश का पालन कर मूर्ति के सामने गिरकर दंडवत न करे तो आग में डाले जाने का भी आदेश दिया गया ।

आराधना और इस्राएली जवान

(3:8-23)

सब प्रकार के बाजे बजाए गये और आराधना के लिये आव्हान भी किया गया। लेकिन इस्राएली जवान शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने इस आराधना में शामिल होने से इंकार किया। उन्हें मालूम था कि यह एक मूर्ति मात्र है और उसके सामने गिरकर दण्डवत करना जीवित परमेश्वर का अपमानित करना है। इन जवानों के पास एक लिखित व्यवस्था थी। मूसा के द्वारा सीनै पहाड़ से दी गयी व्यवस्था। उस व्यवस्था में जो 10 आज्ञा है

उसके पहली और दूसरी आज्ञा में ही मूर्ति पूजा का बहिष्कार किये जाने का आदेश है। तो इस बड़ी आराधना में नबुकदनेस्सर एक तरफ खड़े होकर आदेश दे रहा था कि सब लोग गिरकर मूर्ति को दण्डवत करें। लेकिन दूसरी तरफ इन ईश्वर भक्तों ने मानो देखा मूसा उनके सामने खड़ा है और कहता है नहीं, मूर्ति को दण्डवत, कभी नहीं करना। वे एक धर्मसंकट में पड़ गये। यदि गिरकर दण्डवत नहीं किया तो धधकते हुए भट्टे के बीच में डाल दिए जायेंगे। मूसा और व्यवस्था की बात न माने तो परमेश्वर की ओर से दण्ड मिलेगा। उन्होंने अपने मन में दृढ़ संकल्प कर लिया कि भले कुछ भी हो जाए हमें मूर्ति के सामने दण्डवत नहीं करना है।

इतने में कुछ कसदी पुरुषों ने जो कपटी थे, राजा के पास जाकर उन यहूदी जवानों की चुगली खाई। उन्होंने राजा की प्रशंसा की और कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे और, कहा आपने आदेश दिया कि सब प्रकार के बाजे बजाए जाएं और सुनकर सब लोग गिरकर आपके द्वारा खड़ी कराई गई मूर्ति के सामने दण्डवत करें। जो कोई गिरकर दण्डवत न करे उन्हें आग के भट्टे के बीच में डाल दिया जाए। लेकिन शद्रक, मेशक, और अबेदनगो नाम के तीन यहूदी पुरुष जिन्हें तूने बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त किया है, उन पुरुषों ने तेरी आज्ञा की कुछ चिंता नहीं की और वे तेरे देवता की उपासना नहीं कर रहे हैं न उस मूर्ति को दण्डवत कर रहे हैं।

इस आराधना की दो बातें

1. जितने बाजे बजाएं जाते हैं और सुन्दर गीत गाए जाते हैं वह सब सही आराधना नहीं है। जिस प्रकार मूर्ति अन्दर से खोखली है ठीक इसी प्रकार इस आराधना में भी कोई सच्चाई नहीं है। केवल एक शोरगुल एवं दिखावा मात्र है। यह शद्रक, मेशक और अबेदनगो अच्छी तरह जानते थे।

2. दूसरी बात आराधना में शामिल होने वाले कुछ लोगों की निगाह इन परमेश्वर के भक्तों के ऊपर है। जब वे लोग दण्डवत नहीं कर रहे थे तो वे जलन और इर्ष्या से भर गये। वे चाहते थे कि किसी न किसी प्रकार वे नाश किये जाएं। बाप रे ! क्या मनोवृत्ति है। आज भी आराधनाओं में लोग शामिल तो होते हैं। पर कितने लोग शुद्ध मन और शुद्ध विवेक के साथ परमेश्वर की

आराधना करते है। आराधना कर तो रहे हैं पर आराधना करने वाले अन्य लोगों को आघात पहुंचाने का प्रयास करते रहते हैं। सच्चे परमेश्वर की आराधना सच्चाई और आत्मा से करने वालों को सदा प्रतिकूलताओं और मुखालिफतों का सामना करना पड़ता है। हाबिल ने एक ही आराधना की और मार डाला गया। एलिय्याह के दिनों में भी आराधना के बारे में सवाल आया कि बाल की पूजा करें या जीवित परमेश्वर यहोवा की आराधना करें। जीवित परमेश्वर की आराधना करने वाले एलिय्याह को मृत्यु की चुनौती का सामना करना पड़ा। यहां भी वही बात देखने को मिलती है। राजा को बात मालूम हुई तो वह रोष और जलजलाहट से भर गया । शद्रक, मेशक और अबेदनगो राजा के सामने हाज़िर किये गये। उनका राजा के साथ आमना सामना हुआ। उस समय नबुकदनेस्सर ने उनसे पूछा, हे! शद्रक, मेशक और अबेदनगो तुम लोग जो मेरे देवता को और मेरी खड़ी कराई गई सोने की मूरत को दण्डवत् नहीं करते हो, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो? (3:13,14)।

राजा ने उन्हें एक और अवसर मूरत को दण्डवत् के लिये दिया (3:15)। तमाम् प्रकार के बाजे बजाए गए। सारे लोगों ने गिरकर मूर्ति के सामने दण्डवत किया। पर शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने उस समय भी दण्डवत नहीं की। तब राजा बहुत ही क्रोधित हो गये और कहा आग 7 गुना बढ़ा दी जाए और शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बांध कर उस धधकते हुए भट्टे के अन्दर डाल दिया जाए (3:19–27)। सो तुरन्त उन तीनों को 7 गुना बढ़ाई गई आग के धधकते हुए भट्टे के अन्दर डाल दिया गया। यह भट्टा एक कमरे के समान बना हुआ था जिसमें एक ही दरवाजा था। यह भट्टा शायद 6,7 फुट गहरा हो सकता है वह भट्टे का दरवाज़ा बन्द किया जाए तो उसके अन्दर से बचना असंभव था। लेकिन ऊपर महल के दूसरी तीसरी मंजिल से भट्टे की भीतरी हालात देख सकते थे। भट्टे के चारों तरफ की दीवार इतनी ऊंची थी कि उस के अन्दर से कूदकर बचना असंभव था। लेकिन बचाने वाला किसी भी संकटमय परिस्थिति में आकर आपकी सहायता कर सकता और आपको बचा सकता है।

यह सब कुछ जानते हुए भी कि इस परिस्थिति से वे बच नहीं सकते, उन्होनें मूर्ति को दण्डवत करने से इनकार किया। राजा उन से पूछता

है, **"नबुकदनेस्सर ने उनसे पूछा, हे! शद्रक, मेशक, और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत नहीं करते, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो?" (3:14,15)**। तो राजा ने उन्हें एक और अवसर देने का विचार किया और कहने लगा कि जब तमाम् प्रकार के बाजे बजाए जाएं और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत करो, तो बचोगे और यदि तुम दण्डवत न करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाले जायेंगे फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?

नबुकदनेस्सर राजा पहले से क्रोधित थे और अब वह घमण्ड से भी भर गया। एक महान परमेश्वर, जीवित और चमत्कारिक कार्य करने वाले के बारे में उसको ज्ञान था। कुछ ही समय पहले उसने अपने मुंह से इस बात का अंगीकार किया था कि दानिय्येल का परमेश्वर ही सच्चा परमेश्वर है (2:46,47)। लेकिन उस क्रोध और जलजलाहट में वह शायद यह भूल गया हो। अक्सर मनुष्य परमेश्वर की महानता को भूल जाते हैं। नबुकदनेस्सर पूछता है कि "मेरे हाथ से छुड़ाने वाला कौन देवता है"? इस प्रकार के परिहास और धमकी से जीवित परमेश्वर के सेवक लोग डरे नहीं। उन्होंने राजा को अपनी निडरता का परिचय दिया और कहा कि, "हे! नबुकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। हमारा परमेश्वर, जिस की हम उपासना करते हैं वह हमें उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है। वरन हे! राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। परन्तु यदि नहीं, तो हे! राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई गई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे" (3:16-18)।

यह क्या दिलेरी भरा प्रत्युत्तर है। किसी ने यूं कहा, "जो परमेश्वर से डरता है, उसको और किसी से डरने की आवश्यकता नहीं"। यह सच बात है यदि आप परमेश्वर से सच्चे दिल से डरने वाले हैं तो आपको किसी भी व्यक्ति से या शक्ति से डरने की आवश्यकता नहीं है। याद रखिये, निर्णय का बड़ा असर है। यदि कोई व्यक्ति किसी भी बात के लिये एक ठोस निर्णय ले ले तो फिर वह व्यक्ति अटल रहेगा। याद रखिये ऐसे ठोस और पक्का निर्णय लेने वालों की सहायता के लिये स्वर्ग को झुका कर परमेश्वर उतर

आता है। इस दिलेरी के उत्तर को सुनकर राजा झुंझला उठा, और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर बदल गया। और उसने आज्ञा दी कि भट्टे को सात गुणा अधिक धधका दे। फिर अपनी सेना में के कई एक बलवान पुरुषों को उसने आज्ञा दी कि उन्हें बांध कर धधकते हुए भट्टे में डाल दो (3:19–29)।

राजा का उद्देश्य था कि वे किसी भी प्रकार से बच न निकले। बहुत कड़ी सुरक्षा एवं बल प्रयोग के साथ उन्हें बांध कर आग में डलवा दिया। लेकिन उन्हें कोई हानि नहीं पहुंची उन जवानों को उठाने वाले सेना के जवान भट्टे का द्वार खोलते ही उसी से निकली आग की ज्वाला से जल कर मर गये (3:22)। लेकिन आग के अन्दर फेंके गये परमेश्वर के तीनों भक्तों को कोई हानि नहीं हुई। केवल इतना हुआ कि उनको बांधी हुई रस्सी जल गयी। याद रखिये बाबुल की आग बाबुल के लोगों को और बाबुल की रस्सी को ही जला सकती है। परमेश्वर के लोगों को यह आग कुछ नहीं कर सकती है। परमेश्वर ने अपने लोगों की सुरक्षा की प्रतिज्ञा दी है; **"जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। क्योंकि, मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूं। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं" (यशा. 42:2,3–5)।**

परमेश्वर अपने इस वचन के मुताबिक अपने लोगों को बचाने हेतु स्वर्ग छोड़कर उतर आया। उनके साथ उस आग में उतर आए। आग में अपने भक्तों के साथ घूम रहे हैं और उनसे बातें कर रहे हैं एवं उनको आग जैसे दुख में संगति दे रहे हैं। परमेश्वर वह नहीं है जो किसी स्थान में चुपचाप बैठा रहता हो परन्तु परमेश्वर वह है जो संकट के समय अति सहज से मिलने वाले सहायक के रूप में मेरी और आपकी सहायता करता हो। यह चौथा व्यक्ति कौन है? यह वही उद्धारकर्ता है जो त्रियेक परमेश्वर के त्रियेकता का दूसरा व्यक्तित्व अर्थात प्रभु यीशु मसीह। इस चौथे व्यक्ति का वर्णन उत्पत्ति की पुस्तक से आरंभ हुआ है सो प्रकाशितवाक्य तक मिलता है।

इस वर्णन में बताई गयी बात आने वाले भविष्य में परमेश्वर के लोग इस्राएलियों पर आने वाले भयंकर पीड़ा और सताव के लिये एक संकेत है।

अन्तिम समय में विरुद्ध मसीह के द्वारा इस्राएल पर आने वाले सताव के लिये एक इशारा है। आग सात गुणा बढ़ाने का मतलब है भारी क्लेश के अन्तिम 3 साल की अवधि में विरुद्ध मसीह द्वारा इस्राएलियों पर क्लेश को सर्वाधिक बढ़ाया जाना। यह सात गुणा अर्थात पूरी शक्ति के साथ प्रभु के लोगों को सताया जाना। पर याद रखिये उन का छुड़ाने वाला सिय्योन से उतर आयेगा और उन्हें सताव से और भारी क्लेश से बचायेगा (रोमि-11:26)।

वास्तव में परमेश्वर अपने भक्तों को बचाने वाला है। इस चमत्कार को देखकर राजा अपने महल की ऊपर वाली छत पर निरीक्षणार्थ खड़े थे। राजा चिल्लाकर अपने अधीनस्थ अधिकारियों से पूछता है कि तीन जन को ही डाले थे या कहीं गलती तो नहीं हुई? फिर ये चार कहां से हो गये? राजा को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। अधिकारियों ने कहा हमने तीन जन को ही डाले हैं। राजा पूछता है फिर यह चौथा व्यक्ति कौन है ? यह चौथा व्यक्ति सबके लिये एक सवाल और आश्चर्य का विषय बना। यहां वह अपने भक्तों को बचाने वाले के रूप में आग के अन्दर प्रकट हुआ है। इसका क्या उत्तर है? यह वह है जिस के बारे में राजा ने पूछा, **"मेरे हाथों से बचाने वाला देवता कौन है ?"**। आग के अन्दर से राजा और हाकिमों के सामने आनन्दित और हर्षित होकर बिना शब्दों से वे यह उत्तर दे रहे हैं कि यह वह देव है जो तेरे हाथ से और आग से बचाने वाला है। संकट में उतरकर आने वाला और बचाव का प्रबंध करने वाला है प्रभु यीशु मसीह। बचाने वाला केवल एक ही है, वह प्रभु यीशु मसीह के अलावा और कोई नहीं है। परमेश्वर के वचन में लिखा है कि, **"और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे, मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरित.4:12)**। क्या आपने इस चौथे व्यक्ति से मुलाकात की ? यदि नहीं तो आज ही उसको पुकारें और अपना उद्धारकर्ता और स्वामी स्वीकार करें।

राजा अब तक क्रोध से झुंझला रहा था। उसकी आवाज़ बुलन्द थी। एक घमण्ड भरी आवाज़—मेरे हाथ से छुड़ाने वाला देवता कौन? पर उसका चेहरा बदल गया। आवाज़ धीमी पड़ गयी। घमण्ड की उंची छत से शीघ्र उतर कर भट्टे के पास दौड़ कर आ गये। वह दृश्य देख कर राजा को ऐसा लगा कि धरती उस के पांव के नीचे से खसक गयी हो। वह भट्टे के पास

आकर पुकार कर कहा गया वचन सुनने के योग्य था। मैं वह वचन बाइबल से उसी प्रकार उतार देता हूँ, **"धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर, जिसने अपना दूत भेजकर अपने दासों को इसलिये बचाया, क्योंकि इन्होंने राजा की आज्ञा न मानकर, उसी पर भरोसा रखा, और यह सोच कर अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़ किसी देवता की उपासना व दण्डवत् न करेंगे" (3:28)।**

राजा दौड़ कर भट्टे के पास आए और शीघ्र ही भट्टे का द्वार खोलने का आदेश दिया होगा। उसके बाद वह कहने लगा हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे! परमेश्वर के दासों निकल कर यहां आओ। यह सुनकर शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आये। और अधिपति हाकिम गवर्नर और राजा के मन्त्रियों ने देखा तो उन लोगों को कोई हानि नहीं हुई थी। उनके बाल भी नहीं झुलसा, न उनके मोजे बिगड़े और न उनमें जलने की कुछ गंध पाई गयी। जब परमेश्वर किसी को बचाते हैं तो पूरी तौर से बचाते हैं। यहां एक और बात ध्यान देने योग्य है वह यह है कि राजा ने आश्चर्यचकित होकर तीनों भाईयों को आग से नाम लेकर बाहर बुलाया पर वह चौथे व्यक्ति को क्यों नहीं पुकारा। आज भी हम आश्चर्यकर्म को आलिंगन करना पसन्द करते हैं पर चमत्कार और आश्चर्यकर्म करने वाले महान प्रभु यीशु मसीह को और जीवित परमेश्वर को जो तीसरा व्यक्ति है, हम स्वीकार नहीं करना चाहते।

इस आश्चर्यकर्म से आतंकित होकर राजा ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर के बारे में एक घोषणा की। बल्कि एक आदेश दिया। राजा ने आज्ञा दी कि देश देश और जाति जाति के लोग, भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की निन्दा न करें। यदि ऐसा करने का कोई साहस करेगा तो उसके टुकड़े टुकड़े किये जायेंगे और उनके घर घूरा बनाए जायेंगे। फिर सबके प्रतिनिधि के रुप में एक महत्वपूर्ण अंगीकार किया गया। क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके (3:29)। राजा का अंगीकार समस्त प्रजा के प्रतिनिधि के रुप में था। ऐसे कितने बार जीवित परमेश्वर के बारे में लोगों ने अंगीकार किया है, फिर भी लोग कैसे मूर्ति पूजा में फंसे हुए हैं, यह एक चिन्तन करने वाली बात है।

अन्त में इस अध्याय के अन्दर शद्रक, मेशक और अबेदनगो की पदोन्नति का वर्णन करके समाप्त किया गया है। आग में से निकल कर आए तो उन्हें एकदम पदोन्नति (Promotion) प्राप्त हो गयी। एक पदोन्नति उन्हें दूसरे अध्याय की घटना से प्राप्त हो चुकी थी। यह दूसरा मौका है। पहले अध्याय में अपने जीवन को नियमित रूप में परमेश्वर के लिये उसके वचनानुसार समर्पण करते हुए देखते हैं। परमेश्वर के लिये जो त्यागना था वह त्याग दिये। अपने जीवन को जोखिम में डाल कर समर्पित किया, तो परमेश्वर उन के लिये भी समर्पित हो गया। याद रखिये सच्चे दिल से परमेश्वर के वचन के मुताबिक जीवन बिताने वालों को परमेश्वर बचाता है। उनके खिलाफ तैयार की जाने वाली आग उन्हें भस्म नहीं कर सकेगी। उसमें वे ही जल जायेंगे जो उन्हें आग में डालने का प्रयास करते हैं। दूसरी बात परमेश्वर के लिये जीने वालों को परमेश्वर सदा उन्नति की शिखर की ओर ऊँचा उठाता है। उन्हें पदोन्नति देने वाला परमेश्वर है। कई लोग हैं जो दो पैसा देकर बड़ा दाता बनना चाहते हैं। वाह! भैया वाह! क्या आप जीवन में सुरक्षा और उन्नति पाना चाहते हैं? तो आप के जीवन में भी इन भाइयों के समान एक पहला अध्याय हो। एक प्रार्थना का जीवन हो। दिलेरी से परमेश्वर की गवाही देने वाले हो। तब प्रभु आशीष देगा।

अध्याय-4

दानिय्येल और वृक्ष के स्वप्न का अर्थ बताना

4:1,2,3:- इस अध्याय में नबुकदनेस्सर राजा के द्वारा देखे गये दूसरे स्वप्न का वर्णन है। इस से पहले कि वह उस स्वप्न का वर्णन करे, वह एक घोषणा करता है। यह घोषणा जीवित परमेश्वर के बारे में है। यह एक पत्र के रूप में तैयार किया गया है और उस के साम्राज्य के अधीन रहने वाले सभी देश–देश और जाति–जाति के लोगों और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले समस्त संसार के लोगों के लिये भेजे गये हैं। उस पत्र में वह अपनी व्यक्तिगत गवाही प्रस्तुत करता है। परमेश्वर के बारे में उसके अपने व्यक्तिगत अनुभव कहता है, **"मुझे यह अच्छा लगा, कि परमपधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं, उनको प्रकट करूं। उस के दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बड़े, और उसके चमत्कारों में क्या ही बड़ी शक्ति प्रकट होती है उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है (4:2,3)**। वह महान जीवित परमेश्वर का गुणानुवाद कर रहा है और परमेश्वर के राज्य की स्थिरता के बारे में बोल रहा है।

4:4-7 :- उसके पश्चात् वह अपने एक स्वप्न के बारे में वर्णन करता है।

यह स्वप्न उसको अपने आराम के समय में उसको दिया गया । मतलब सारे संसार को अपने अधीन कर लिया गया। कोई ऐसा देश नहीं जो उसके अधीन आना बाकी हो । लड़ाईयां खत्म हो गई। सब दूर उसको चैन और आराम था। वह अपने राज्य में और सिंहासन पर निश्चित बैठकर शासन कर सकते है। किसी प्रकार का डर और भय की आवश्यकता नहीं है। उस प्रकार शारीरिक और मानसिक शांति उसको प्राप्त हो गई। राज्य के शासन के बारे में जहां तक सवाल है कोई भय नहीं है। पिता के देहांत के पश्चात् शासन और सिंहासन के लिये कोई और दावेदार नहीं है। सब प्रकार से यह चैन की सांस लेने का समय था। उस माहौल में उसके आराम को विघ्न पहुँचाते हुए एक और स्वप्न। स्वप्न का अर्थ मालूम नहीं है। इस समय स्वप्न याद है पर उसका अर्थ मालूम करने का प्रयास करता है ।

यह स्वप्नों के क्रम में दूसरा स्वप्न है। पहला स्वप्न परमेश्वर के दास भविष्यवक्ता दानिय्येल के द्वारा अर्थ बताया गया था। दानिय्येल ने उसी समय समझाया कि यह मनुष्य की बुद्धि एवं शक्ति से संभव नहीं है परंतु यह परमेश्वर के द्वारा ही संभव है। परमेश्वर और परमेश्वर की महानता के बारे में खूब अच्छी तरह समझने के बाद भी पता नहीं नबूकदनेस्सर अपने में स्थिर नही पाया गया। इस स्वप्न की व्याख्या के लिये भी वह जादूगरों और ज्ञानियों को बुलाते हैं। दानिय्येल को ज्योतिषियों के प्रधान पुकारता है, उसका दिमाग अभी भी उसी बात में लगा हुआ है।

खैर, राजा ने सबसे पहले अपने तमाम पंडितों को उनके सामने हाज़िर किये जाने का आदेश दिया। सो ज्योतिषि, तंत्रि, करादि और होनहार बताने वाले स्वप्न को बताने वाले भीतर आये और राजा ने उनको अपना स्वप्न बताया। परन्तु वे उसका फल न बता सके। आपको शायद याद है कि दूसरे अध्याय में राजा ने स्वप्न देखा पर स्वप्न भूल गया। उस समय राजा का आदेश यह था कि स्वप्न एवं अर्थ दोनों बताएं। उस समय ज्योतिषियों ने कहा था कि स्वप्न हमें बतायें, हम अर्थ बतायेंगे। लेकिन इस समय राजा स्वप्न नहीं भूला। स्वप्न तो साफ–साफ वर्णन कर सुनाया। इस समय वे स्वप्न मालूम करते हैं। राजा ने स्वप्न पूर्ण रूप में बताया। अब वे क्यों नहीं बता सके स्वप्न का अर्थ। तो हम इस बात को अच्छी तरह समझ सकते हैं कि यह साधारण बुद्धि और ज्ञान के द्वारा किया जाना संभव नहीं है। अंत में

दानिय्येल आ जाता है। बहुत पहले ही दानिय्येल ने राजा को बता दिया था कि स्वप्न का अर्थ बताना मनुष्यों का काम नहीं है। यह परमेश्वर का विभाग है। अर्थात् इस पृथ्वी पर रहकर एक परमेश्वर का जन आत्मलोक के साथ सम्पर्क साधने से यह योग्यता प्राप्त होती है अर्थात् दानिय्येल का संबन्ध सीधे उस आत्मलोक से जीवित परमेश्वर के साथ था। याद रखिये परमेश्वर को जानने का मतलब है उस आत्मलोक से संबन्ध साधना। जब आपका संबन्ध उस आत्मलोक से हो जाता है तो आपके लिये गूढ़ एवं गुप्त बातें आवश्कतानुसार प्रकट की जाती हैं।

4:8-12 :- राजा स्वयं कहता है कि दानिय्येल में पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है। राजा अभी भी एक से अधिक ईश्वर होने के विचार में है। कई लोग हैं, कितने भी बार जीवित परमेश्वर के द्वारा आश्चर्यकर्म और चमत्कार देखने पर भी कुछ समय बाद वे पुरानी मान्यताओं की ओर वापस जाते हैं। इससे पहले दो बार यह पक्का मालूम किया और घोषणा भी की कि दानिय्येल, शद्रक, मेशेक और अबेदनगो के परमेश्वर को छोड़ कोई परमेश्वर नहीं है। फिर भी मालूम नहीं कि उस पुरानी बात को कोई याद नहीं कर सके। आज भी कई लोग हैं जो यीशु मसीह के द्वारा कई चंगाई और चमत्कार पाने के पश्चात् भी यीशु मसीह को मानने के लिये तैयार नहीं होते। वे ईश्वरों के पीछे चले जाते हैं।

यहां लिखा है अन्त में नबूकदनेस्सर के देवता के नाम से पुकारे जाने वाले बेलतशस्सर अर्थात् दानिय्येल राजा के सामने बुलाया गया (दानि.4:8)। जब किसी से नहीं बना तो दानिय्येल की याद आ गई। मनुष्य को अपनी समस्या के निवारण और समाधान के लिये सब दूर कोशिश करने पर भी कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि वे गलत स्थान में गलत तरीके से कोशिश करते हैं। जीवित परमेश्वर यीशु मसीह के अलावा कोई मानवजाति की समस्या का समाधान नहीं कर सकते हैं। नया नियम में एक स्त्री का वर्णन है जिसको 12 साल तक लहु बहने की बीमारी थी। उसने अपनी सारी संपत्ति वैद्यो को दें दी और इलाज करवाया। रुपया और सारी संपत्ति खत्म हो गई, पर कोई फायदा नहीं हुआ। रुपया और सारी संपत्ति खत्म हो गई और बीमारी अभी भी शरीर में है। अन्त में वह स्त्री यीशु मसीह के पास आई और वस्त्र का दामन छू लिया और वह तुरन्त चंगी हो गई (मरकुस

5:25–34) । यदि वह 12 साल पहले यीशु के पास आयी होती तो उसका स्वास्थ्य ठीक हो जाता और संपत्ति भी सही सलामत रहती।

अन्त में दानिय्येल राजा के दरबार में बुलाया गया। राजा ने अपना स्वप्न दानिय्येल को बताया। इससे पहले कि वह स्वप्न दानिय्येल को बताए, वह उसके योग्यता की प्रशंसा करता है। वह परमेश्वर के कारण है, यह भी अंगीकार किया। परन्तु उसने सबसे पहले दानिय्येल को क्यों नहीं बुलाया? शायद दानिय्येल के परमेश्वर की महिमा और महानता उसकी आखों से ओझल हो गई होगी। वह अपने तरीके से अपने ईश्वरों के नाम से काम कराना चाहता है लेकिन वह इस समय पूरी तौर से हार गया और दानिय्येल को आना ही पड़ा (4:8,9)।

राजा दानिय्येल को स्वप्न का वर्णन कर रहा है। 4:10–12 में लिखा है : **''जो दर्शन मैंने पलंग पर पाया वह यह है : मैंने देखा कि पृथ्वी के बीचों बीच एक वृक्ष लगा है; उस की ऊंचाई बहुत बड़ी है वह वृक्ष बड़ा होकर दृढ़ हो गया, और उसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुँची, और वह सारी पृथ्वी की छोर तक दिखाई पड़ता था। उसके पत्ते सुन्दर और उसमें बहुत फल था, यहां तक कि उसमें सभी के लिये भोजन था। उस के नीचे मैदान के सब पशुओं को छाया मिलती थी, और उसकी डालियों में आकाश की सब चिड़ियां बसेरा करती थी, और सब प्राणी उस से आहार पाते थे''।**

दानिय्येल इस स्वप्न की व्याख्या करते समय पेड़ को नबूकदनेस्सर और बाबुल साम्राज्य के साथ तुलना करता है। इसका वर्णन आप स्वयं 4:19–26 तक पढ़ सकते हैं। वहां लिखा है कि स्वप्न का वर्णन सुनकर दानिय्येल घबरा गया। स्वप्न नबूकदनेस्सर के बारे में था पर दानिय्येल घबराता है। लिखा है: **''तब दानिय्येल जिसका नाम बेलतशस्सर भी था, घड़ी भर घबराता रहा, और सोचते–सोचते व्याकुल हो गया''** (4:19)। इस घबराहट का कारण स्वप्न के फल की गंभीरता है। राजा ने दानिय्येल को तसल्ली दी और कहा : **''हे बेलतशस्सर इस स्वप्न से, व इसके फल से तू व्याकुल मत हो'' (4:19)**। स्वप्न के अर्थ को समझने के कारण दानिय्येल अति व्याकुल हो गया और कहने लगा: **''हे मेरे प्रभु,**

यह स्वप्न तेरे बैरियों पर, और इस काफल तेरे द्रोहियों पर फले" (4:19)। सो स्वप्न का अर्थ सीधे राजा पर लागू हो रहा था। इस कारण उस के अर्थ को राजा पर प्रकट करने में हिचकिचा रहा था।

वैसे पेड़ बाईबल में किसी राष्ट्र या शासनकर्ता को संकेत करके बताया गया है। "**बड़ा पेड़**" बाईबल के अन्दर बड़े शक्तिशाली और पराक्रमी राजा और शासनकर्ता का संकेत है। अश्शूर साम्राज्य की तुलना लबानोन के देवदार के साथ की गयी है (यहेज.31:3)। यीशु मसीह के दृष्टान्त में, यीशु मसीह राई के दाने का दृष्टान्त देता है। किसी ने उस दाने को खेत में बोया और वह उगा, बड़ा हुआ और बहुत बड़ा पेड़ हो गया और आकाश के सब पक्षी उसमें बसेरा करते हैं। (मत्ती.13:31,32) राई का पौधा जो उगा और बड़ा हुआ वह स्वभाव के विरुद्व बढ़ता गया। राई का पौधा कभी बड़ा पेड़ नहीं बनता। पर यीशु मसीह ने कहा वह इतना बड़ा पेड़ बन जायेगा कि उसकी डालियों में आकाश के पक्षी आकर बसेरा करेंगे। यहां यह पेड़ मसीही कलीसिया का संकेत था। लेकिन इसमें जिस प्रकार कई डालियां हैं वैसे कलीसिया कई शाखाओं में विभाजित होंगे। उसकी बढ़ती इस बात को दर्शाती है कि कलीसिया संसार की सबसे बड़ी संस्था बन जायेगी।

कलीसिया का सारे संसार में फैलने और बढ़ने का विचार अच्छा है लेकिन आज कई शाखाएं हो गयीं। कितने–कितने नामों से कलीसिया पाई जाती है। उसके अलावा भी एक कलीसिया में फूट हो जाती है और एक झुण्ड वहां से निकल कर दूसरे स्थान में आराधना शुरू कर देती है। कुछ विभाग ऐसे भी हैं जो अलग होने के पश्चात् भी वही नाम से ही पहचाने जाने को घमण्ड की बात समझते हैं। आकाश के पक्षी अशुद्धता और अपवित्रता का संकेत है। अर्थात् संसार के सारे राष्ट्रों और देशों में फैलने के साथ–साथ सब प्रकार के लोग बिना मन फिराए कलीसिया की ओर आकर्षित हो गये और कलीसिया में प्रवेश प्राप्त कर लिया। मसीहियत एक सांसारिक संस्था के रूप में शक्तिशाली एवं प्रभावशाली हो गयी और इसकी असाधारण बढ़ती ने संसार पर प्रभाव डाला पर यह एक आत्मिक संस्था बनने की बजाय अनात्मिक एवं शारीरिक रह गयी। यह आज की कलीसिया की वास्तविक स्थिति है।

लेकिन इस पेड़ का जहां तक सवाल है, यह नबूकदनेस्सर का चित्र है। वह संसार में अधिक शक्तिशाली हो गया। उसका नाम, उसकी कीर्ति सारे संसार में फैल गई। उसका साम्राज्य सारे संसार की ओर फैल गया। पेड़ की ऊंचाई और व्याप्ति नबूकदनेस्सर की महिमा, प्रताप और शासन का संकेत है। पेड़ की शाखाएं शासन में मदद करने वाले अन्य राजाओं को और पत्ते बाबुल साम्राज्य के सैन्य शक्ति और पेड़ का फल उस साम्राज्य के आय और व्यय को दर्शाता है। आकाश के सारे पक्षी बसेरा करने का और सब जानवरों को उसके नीचे छाया मिलने का और सब प्राणियों को आहार मिलने का (पद.12) यह तात्पर्य है कि यह बाबुल साम्राज्य सब प्रकार की बुराईयों का स्थान बन गया है। सब प्रकार की अपवित्रता और पशु समान स्वभाव का केन्द्र स्थान बन जाना। यीशु मसीह का यह कथन कि **"जहां लोथ वहां गिद्ध"**– यहां सार्थक है ।

अभी बाबुल शहर संसार में नहीं पाया जाता, लेकिन परमेश्वर के वचन के मुताबिक यह शहर फिर से बनाया जायेगा। उस नगर की ओर सारे संसार के व्यापारी आकर्षित होंगे। वहां सब प्रकार के पाप और पाप करने की सुविधाएं प्रदान की जायेंगी। पर वह नगर शीघ्र नाश किया जायेगा। वचन में लिखा है: **"उसने ऊंचे शब्द से पुकार कर कहा, कि गिर गया बड़ा बाबुल गिर गया है : और दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा (सब जानवर, आकाश के सब पक्षी) हो गये (प्र.वा.18:2)**। यह बाबुल आने वाले और भविष्य में बनाए जाने वाले बाबुल के संबन्ध में भविष्यवाणी है। आज बाबुल ईराक है। ईराक में यह शहर बाबुल के नाम से ही बनना आरंम्भ हो चुका है विस्तृत जानकारी के लिये लेखक के द्वारा लिखित **"प्रकाशितवाक्य का अध्ययन"** नाम पुस्तक पढ़िये। आज सददाम हुसैन अपने आप को नबूकदनेस्सर का पोता मानता है और बाबुल शहर को उस पूरे पूर्व महिमा और महानता के साथ बनाने का दावा कर रहा है और काम आरंम्भ कर चुका है।

आगे दानिय्येल स्वप्न का अर्थ समझाते हुए कहता है, जिस वृक्ष को तूने देखा, जो बड़ा और दृढ़ हो गया, और जिसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुँची और दृढ़ हो गयी, और जिसकी ऊंचाई स्वर्ग तक पहुँची और जो पृथ्वी के सिरे तक दिखाई देता था; जिसके पत्ते सुन्दर और फल बहुत थे, और जिसमें

सभी के लिये भोजन था, जिसके नीचे मैदान के सब पशु रहते थे, और जिसकी डालियों में आकाश की चिड़ियां बसेरा करती थीं, हे राजा, वह तू ही है। तू महान और सामर्थी हो गया। तेरी महिमा बड़ी और स्वर्ग तक पहुँच गई, और तेरी प्रभुता पृथ्वी के छोर तक फैली (दानि.4:20–22)। सो दानिय्येल की व्याख्या के अनुसार यह पेड़ बाबुल का साम्राज्य और स्वयं नबूकदनेस्सर को दर्शाता है। वह साम्राज्य में स्थिर हो गया उसका साम्राज्य और अधिकार पृथ्वी के सिरे तक पहुंच गया। यह उसके राज्य की व्याप्ति और शीघ्र विकास का वर्णन है – आकाश के पक्षी और मैदान के पशु इस बड़े पेड़ की शरण में आ गये। यह तमाम दुनिया की अपवित्रता को दर्शाता है। मूर्ति पूजा और तमाम अन्धविश्वास का कार्य बाबुल में उत्पन्न होकर सारे संसार की ओर फैला है।

लेकिन आकाश के सब पक्षी और मैदान के तमाम् पशु, सारे संसार से बाबुल में लाये गये लोगों को दर्शाता है। समस्त राष्ट्र के लोगों को वहां गुलाम बनाकर लाये गये। यह बड़ा पेड़ इस दृष्टिकोण से नबूकदनेस्सर और बाबुल साम्राज्य का संकेत है जो समस्त संसार में फैला हुआ है। लेकिन राजा ने सोते–सोते स्वप्न में यह भी देखा कि यह पेड़ बहुतों के आशा और आशीष के कारण ठहर गया था। उस राज्य और शासन की शक्ति दुनियां भर में फैल गयी। लेकिन स्वप्न में देखते–देखते उसने यह आदेश भी सुना कि वह पेड़ काट दिया जाए, और उसके पत्ते और फल बिखेर दिये जाएं। उसके संबन्ध में यूं लिखा हुआ है, **"और हे राजा, तूने जो एक पवित्र पहरूए को स्वर्ग से उतरते और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट डालो और उसका नाश करो, तो भी उसके ठूंठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की हरी घास के भीतर रहने दो; वह आकाश की ओस से भीगा करे, और उसको मैदान के पशुओं के संग ही भाग मिले; और जब तक उसकी ऐसी ही दशा रहे"** (दानि.4:23)। यहां दानिय्येल कहता है कि स्वर्ग में पहरूएं हैं जो मानव एवं साम्राज्य की स्थिरता और अस्थिरता का निर्णय करते हैं। ये पहरूएं (watchers) परमेश्वर के आदेश पर तुरन्त कार्य करने लगते हैं। ऐसा कहा जाता है कि दुनियां के प्रत्येक वस्तुओं पर अधिकार रखने वाले स्वर्गदूत हुआ करते हैं। पानी पर, वायु पर, सरकार एवं शासनकर्ताओं पर एवं साधारण मनुष्य पर भी अधिकार रखने वाले अलग–अलग स्वर्गदूत

या (watchers) हुआ करते हैं। इन सब पर परमेश्वर ने उन्हें अधिकार दे रखा है। इनमें से शासन और शासनकर्ताओं पर अधिकार रखने वाले पहरूएं को परमेश्वर आदेश देता है कि पेड़ को काट डालो। अर्थात् नबूकदनेस्सर को कुछ समय के लिये शासन और साम्राज्य से दूर करो। उसका निश्चित समय भी बताया गया अर्थात् सात साल के लिये। पेड़ के ठूंठ को रहने देने का अर्थ है सात साल की अवधि में राज्य सुरक्षित रखा जाना।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर साम्राज्य और राजाओं पर अधिकार रखने वाले पहरूओं को आदेश देते हैं और वह आकर नबूकदनेस्सर राजा को पागल बना देता है। उसके दिमाग से मानव भेजा निकालकर पशु का भेजा बिठा देता है। वह महल, सुन्दर रानी, रखेलियों और सिंहासन को छोड़कर तुरन्त जंगल की ओर जाता है। सात साल पशुओं के साथ खुले आसमान के नीचे घूमता रहेगा। ओस, पानी और धूप उस पर पड़ता रहेगा। यह न्याय उसको सुनाया गया।

यह दण्ड कब तक है जब तक कि वह यह ना जानेगा कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है (4:25)। यह कितनी अद्भुत बात है। मनुष्य आज अपने जीवन में कुछ हासिल करने पर यह सोचता है कि वह उसके स्वयं के परिश्रम और प्रयास से प्राप्त किया है। यह भूल जाते हैं कि यह परमेश्वर का दान है। परमेश्वर की आशीष है। याद रखिये मनुष्य संसार में रहकर जो कुछ हासिल कर लेता है भले वह छोटी हो या बड़ी, साधारण कार्य हो या शासन कार्य, वह आपको परमेश्वर द्वारा दिया गया है। सदा उस दाता को याद रखें और उसके प्रति धन्यवादित रहें।

नबुकदनेस्सर को यह नहीं मालूम पड़ा कि शासन का असली अधिकारी परमेश्वर है और वह जिससे खुश हो जाता है उसे दे देता है। उसने पूरी दुनियां में जाकर लड़ाईयां लड़ी, राष्ट्रों को अपने अधिकार में ले लिया। इतना ही नहीं एक–एक देश पर विजय प्राप्त करते समय उसका यह भी विचार था कि उस देश में आराधना की जाने वाले ईश्वर और ईश्वरीय शक्ति पर विजय पा लेता है। इस्राएल पर विजय हासिल की तो सोचा कि वह इस्राएल के परमेश्वर को भी पराजित कर दिया। वह जीवित परमेश्वर

को जिसने उसको लड़ाईयां लड़ने और साम्राज्य स्थापित करने के लिये सामर्थ दी, उसे ही भूल गया। तो परमेश्वर ने निर्णय लिया कि उसे सात साल के लिये पशु बनाकर जंगल में भेज दें, जब तक उसको यह पता न चल जाये कि वह कुछ नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर साम्राज्य का असली अधिकारी है। सात साल के दण्ड के पश्चात् नबूकदनेस्सर को मालूम हुआ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर राज्य करता है। वह फिर राज्य में वापस आ गया।

यह दण्ड का वचन दानिय्येल ने नबूकदनेस्सर को सुनाया और सरल भाषा में समझाया। साथ ही साथ दानिय्येल ने राजा को एक व्यक्तिगत सलाह दी और कहा, **"इस कारण, ऐ राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर, कि यदि तू पाप छोड़कर धर्म करने लगे और अर्धम छोड़कर दीनहीनों पर दया करने लगे, तो संभव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहें" (4:27)**। दानिय्येल एक परमेश्वर का दास होने के नाते उसको इस भयंकर न्याय से बचने का उपाय बता रहा है। दो काम उसको करना था अर्थात् पापों को छोड़े, नम्र हो जाए और दीन दरिद्रों पर दया करें। इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर और मनुष्य के साथ संबन्ध सुधारें। घमण्ड को त्यागे, मन में दीनता और नम्रता को धारण करे। फिर भी दानिय्येल कहता है, **"संभव है"** कि परमेश्वर राजा की सुधि ले–और यह भयकर विपत्ति से बचाए। कोई भरोसा नहीं, हो सकता है परमेश्वर दया करें और बचाए और चैन और आराम के दिन बढ़ जाएं।

मैं सोचता हूं राजा ने तुरन्त अपने मन को दीन और नम्र किया होगा। दीन और दरिद्रों पर दया करने का विचार किया होगा। क्योंकि एक साल तक यह विपत्ति उस पर नहीं आयी। इसका मतलब यह है कि राजा ने दानिय्येल की सलाह मान ली। पश्चाताप किया। किन्तु वह पश्चाताप और मन फिराव केवल एक साल के लिए था। कुछ लोग आज भी हैं जो विपत्ति और खतरे की बात को सुनकर तुरन्त रोते गाते हैं और पश्चाताप कर लेते हैं। पर वह स्थायी नहीं। पश्चाताप परमेश्वर के वचन को सुनने के कारण दिल में गहरा कार्य होने से संभव हो सकता है। जब भी मिस्र देश में विपत्ति आयी फिरौन राजा पछताया और मूसा को बुलाकर कहा–यह विपत्ति दूर होने के लिये प्रार्थना करें। दस बार वह पछताया पर दिल में कोई परिवर्तन नहीं आया। अन्त में वह लाल समुद्र में नाश हो गया। नबूकदनेस्सर के साथ

भी ऐसा ही हुआ। यदि आप भी ऐसे पश्चाताप करने वाले व्यक्ति हैं तो आपके साथ भी वही होगा। लेकिन परमेश्वर के सत्य वचन को सुनकर उसको अपने जीवन में ग्रहण करने एवं उसके मुताबिक अपने जीवन को बिताने के लिए तैयार हो जाएं तब परमेश्वर की उपस्थिति आपके साथ रहेगी। आप भी अपने जीवन में सफल हो जायेंगे।

खैर, आगे हम इस बात को देखते हैं कि राजा का मन परिवर्तन अस्थायी था। वहां आगे पढते हैं – **"यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया। 12 महिनों के बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है जिसे मैंने ही अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बढ़ाई के लिये बसाया है? यह वचन राजा के मुंह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकल गयी है, और तू मनुष्यों के बीच से निकाला जायेगा, और मैदान के पशुओं के साथ रहेगा ; और बैलों की नाई घास चरेगा ; और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि परम प्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे उसे दे देता है"** (4:28–32)। नबूकदनेस्सर राजा दानिय्येल की सम्मति सुनकर तुरन्त अपने आप को दीन कर दिया था पर वह केवल एक साल के लिये ही रहा। उसका यह विचार हुआ होगा कि एक साल बीत गया और अब तक वह स्वप्न पूरा नहीं हुआ। अब वह निश्चिंत हो गया। एक साल तक उसका मन दीन और नम्र रहा। ठीक 12 महीने बाद वह एक दिन अपने महल की छत पर टहलने गया और टहलते–टहलते उस पूरे बाबुल शहर की ओर दृष्टि कर देखने लगा। सुन्दर सा बाबुल शहर। वह एकदम घमण्ड से भर गया। कहने लगा, **"क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैंने ही अपने राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है"**? बस इतना बोलते ही न्याय का वचन उसके कानों में सुनाई दिया जो एक साल पहले उसे सुनाया गया था।

उसके कथन में–मैं, मैंने, अपने प्रताप और अपनी बढ़ाई आदि शब्द दोहराया गया है। घमण्ड के शब्दों को परमेश्वर नहीं पसन्द करता। यह बोलकर पूर्ण विराम देते ही परमेश्वर का संदेश उसके पास आया।

आकाशवाणी हुई—**"राज्य तुम्हारे हाथ से निकल गया, तू मनुष्यों के बीच से निकाला गया, अब मैदान के पशुओं के संग रहेगा। बैलों की नाई घास चरेगा और यह स्थिति सात साल तक रहेगी"**।

बस वह महल के छत से उतरकर नीचे आया। अपने कमरे में जाने की बजाए वह मैदान की ओर चला गया। वह रानी और रखेलियों, सहयोगी और अफसरों के देखते—देखते मैदान की ओर निकल गया। किसी ने उसको रोकने का साहस नहीं किया। यदि कोई पशु बन जाए तो उस के पास कौन जाने का साहस करेगा? सारे लोग जो महल में थे, आश्चर्यचकित हो गये। मैदान में पहुँचा तो इस नये किस्म के पशु को देखकर असली पशु जगत में भय और आश्चर्य हुआ होगा। परमेश्वर यदि किसी को उस के घमण्ड के कारण तिरस्कार कर दे तो क्या दशा होगी ? (भजन.50:22)। उसकी कोई मदद् नहीं कर सकेंगे।

नबूकदनेस्सर के घमण्ड भरे शब्द को सुनकर एक साल पहले सुनाया गया दण्ड फिर से दोहराया गया और मैं सोचता हूं कि आकाशवाणी के साथ—साथ स्वर्ग के पहरूएं भी तुरन्त वहां भेज दिये गये और राजा का भेजा निकाल कर उसके स्थान पर बैल का भेजा बिठा दिया गया। बस वह सीधे महल के पास के वन की ओर चला गया। शायद उसी के द्वारा बनाए गए झूलेदार बगीचे की ओर गया होगा। सात साल उस मैदान में, बगीचे में रहा। कभी बीच में महल के तरफ नहीं आया न महल से कोई उसकी तरफ गया। परमेश्वर का न्याय क्या ही भयंकर है। यह कोई कहानी नहीं है पर यह एक ऐतिहासिक घटना है। घमण्ड मनष्य को चूर—चूर कर देता है, गिरा देता है, कभी—कभी जानवर की स्थिति में पहुँचा देता है। आज संसार में पागलों की तरह घूमने वाले लोग शायद इसी प्रकार दण्ड भोगने वाले हो सकते हैं।

सात साल बीतने पर नबूकदनेस्सर को परमेश्वर द्वारा जानवर का भेजा निकाल कर मानव का भेजा वापस दिया। तब वह अपने आपको देखने लगा। उसने अपनी स्थिति को स्वयं देखा कि परमेश्वर ने उसके घमण्ड के कारण उसके साथ क्या किया था। उसकी देह आकाश की ओस से भीगी हुयी थी। उसके बाल उकाब पक्षी के परों से और उसके नाखून चिड़ियों के

चंगुलों के समान बढ़ गये। तब उसका मन पूरी तौर से परमेश्वर के सम्मुख दीन हो गया। उसने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाई, परम प्रधान को धन्य कहा और वह परमेश्वर को इन वचनों से महिमा देने लगा, "उसकी प्रभुता सदा की है" और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहने वाला है। पृथ्वी के सब रहने वाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है और कोई उसको रोक कर उससे नहीं कह सकता है, तूने यह क्या किया है ?

यदि वह दीनता और नम्रता की मनःस्थिति के साथ सदा जीवित रहता तो यह सात साल का भयंकर न्याय का समय उसको देखने की आवश्यकता नहीं होती। घमण्ड ने उसको कहां से कहां पहुंचा दिया। प्रिय पाठकगण आप को प्राप्त समस्त आशीषें परमेश्वर की ओर से हैं। उस पर घमण्ड कर के कभी यह कहने का साहस न करें कि यह मेरा है—मैंने बनाया। मैंने खरीदा है। पर सदा यह कहें—ये सब परमेश्वर का दान है। परमेश्वर को महिमा मिले। यदि हम ऐसा करते रहेंगे तो परमेश्वर को आदर और सम्मान प्राप्त होता रहेगा और हमारा संसार का जीवन धन्य होता चला जायेगा। परमेश्वर का वचन कहता है कि, **"जो मेरा आदर करेगा मैं उनका आदर करूंगा, और जो मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जायेंगे" (1शमुएल.2:30)।**

जब नबूकदनेस्सर राजा ने परमेश्वर के सम्मुख अपने आपको नम्र किया तब उसकी बुद्धि ज्यों की त्यों हो गयी। उसको उसका सिंहासन और मुकुट वापस मिल गया। उसके मंत्री और प्रधान उससे भेंट करने आए। उसका राज्य स्थिर हो गया। उसको उसका खोया हुआ अधिकार और खोई हुई प्रशंसा वापस मिल गई। अन्त में नबूकदनेस्सर राजा ने दिल से जीवित परमेश्वर को अंगीकार किया। उसने दिल की गहराई और पूरे मन से, पूरी बुद्धि से और पूरी शक्ति से कहा, **"अब मैं (पशु बनाने के दण्ड के पश्चात्) नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं, और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है" (4:36,37)।**

इस बड़े समर्पण और अंगीकार से वह परमेश्वर के उद्धार में भागी हो गया और जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे तो राजा नबूकदनेस्सर से मुलाकात होगी और वह कहेगा, अच्छा हो गया मैं पशु बना दिया गया अन्यथा मैं नरक में रहता।

प्रिय मित्र, आपकी क्या दशा है ? मृत्यु के पश्चात् आप अनन्त काल का जीवन कहां बितायेंगे ? स्वर्ग में या नरक में ?

अध्याय – 5

दानिय्येल और बाबुल के पतन का सन्देश

चार और पांच अध्यायों के बीच में लगभग 30 वर्ष से अधिक का अन्तराल है। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की 44 वर्ष के लम्बे शासन के पश्चात् B.C.516 में मृत्यु हो गई। उसका सुपुत्र एविल मेरोड़क उत्तराधिकारी बना (2राजा.25:26–30;यिर्मयाह.52:31–34)। इन पदों में वर्णन किये गये रूप में यहूदा का राजा यहोयाकिन के साथ दया करने का कारण उसका यहोवा परमेश्वर के प्रति आदर और भय के कारण हो सकता है। वह अपने पिता नबूकदनेस्सर के साथ किये गये अद्‌भुत व्यवहार का स्मरण करता होगा ।

एविल मेरोड़क केवल दो साल ही बाबुल पर शासन कर पाया। वह उसके बहनोई (Brother-in-law) नेरिंगलिस्सार के द्वारा किये गये बलवे के कारण मारा गया। नेरिंगलिस्सार (B.C.559) में सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसका शासन बिलकुल क्षणिक था। उसके पुत्र लेबाशी मरडूक (Labashi Marduk) ने शासन की बागडोर संभाली। लगभग एक साल के शासन के पश्चात् वह भी मारा गया। उसके पश्चात् B.C. 555 में नेबोनिड़स (Nebonidus) सिंहासन का अधिकारी हो गया जो नेबुकदनेस्सर राजा का संभवतः दामाद था। जिस समय बाबुल पर आक्रमण हुआ था उस समय नेबोनिड़स फारस के साथ युद्ध पर गया हुआ था। नेबोनिड़स की अनुपस्थिति में उसके पुत्र बेलशस्सर को राज प्रतिनिधि (Regent) बना दिया था । वह पिता के साथ राज्य भार में शामिल था। पिता लड़ाई में पराजित हुआ और साम्राज्य के अन्य स्थानों के शासन में ध्यान लगा रहा था। बाबुल नगर में बेलशस्सर प्रतिनिधि के रूप में शासन कर रहा था ।

मतलब बेलशस्सर शासन के दूसरे स्थान में था। प्रथम स्थान में

नेबोनिड़स मुख्य शासनकर्ता के रूप में और दूसरे स्थान पर राज प्रतिनिधि (Regent) के रूप में बेलशस्सर राज कर रहा था। इस कारण बेलशस्सर ने दानिय्येल को तीसरे स्थान पर शासन की प्रतिज्ञा दी थी (5:16)। वह इस प्रकार तीसरे स्थान की घोषणा इसलिये की कि वह स्वयं दूसरे स्थान में था। एक और बात यहां स्पष्ट करना है वह यह है कि नेबोनिड़स को नबूकदनेस्सर का बेटा और बेलशस्सर को पोता कहा गया है (यिर्म.27:6,7) । याद रखिये पुराने ज़माने में दामाद को पुत्र कहा जाता और नाती और पोते को भी पुत्र कहा जाता था। लेकिन गहन अध्ययन में यह पता लगा है कि वह जो सगा बेटा नहीं, या तो दामाद है, ना ही नाती है या पोता । यह बेटा पुकारना एक प्रयोग मात्र है। सगा पुत्र न रहने पर भी ये लोग राज्य को संभालते थे। सो याद रखें नेबोनिड़स या नेबोनइड (Nebonnaid) नबूकदनेस्सर का दामाद और बेलशस्सर उसका नाती था ।

पिता की अनुपस्थिति में बेलशस्सर ने अपने राज्य के हज़ार प्रधानों के लिये बड़ी जेवनार की, और उन हजारों लोगों के सामने दाखमधु पीया। यह एक ईश्वरन्दिक, आमोद–प्रमोद एवं अनैतिक ढंग का या लंपटना या मतवालापन का कार्यक्रम था। मतलब पीकर वे आपस में अनैतिक कार्य करने लग जाएं। अनैतिकता परमेश्वर को पसन्द नहीं है। उसके अलावा और भी कई गलतियां इन लोगों ने की। लिखा है, **"दाखमधु पीते–पीते बेलशस्सर ने आज्ञा दी, कि सोने–चांदी के जो पात्र मेरे पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में से निकाले थे, उन्हें ले आओ कि राजा अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत उनमें से पीएं। तब जो सोने के पात्र यरूशलेम से परमेश्वर के भवन के मन्दिर में से निकाले गए थे, वे लाए गए, और राजा अपने प्रधानों, और रानियों, और रखेलियों समेत उनमें से पीने लगा"** (दानि. 5:2–5)।

यह उनकी दूसरी गलती थी। यरूशलेम से लाए गए यहोवा के भवन के अर्थात मन्दिर के पवित्र पात्रों को मदिरा के सेवन के लिये उपयोग करके अशुद्ध कर दिये गये। नबूकदनेस्सर राजा ने उन पात्रों को लेके तो आए पर उन पात्रों को किसी स्थान में सुरक्षित रखे थे।

तीसरी गलती उसने जो की वह यह थी कि उसने आराधना भी

आरम्भ की। किसकी आराधना ? सोने–चांदी, पीतल–लोहे, काठ और पत्थर के देवताओं की स्तुति करने लगे (5:4)। मनुष्य भले कुछ भी करता रहे आराधना नहीं छोड़ता। इतने भयंकर माहौल में भी आराधना का विचार रखता है। लेकिन याद रखिये अनैतिकता और अनात्मिकता एवं अनाचार करने वाला व्यक्ति, चार सौ बीसी करने वाला, नशे का जीवन बिताने वाला व्यक्ति कदापि जीवित ईश्वर की आराधना नहीं कर सकते। वे भले ही अन्य देवी देवताओं की, मूर्तियों की आराधना करें । लेकिन याद रखिये ये तीनों कार्य जीवित परमेश्वर के लिये क्रोध का कारण हो गया। नशेबाज़ी, अनैतिकता, परमेश्वर के मन्दिर के पात्रों का अशुद्ध किया जाना एवं मूर्तिपूजा आदि सभी कार्यों ने परमेश्वर को क्रोध दिलाया। तुरन्त परमेश्वर ने उसके खिलाफ न्याय सुनाया। वह एक अजीब और नए तरीके से किया गया।

उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की सी कई उंगलियां निकलकर दीवार के सामने राजमन्दिर की भीत के चूने पर कुछ लिखने लगी; और हाथ का जो भाग लिख रहा था, वह राजा को दिखाई पड़ा। उसे देखकर राजा भयभीत हो गया, और वह अपनी सोच में घबरा गया और उसकी कटि के जोड़ ढ़ीले हो गये, और कांपते–कांपते उसके घुटने एक दूसरे से लगने लगे (दानि. 5:5,6) ।

ज़रा सोचकर देखिये एक हज़ार प्रधान, रानियां और रखेलियां मिलकर खा पी रहे हैं। बड़ा शोरशराबा, खुशियां और ये सब मूर्तिपूजा में परिणित हो गया। उन तमाम् खुशियों का अन्त करते हुए परमेश्वर ने अपने अदृश्य हाथों को भेजा और राजा और बाबूल साम्राज्य का न्याय भीत पर लिखने लगा । वह भयभीत हो गया और उसके कटि के जोड़ ढीले हो गये। मतलब जहां बैठा था वहां से उठने की भी शक्ति जाती रही ।

मान लो आप वी.सी.आर. के द्वारा बढ़िया चित्र देख रहे है। या कोई खुशी का कार्यक्रम देख रहे हैं। पूरा परिवार मिल कर आनन्द मना रहे है। और उस समय आपके कमरे की दीवार पर कोई हाथ की उंगली का भाग प्रकट हो जाए और लिखना शुरू करें और लिखी हुई भाषा आपके समझ में न आए तो उस स्थिति में आपकी क्या हालत होगी। आपका रक्तचाप बढ़ जाएगा या आप बेहोश हो जायेंगे। यही कुछ बेलशस्सर के साथ भी हुआ

था। बेलशस्सर के देखते–देखते एक वाक्य पूरी भीत पर लिखा गया पर यह नहीं समझ में आया कि क्या लिखा है और उसका अर्थ क्या है। वह चिल्ला उठा। लिखा है, **"तब राजा ने ऊंचे शब्द से पुकार कर तन्त्रियों, कसदियों और होनहार बताने वालों को हाज़िर करने की आज्ञा दी। जब बाबुल के पण्डित पास आए, तब राजा उनसे कहने लगा, जो कोई वह लिखा हुआ पढ़कर उसका अर्थ मुझे समझाए उसे बैंजनी रंग का वस्त्र, और उसके गले में सोने की कंठमाला पहनाई जायेगी, और मेरे राज्य में तीसरा वही प्रभुता करेगा" (दानि.5:7)** ।

बेलशस्सर राजा के भयभीत होने का कारण कई है। पहला कारण उंगलियां जिसको भीत पर लिखा हुआ देखा। वह अदृश्य हाथ, किसका होगा, कहां से आया होगा ? दूसरी बात, वह लिखा हुआ वाक्य किस भाषा का है ? उसका अर्थ क्या होगा ? ऐसा दृश्य दिन में दिखाई दे तो व्यक्ति डर जाए, यह तो रात का समय था। तीसरी बात बाबुल के पण्डितों पर राजा ने पूरा भरोसा किया पर वे न तो उस वाक्य को पढ़ पाए न ही उसका अर्थ बता पाए। वे केवल नाम के पण्डित हैं। कहते हैं न **"काम के न कांच के पर दुश्मन अनाज के"**। पर वे भी क्या करें, लिखने वाला सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर है। उसने ऐसी भाषा में लिखा है जो परमेश्वर के प्रकाशन के बिना न समझ पाए। उनमें से कोई आत्मलोक से संपर्क रखने वाले नहीं थे। वह तो केवल दानिय्येल अकेला था।

जब बातें प्रकट नहीं हुई तो राजा का चेहरा पीला पड़ गया। रानियां घबरा गयी, रखेलियां और प्रधानों के जी में जी नहीं रहा। उन सबको ऐसा लगा मानों धरती उनके पांवों के नीचे से खसक गयी हो। जब भरोसा किये गये पण्डित कुछ न कर पाए तो राजा की हालत खराब हो गई। लिखा है, **"इस पर बेलशस्सर राजा निपट घबरा गया और भयातुर हो गया; और उसके प्रधान भी बहुत व्याकुल हुए" (5:9)**। खुशी और कोलाहल और शोरगुल की वह जगह विलाप में परिणित हो गई। परमेश्वर अपने लोगों के विलाप को नृत्य में बदलता है परन्तु दुष्टों को देखिये उनका नृत्य और आनन्द परमेश्वर के हस्तक्षेप से विलाप में बदल गया। सबकी बोलती बन्द हो गयी। स्त्रीयां बेहोश हो गयीं होंगी। दाखरस हजम हो गया। जो भी खाया पीया सो सब गया।

उस घबराहट के समय में रानी भीतर आयी और कहने लगी व्याकुल होने की कोई बात नहीं और मन में न उदास हो। तेरे राज्य में दानिय्येल नाम का एक पुरूष है जिसका नाम तेरे पिता ने बेलतशस्सर रखा था, उसमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है (5:11–12) यह रानी बेलशस्सर की रानी नहीं बल्कि उसकी नानी मां, वयोवृद्ध रानी, नबूकदनेस्सर की रानी होने की संभावना है। उसने बेलशस्सर को दानिय्येल की याद दिलाई। परमेश्वर का दास जो संकट के समय काम आ सकता है उसके बारे में बेलशस्सर को पता ही नहीं। वैसे भी परमेश्वर के दासों की कई लोग कद्र नहीं करते। खैर, उसकी सलाह से दानिय्येल को भीतर बुलाया गया। वह राजा के सामने उपस्थित हुआ उस समय दानिय्येल काफी बुजुर्ग हो गया था। 17 साल की अवस्था में बाबुल में लाये जाने का अन्दाज है और अब यहुदा राष्ट्र के 70 साल की बन्धुवाई उसकी समाप्ति की ओर आ चुका है। मतलब दानिय्येल अभी 86 या 87 साल का हो गया है।

दानिय्येल के विषय में उसे कुछ पता ही नहीं है। राजा लोग अपने शासनकाल का इतिहास लिखते हैं। सभी घटनाओं का वर्णन उसमें रहता है ताकि उसके बाद आने वाले शासनकर्ता उसको पढ़ें। बेलशस्सर हालांकि बाबुल का वास्तविक शासनकर्ता नहीं था, वह केवल राजप्रतिनिधि था। फिर भी जानकारी के लिये इतिहास के पन्नों को पलट कर देखना चाहिये था। लेकिन वह लापरवाह एवं आमोद प्रमोद एवं लंपटता में मन लगाने वाला था। लेकिन इस मजबूरी में दानिय्येल से परिचित होना ही पड़ा। दानिय्येल उसके सामने उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय प्राप्त कर लिया (5:13,14)। फिर राजा दानिय्येल से कहने लगा, **"देख, अभी पण्डित और तंत्री लोग मेरे सामने इसलिये लाये गये थे कि यह लिखा हुआ पढ़े और उसका अर्थ मुझे भी समझा सकें। परन्तु मैंने तेरे विषय में सुना है कि दानिय्येल भेद खोल सकता है और सन्देह दूर कर सकता है। इसलिये अब यदि तू उस लिखे हुए को पढ़ सके और उसका अर्थ भी मुझे समझा सके, तो तुझे बैंजनी रंग का वस्त्र, और तेरे गले में सोने की कण्ठमाला पहनायी जायेगी, और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा" (5:15,16)।**

दानिय्येल ने अपना मुंह भीत की ओर उठाया और लिखा हुआ वाक्य पढ़ने लगा। वह उसका अर्थ परमेश्वर की आत्मा के द्वारा समझा और राजा

से कहा, **"अपने दान अपने ही पास रख; और जो बदला तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे; वह लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़कर सुनाऊंगा और उसका अर्थ भी तुझे समझाऊंगा" (दानि.5:17)**। लिखा हुआ वाक्य पढ़ने से प्रभु के दास दानिय्येल को पता चला कि राजा उसी दिन मरने वाला है। उसके राज्य का अंत हो गया है। फिर मरने वाले राजा का ईनाम एवं प्रतिष्ठा और खत्म होने वाले राज्य में तीसरे स्थान की प्रतिज्ञा दानिय्येल के लिये एक विरोधाभास लगी। उसने पहले से ही उन बातों के लिए इनकार कर दिया। बहुत से लोग मरने वाले मनुष्य से डरते हैं। मरने वाले मनुष्य की ओर से कुछ प्राप्त करने के अथक प्रयास में लगे रहते हैं। खत्म होने वाले राज्य के लिये और उसकी प्रतिष्ठा के लिये कोशिश करते हैं। प्रिय मित्र, दानिय्येल ने जो कुछ भी बाबुल में रहकर प्राप्त किया है वह सब परमेश्वर की ओर से था। आप किससे प्राप्त करना चाहते हैं ? आप किस राज्य की प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं ? क्या परमेश्वर के राज्य में आपका कोई हिस्सा या भाग है ?

इससे पहले कि दानिय्येल लिखा हुआ वाक्य पढ़कर उसका अर्थ समझाए, उसने राजा को लम्बा सा एक भाषण दिया। उसने उस प्राप्त मौके को उलाहना देने, ताकीद देने और उपदेश देने के लिये उपयोग किया। उसने राजा को प्रणाम नहीं किया। उसने राजा से यह नहीं कहा कि तू युग–युग जीवित रहे। वह एक भविष्यवक्ता की हैसियत से और अपने लम्बे समय के आत्मिक अनुभव के प्रकाश में उसको बड़े कठोर शब्दों से समझाने का प्रयास कर रहा था। दानिय्येल ने उसके पिता नबूकदनेस्सर के बारे में यह कहकर याद दिलाया कि, **"हे राजा, परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, बड़ाई, प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था । और उसकी बड़ाई के कारण जो उसने उसको दी थी, देश–देश और जाति–जाति के सब लोग और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले उसके सामने कांपते और थरथराते थे, और जिसको वह चाहता उसे वह घात करता था; जिसे वह चाहता उसे वह उंचा पद देता था, और जिसको वह चाहता उसे वह गिरा देता था" (दानि.5:18–19)**।

वह नबूकदनेस्सर की महानता का वर्णन करते हुए उसकी प्रशंसा करने लगा और कहा इतना सब कुछ होने के बाद भी जब उसके मन में

घमण्ड आया तो परमेश्वर उसे दण्ड देने से पीछे नहीं हटा। उसको भयंकर दण्ड से दण्डित किया।

दानिय्येल ने कहा, **"परन्तु जब उसका मन फूल उठा, और उसकी आत्मा कठोर हो गयी, यहां तक कि वह अभिमान करने लगा, तब वह अपने राजसिंहासन से उतारा गया, और उसकी प्रतिष्ठा भंग की गयी। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और उसका मन पशुओं का सा, और उसका निवास जंगली गदहों के बीच हो गया; वह बैलों की नाई घास चरता, और उसका शरीर आकाश की ओस से भीगा करता था, जब तक कि उसने जान न लिया कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है" (दानि.5:20-21)।**

इतनी बातें बहुत ही गंभीरतापूर्वक बताने के बाद उसने बेलशस्सर से कहा, **"तो भी, हे बेलशस्सर, तू जो उसका पुत्र है, और यह सब कुछ जानता था, तो भी तेरा मन नम्र न हुआ। वरन् तूने स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध सिर उठाकर उसके भवन के पात्र मंगवाकर अपने सामने धरवा लिये, और अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत तूने उनमें दाखमधु पिया; और चांदी, सोने, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवता, जो न देखते न सुनते, न कुछ जानते हैं, उनकी तो स्तुति की, परन्तु परमेश्वर, जिसके हाथ में तेरा प्राण है, और जिसके वश में तेरा सब चलना फिरना है, उसका सम्मान तूने नहीं किया। तब ही यह हाथ का एक भाग उसकी ओर से प्रकट किया गया है और वे शब्द लिखे गये हैं (दानि.5:22-24)।**

स्वप्न का अर्थ बताने से पहले और लिखा हुआ वाक्य पढ़कर उसका अर्थ समझाने से पहले दानिय्येल अपनी उम्र और अपने अनुभव के आधार पर राजा बेलशस्सर को उलाहना देने लगा। परमेश्वर के दासों का आत्मिक अधिकार देखिये। राजा के सामने खड़े होकर उसको प्रणाम कर उस की दीर्घायु की कामना करके उसकी प्रशंसा नहीं कर रहा है बल्कि की गयी गलती को याद दिलाकर उसको खूब उलाहना दे रहा है और इतिहास में घटित अतीत के कार्यों की ओर उसका ध्यान आकर्षित कर रहा है।

पिता को दिये गये दण्ड को याद दिला रहा है। एक भविष्यवक्ता का अधिकार देखिये। युहन्ना बपतिस्मा देने वाला परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। वह परमेश्वर के लिये खड़ा रहा और पाप का विरोध किया। यहां तक हेरोदेस राजा को भी नहीं छोड़ा जिसने अपने भाई की पत्नी को रखे हुए था। सच्चाई के कारण सिर कटवाया पर पाप और अधर्म के सामने सिर नहीं झुकाया। प्रिय पाठकों, परमेश्वर के वचन के सत्यता के लिये दिलेरी के साथ खड़े रहो। पाप और गलतियों का डटकर मुकाबला करो। प्रभु आपके साथ है।

राजा को उनकी भूल और गलतियों एवं घमण्ड को याद दिलाने के पश्चात् दानिय्येल ने अपना ध्यान उस भीत पर लिखे वाक्य की ओर लगाया। वहां बेलशस्सर का न्याय लिखा हुआ था। दानिय्येल ने अपना मुख भीत की ओर घुमाया और लिखा हुआ वाक्य पढ़ने लगा। उसने कहा, "और जो शब्द लिखे गये वे ये हैं – **"मने, मने, तकेल और ऊपर्सीन" इस वाक्य का अर्थ यह है, मने अर्थात परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। तकेल, तू मानो तराजू में तौला गया और हल्का पाया गया है। परेस अर्थात् तेरा राज्य बांटकर मादियों और फारसियों को दिया गया है"** (दानि.5:25–28)।

बेलशस्सर राजा के न्याय के संबन्ध में लिखे गये शब्दों के अर्थ समझाने के द्वारा तीन बातें पूरी हुई :–

1. राजा के दिन गिनकर अन्त कर दिया गया।
2. परमेश्वर के सच्चे और धार्मिक तराजू में तौला गया और कम पाया गया।
3. उसके राज्य को विभाजित कर मादियों और फारसियों को दिया गया।

बाबुल नगर

बाइबल के वर्णन में बाबुल का नाम बहुत पहले से आया है। बाबुल की स्थापना पहला वीर और पराक्रमी शिकारी निम्रोद के द्वारा हुई (उत्प. 10:8–10)। बाबुल कुछ समय तक अशूर के अधीन रहा जिसकी राजधानी निनवे था (उत्प.10:11)। यह स्थिति ई.पू. छटवीं शताब्दी की रही जब कि

पिता को दिये गये दण्ड को याद दिला रहा है। एक भविष्यवक्ता का अधिकार देखिये। युहन्ना बप्तिस्मा देने वाला परमेश्वर द्वारा भेजा गया था। वह परमेश्वर के लिये खड़ा रहा और पाप का विरोध किया। यहां तक हेरोदेस राजा को भी नहीं छोड़ा जिसने अपने भाई की पत्नी को रखे हुए था। सच्चाई के कारण सिर कटवाया पर पाप और अधर्म के सामने सिर नहीं झुकाया। प्रिय पाठकों, परमेश्वर के वचन के सत्यता के लिये दिलेरी के साथ खड़े रहो। पाप और गलतियों का डटकर मुकाबला करो। प्रभु आपके साथ है।

राजा को उनकी भूल और गलतियों एवं घमण्ड को याद दिलाने के पश्चात् दानिय्येल ने अपना ध्यान उस भीत पर लिखे वाक्य की ओर लगाया। वहां बेलशस्सर का न्याय लिखा हुआ था। दानिय्येल ने अपना मुख भीत की ओर घुमाया और लिखा हुआ वाक्य पढ़ने लगा। उसने कहा, "और जो शब्द लिखे गये वे ये हैं – **"मने, मने, तकेल और ऊपर्सीन" इस वाक्य का अर्थ यह है, मने अर्थात परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। तकेल, तू मानो तराजू में तौला गया और हल्का पाया गया है। परेस अर्थात् तेरा राज्य बांटकर मादियों और फारसियों को दिया गया है"** (दानि.5:25–28)।

बेलशस्सर राजा के न्याय के संबन्ध में लिखे गये शब्दों के अर्थ समझाने के द्वारा तीन बातें पूरी हुई :–

1. राजा के दिन गिनकर अन्त कर दिया गया।
2. परमेश्वर के सच्चे और धार्मिक तराजू में तौला गया और कम पाया गया।
3. उसके राज्य को विभाजित कर मादियों और फारसियों को दिया गया।

बाबुल नगर

बाइबल के वर्णन में बाबुल का नाम बहुत पहले से आया है। बाबुल की स्थापना पहला वीर और पराक्रमी शिकारी निम्रोद के द्वारा हुई (उत्प. 10:8–10)। बाबुल कुछ समय तक अशूर के अधीन रहा जिसकी राजधानी निनवे था (उत्प.10:11)। यह स्थिति ई.पू. छटवीं शताब्दी की रही जब कि

क्षयर्ष (Xerxes) और नेबोपोलासर (Nabopolassar) ने निनवे पर आक्रमण कर उसको उलट दिया। नेबोपोलासर का पुत्र नबूकदनेस्सर और भी शक्तिशाली रूप में उसका उत्तराधिकारी बना। नबूकदनेस्सर का विजय बाबुल साम्राज्य को और भी अधिक महान बनाया। उस बाबुल को पुरातन काल के, यहां तक कहा जाए आधुनिक बड़े नगरों से भी सुन्दर और भव्य रूप में बनाया गया था।

हेरोडॉटस (Herodotus) के लेखों के अनुसार बाबुल शहर 15 मील चौकोर में था जिसके चारों तरफ एक शहरपनाह बनाया गया था। इस शहरपनाह की दीवार 87 फुट मोटी और 350 फुट ऊंची थी। उस शहरपनाह के ऊपर 250 गुम्मट बने थे। उस शहरपनाह की चौड़ाई इतनी थी कि उसके ऊपर एक ही समय 6 रथ एक साथ दौड़ा सकते थे। इस मोटी दीवार के बाहर से इससे कम मोटी एक और दीवार बनाई गयी थी। बाबुल शहर में 25 वृक्ष पंक्ति के छायावृत 150 फुट चौड़ी सड़क बनायी गयी थी जो शहर के उत्तर से दक्षिण तक और उसी रूप की सड़क पूर्व से पश्चिम तक थी जो एक दूसरी को काटती हुई जाती थी। इस प्रकार लगभग 676 बड़े–बड़े समकोण चतुर्भुज या चौकोर मैदान जिसके बीच में बगीचा और चारों तरफ मकान हो।

शहर के एक कोण से दूसरे कोण तक कर्ण रेखावत् (Diagonally) रूप में फुरात नदी शहर के अन्दर से बहती थी। इस नदी के दोनों तट पर सुन्दर से घाट बने हुए थे। नदी के दोनों तरफ के मुख्य सड़कों को जोड़ने के लिये बड़े–बड़े नाव डाली गयी थी जो इस पार से उस पार जाने के लिये उपयोग की जाती थी।

जो सड़क नदी के दोनों तट पर थी, दो महल बनाकर एक पुल से जोड़ दिया था। इन महलों को एक भूमिगत (Underground)मार्ग से भी जोड़ा गया था। उन महलों के पास दो गुम्मट बने थे जो एक के ऊपर एक बने थे। बाबुल का झूलेदार बगीचा भी मशहूर है और यह प्राचीन संसार के 7 अजूबा वस्तुओं में से एक था। यह बगीचा 700 फुट चौकोर और एक के ऊपर एक मंजिल जैसे बना था। वह 350 फुट उंचाई में एक पहाड़ सा दिखाई देता था जिस में छोटे–छोटे पौधे या झाड़ लगाए गये थे। पौराणिक

कथाओं के आधार पर यह नबूकदनेस्सर राजा ने अपनी रानी को प्रसन्न करने के लिये बनाया था। कहा जाता है कि इस शहर में 10 लाख (one million) लोग रह सकते थे। इस प्रकार के एक नगर को लोगों ने उस समय तक नहीं देखा था। वास्तव में इस शहर का बनाने वाला एक अमानुषिक व्यक्ति था।

एक और बात ध्यान देने योग्य था। इस शहर के आसपास के इलाके में कुछ विशाल खेती थी जिसमें शहर की पूरी आबादी के लिये आवश्यक भोजन वस्तु उपजाते थे। इस प्रकार देखा जाए तो यह शहर सैनिकों के प्रवेश के लिये कठिन रूप में बनाया गया था।

आधुनिक बाबुल

आधुनिक समय में बाबुल अस्तित्व में नहीं है। वह संसार से मिट गया है। परन्तु वह फिर बनाया जायेगा। आज बाबुल इराक में है। इराक की राजधानी बगदाद है। बगदाद से 88 कि.मी. दूर प्राचीन बाबुल पाया जाता है। इराक अनेक राष्ट्रों से मिलकर बना है और उसमें बाबुल भी शामिल। इस बड़े भूविभाग में अनेक राष्ट्र पाए जाते थे अर्थात् बाबुल, निनवे, ऊर, अशूर और कसदियों का देश आदि। 1921 में ये सब राष्ट्र मिलकर एक राष्ट्र बन गया अर्थात् इराक।

पहले इस भूविभाग पर अनेक लोगों ने शासन किया अर्थात् हित्तिटिया, कासटिया, एरिमटिया, सनहरीब, नबुकदनेस्सर, कुस्रु, सिकन्दर महान, सेल्युकस, रोमी, मंगोली, ओटमन और ब्रिटिश आदि। 1932 में इराक ब्रिटिश की अधीनता से स्वतंत्र हुआ। 1958 में यहां राजकीय शासन समाप्त हो गया और 1979 में सद्दाम हुसैन इराक का राष्ट्रपति बन गया। लेकिन इराक की राजधानी बगदाद से 88 कि.मी. दूर बाबुल नाम का वह पुरातन शहर फिर से बनाया जायेगा। उसकी पूरी तैयारी हो चुकी है। विस्तृत जानकारी हेतु लेखक द्वारा लिखित पुस्तक–**"प्रकाशितवाक्य का अध्ययन"** नाम पुस्तक पढ़े। जब बाबुल बनाया जाएगा तो बगदाद की महिमा समाप्त हो जायेगी और बाबुल इराक की राजधानी बन जायेगी। नबुकदनेस्सर के ही कुल में जन्मा सद्दाम हुसैन इस नगर का निर्माण करेगा। वह शहर अपनी पुरानी

महिमा एवं सौन्दर्य के साथ फिर बनाया जायेगा। वह संसार का सबसे बड़ा व्यापार केन्द्र बनेगा।

बाबुल शहर का विनाश

जब बेलशस्सर राजा का यह भ्रष्ट एवं अधर्मी भोज का कार्यक्रम अपनी चरम सीमा पर था तब उनका पिता नबोनेइड (Nabonnaid) बोरसिप्पा नामक स्थान में फारस के साथ युद्ध कर रहा था। उसने शहर के एक मन्दिर में विश्राम किया, परन्तु कुछ समय पश्चात् उनके सैनिक घेरे को फारस के राजा के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा।

नबुकदनेस्सर राजा के वृक्ष वाले स्वप्न में पहरूए ने राजा को समझाया था कि, **"परम प्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है" (दानि.4:17)।** निश्चित रूप में बेलशस्सर इस वर्णन में बिलकुल सही बैठता है। बेलशस्सर एक ऐसा राजा था जो पियकड़पन, रात्रि उत्सव एवं आमोद–प्रमोद में मगन रहने वाला था।

जब बेलशस्सर राजा का रात्रि उत्सव एवं आमोद–प्रमोद अन्दर राज महल में चल रहा था कि शहर के शहरपनाह के बाहर फारसी सेना बड़ी संख्या में आकर यह प्रयत्न कर रही थी कि शहर में किस प्रकार प्रवेश किया जाए। राजा और उसके उपदेशक सभा यह विचार में थी कि बाबुल शहर बिलकुल सुरक्षित है। एक चढ़ाई करने वाला भला इस नगर में किस प्रकार प्रवेश कर सकते हैं ? क्या वे नगर के चारों तरफ की बड़ी ऊंची शहरपनाह पर चढ़ सकते हैं ? शहर के भीतर ही सभी लोगों के लिए कई वर्षों तक भोजन करने की सुविधा थी। शहर के खुली जगह में बहुतायत से भोजन वस्तु और सब्ज़ियां पैदा होती थी। शहरपनाह के ऊपर रथ में सवार सुरक्षा कर्मियों को यह आदेश था कि किसी भी प्रकार के सैनिक गतिविधियों का वे जायज़ा रखें। जिस शहर ने एक भी सैनिक घेरे का सामना नहीं किया वह आक्रमण के लिये तैयार हो रहा है।

बेलशस्सर अपने आप को बिलकुल सुरक्षित समझ रहे थे। शहर के भीतर प्रवेश करने वाले पुल अन्दर खोच सकते थे। बड़े पीतल का दरवाजा बन्द किया जाए तो बिलकुल सुरक्षा है इसके अलावा शहरपनाह के ऊपर सिपाही आने वाले हर आक्रमण का सामना करने के लिये तैयार थे। राजा ने इस प्रकार अपने आपको सुरक्षित महसूस किया कि वह एक बड़ी जेवनार कर रहा है, खाने पीने का कार्यक्रम कर रहा है। आनन्दोत्सव मना रहे हैं उस आनन्दोत्सव में वह इतना आनन्दित थे कि उन्होंने परमेश्वर के भवन के पात्रों को भी ले जाकर उस में दाखरस पीया। इतना ही नहीं उन पवित्र पात्रों में पीने के पश्चात बाबुल के देवी–देवताओं की उपासना और आराधना का। यह स्वर्ग के खिलाफ एक खुली अवहेलना थी।

इस समय शहर के बाहर राजा के ज्ञान के बिना फारसी सेना के अधिकारीगण किसी कार्य में व्यस्त थे। वे नगर में प्रवेश करने की योजनाबद्ध कार्य में लगे हुए थे। उसमें उन्होंने फरात नदी के पानी को सुखाने की योजना बनायी जो बाबुल नगर के बीचों–बीच बहती थी। ताकि सेना आराम से नदी के सूखी ज़मीन पर चलकर नगर में प्रवेश करें। ऐतिहासिक वर्णन के अनुसार फारसी सेना का सेनापति कुस्रु ने एक नया कनाल बनवाया और कई मील दूर शहरपनाह के पहरूओं के दृष्टि से काफी दूर एक बहुत बड़ा तालाब तैयार किया और इस कनाल द्वारा फरात नदी का पानी उसकी ओर बहाया। इस प्रकार फरात नदी के पानी को सुखाया।

सारा कार्य संपूर्ण करने के पश्चात कुस्रु को शहर पर आक्रमण का समय आया तो बेलशस्सर राजा पीकर मतवाला हो गया था। साइरस ने अपनी सेना को तीन भागों में विभाजित किया। एक झुण्ड फुरात नदी के पानी को दूसरी दिशा की ओर ले जाने और दूसरे झुण्ड को फरात नदी के नगर प्रवेश द्वार पर और तीसरे झुण्ड को पानी बहता हुआ दूर पहुँचने वाले स्थान पर खड़े किया। जैसे कि फरात नदी का पानी कम हुआ और सेना उसमें चलने लायक हुई तो सेना के दो झुण्ड को ; दो टुकडी को आज्ञा दी कि वे इस प्रकार नदी के दोनों तरफ से मार्च करें कि एक साथ शहर के बीच में पहुँचे जहां पर बेलशस्सर राजा का राजमहल है। सेना मार्च करके शहर के शहरपनाह के पास पहुँची तो उनके आश्चर्य की कोई सीमा नहीं थी। उन्होंने देखा नदी पर बने पीतल का दरवाजा जिससे होकर शहर में प्रवेश

किया जा सकता है, लापरवाही के कारण उस रात खुला रह गया। कहते हैं न, विनाशकाले विपरीत बुद्धि। सब खाने–पीने में और आमोद–प्रमोद में लगे हुए थे। हो सकता है कि वे रक्षा पंक्ति और, सुरक्षाकर्मी भी पीने पिलाने में लग गये हों। या सुरक्षा कर्मियों ने नदी के पानी को कम होते देख कर सूचना (Alarm) दी हो पर कोई ध्यान नहीं दिये। सब भोज के आमोद में आनन्दित थे। या वे आसमान के तारे जो सीसरा के विरुद्ध उस समय लड़ा सो आज बाबुल के विरुद्ध लड़ने लग गये (न्यायिओं.5:20)।

इस प्रकार बाबुल पर होने वाले आक्रमण के संबंध यशायाह भविष्यवक्ता ने अपनी पुस्तक में लगभग दो सदी पूर्व वर्णन किया था (यशा.44:28,45:1–3)। आक्रमणकारी राजा कुस्रु का नाम उसके जन्म के बहुत वर्षों पूर्व वर्णन आया है। यशायाह भविष्यवक्ता के वचन के अनुसार बाबुल नगर पर मादी फारसी राज्यों की संयुक्त शक्ति ने पराजित कर दिया। इस प्रकार बाबुल साम्राज्य को पराजित करने का कारण था। यहूदा राष्ट्र बाबुल में बन्धुवाई में थे। बन्धुवाई का समय परमेश्वर की ओर से निर्धारित किया गया था अर्थात 70 वर्ष। वह पूरा होने पर था परन्तु बाबुल साम्राज्य बना रहता और बेलशस्सर राजा शासन करता रहा तो यहूदा राज्य को रिहा नहीं करेंगे। इस कारण परमेश्वर ने उस साम्राज्य को पराजित करके, नष्ट करके दूसरी शक्ति को साम्राज्य और शासन प्रदान किया और वह साम्राज्य था मादी पारसी साम्राज्य।

बड़े योजनाबद्ध तरीके से कुस्रु के नेतृत्व वाली सेना ने नगर में प्रवेश करके बेलशस्सर राजा का वध किया। और साम्राज्य को अपने अधिकार में ले लिया। इससे पहले दानिय्येल ने बेलशस्सर की मृत्यु का सन्देश दे दिया था। दानिय्येल को मृत्यु से पहले साम्राज्य के तीसरे पद पर पदोन्नति देने घोषणा की गयी। उसको बैंगनी रंग का वस्त्र और उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहनाई गयी, और ढिंढोरिये ने उसके विषय में पुकारा कि राज्य में तीसरा दानिय्येल ही प्रभुता करेगा (दानि.5:26)।

लेकिन क्या फायदा जिस साम्राज्य में दानिय्येल को पदोन्नति दी गयी वह साम्राज्य ही नहीं रहा। उस पदोन्नति की घोषणा करने वाला राजा भी जीवित नहीं रहा। उसी रात कसदियों का राजा बेलशस्सर मार डाला

गया। और दारा मादी जो कोई 62 वर्ष का था राजगद्दी पर विराजमान हुआ (दानि.5:30,31)। याद रखिये मरने वाले मनुष्यों की पदोन्नति के पीछे चलकर हमारे परमेश्वर की आशीषों से वंचित नहीं रहें। प्रभु आपकी सहायता करने पाए।

अध्याय – 6

दानिय्येल सिंहों की मान्द में

बाबुल साम्राज्य का अन्त हो गया। नबूकदनेस्सर के स्वप्न के अनुसार मूर्ति का दूसरा भाग (चान्दी) अर्थात् मादी फारसी संयुक्त शासन वाला साम्राज्य आरंभ हो गया। सर्वप्रथम मादी लोगों ने शासन की बागड़ोर संभाली। क्योंकि यह माना जाता है कि कुस्रु कुछ और राज्यों को भी अपने अधिकार में लेना चाहते थे सो उनको कुछ और लड़ाइयां लड़नी थी। इस कारण आपस के समझौते के द्वारा मादी लोग शासन करने लगे। दारा राजा ईसा पूर्व 538 में नये साम्राज्य का सम्राट बना। उसने केवल दो ही साल शासन किया। इस समय दानिय्येल 88 वर्ष का होना चाहिये। राजा ने प्रत्यक्ष रूप में दानिय्येल के ज्ञान के बारे में और उसकी अद्‌भुत उपलब्धियों के बारे में सुना। तुरन्त दानिय्येल को राज्य में शासन में राजा की सहायता करने वाले तीन अध्यक्षों में प्रमुख एवं प्रधान नियुक्त किया। उसके ज्ञान और उसमें निहित उत्तम आत्मा के कारण राजा ने उसे पूरे साम्राज्य के सभी क्षेत्रों पर उत्तरदायित्व सौंपना चाहा।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि मादी फारसी साम्राज्य एक संपूर्ण साम्राज्यवादी शासन प्रणाली से चलने वाला शासन नहीं था। वह एक संपूर्ण राजतन्त्र (absolute monarchy) शासन प्रणाली वाला देश नहीं था, जैसा बाबुल साम्राज्य शासन प्रणाली रही। यह कुछ सांसद सदस्यों द्वारा (Parliament) चलाए जाने वाला शासन प्रक्रिया थी। एक बार संसद में कानून बन जाए तो वह राजा भी तब्दील नहीं कर सकते थे।

यह प्रकट हो गया कि राजा के द्वारा दानिय्येल को उन्नति और प्रतिष्ठा दी जाने वाली है, देश पर नियुक्त अध्यक्षों और उच्च अधिकारियों को यह बात पसन्द नहीं आई। उन्हें मालूम था कि दानिय्येल के अन्दर उनसे

बढ़कर एक उत्तम आत्मा रहती है। इस कारण उन्हें मालमू था कि दानिय्येल किसी भी प्रकार के गलत कार्य एवं किसी भी प्रकार के कपट और असत्यता एवं बेईमानी (dishonesty) को अपने दफ़्तर में बर्दाश्त नहीं करेंगे । वे इस बात से काफी परेशान हो गये। वे इस बुजुर्ग एवं अनुभवी प्रबन्धकर्ता एवं शासक (administrator) को नीचा दिखाना या हो सके तो निलम्बित करना चाहते थे। वे कहने लगे, पर उसमें कोई दोष तो नहीं पाना असंभव है, क्योंकि लिखा है, **"तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य के विषय में दानिय्येल के विरुद्ध दोष ढूंढने लगे; परन्तु वह विश्वासयोग्य था, और उनके काम में कोई भूल व दोष न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध व दोष न पा सके"** (दानि.6:4) ।

दानिय्येल के संबन्ध में, उसकी ईमानदारी (integrity), दुर्बल न किये जाने वाली योग्यता, एक अद्‌भुत गवाही है। दफ़्तर संबन्धी या कार्य संबन्धी मामले में उसके अन्दर कोई दोष न पा सके। वह अपने सिद्धान्त में और प्रबन्ध में निर्दोष (flowless) था। इस वर्णन में एक परमेश्वर के दास के इह जीवन का संपूर्ण ब्यौरा मिलता है। हमें प्रभु के लोग होने के नाते अपने कार्यक्षेत्रों में बहुत ही इमानदार रहना चाहिये। आप भले ही किसी भी क्षेत्र में क्यों न नियुक्त हो, छोटा या बड़ा कार्य, उसमें आपको अपनी ईमानदारी को (integrity) दर्शाना होगा। कोई आपको देखे या न देखे, अपना कार्य पूरी ईमानदारी के साथ करें।

सो दानिय्येल के साथियों और अधीनस्थों ने उसमें दफ़्तर एवं कार्य संबन्धी मामलों में उसको फंसा न सके तो उसके आत्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने का इरादा किया। तब उन्होंने सोचना शुरू किया और कहा, **"हम उस दानिय्येल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़, और किसी विषय में उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सकेंगे"** (दानि.6:5)। यह कहा जाता है, **"शैतान उनकी सहायता करता है जो बुराई की ओर झुके हुए होते हैं"**। चालाक प्रतिद्वन्द्वियों ने दानिय्येल के खिलाफ दोष लगाने के लिये उपाय ढूंढने में विलम्ब नहीं किए। उन्होंने इस मौके पर दानिय्येल की प्रार्थना में विघ्न डालने का प्रयास किया जो वह यहोवा से निरन्तर करता चला आया। उन्होंने राजा के सम्मुख यह इच्छा ज़ाहिर की कि सारे मादी साम्राज्य के निवासी 30 दिन के लिये राजा से प्रार्थना करें, अन्य किसी देवी देवता से

नहीं। वहां यूं लिखा है, **"तब वे अध्यक्ष और अधिपति राजा के पास उतावली से आए, और कहा, हे राजा दारा, तू युग-युग जीवित रहे। राज्य के सारे अध्यक्षों ने, और हाकिमों, अधिपतियों, न्यायियों, और गवर्नरों ने भी आपस में सम्मति की है, कि राजा ऐसी आज्ञा दे और ऐसी कड़ी आज्ञा निकाले, कि 30 दिन तक जो कोई हे राजा, तुझे छोड़ किसी और मनुष्य व देवता से विनती करे, वह सिंहों की मान्द में डाल दिया जाए। इसलिये अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस पत्र पर हस्ताक्षर कर, जिससे यह बात मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार अदल-बदल न हो सके। तब दारा राजा ने उस आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया" (दानि.6:6-9)** ।

अब आप बताइये इस भक्ति और आराधना में कोई सच्चाई और ईमानदारी है? सिर्फ एक व्यक्ति को फंसाने के लिये यह आराधना संबंधी आज्ञा निकलवाई है। इसमें ईर्ष्या और जलन छिपा हुआ है। एक बार एक स्त्री एक गायक से कहने लगी जब वे उनके घर आए, कि आप कुछ गीत गाइये। तब गायक ने पूछा कौन से राग में गाऊं ? तब वह स्त्री ने कहा कि, **"कोई भी राग गाइयें मुझे तो सिर्फ पड़ोसी को परेशान करना है"**। भला बताओ लोग कुछ अच्छे कार्य बुरी मनोवृत्ति से करना और कराना चाहते हैं।

दारा राजा ने इन षड़यंत्रकारियों की मनोवृत्ति को जाने बिना आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। बाद में राजा को मालूम हुआ कि यह दानिय्येल को फंसाने के लिये किया गया था। लेकिन राजा कुछ नहीं कर पाया। मादियों और फारसियों का नियम पारित होने के पश्चात आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर होने के पश्चात राजा भी उसमें परिवर्तन नहीं ला सकता था। राजा भी काफी उदास हुआ।

दानिय्येल को पता चला कि इस प्रकार के आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर हो चुका है तो वह डरा नहीं, यह भी नहीं सोचा कि चलो 30 दिन की तो बात है राजा से प्रार्थना किया जाए। या 30 दिन कोई भी प्रार्थना न की जाए-नहीं। दानिय्येल ने क्या किया, वचन में लिखा है,-**"जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया जिसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियां यरुशलेम**

के सामने खुली रहती थी, और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेक कर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा। तब उन पुरुषों ने उतावली से आकर दानिय्येल को अपने परमेश्वर के सामने बिनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया'' (दानि.6:10,11)।

आज्ञा पत्र की कठोरता और मादी फारसी लोगों के अटल नियम से वह डरा नहीं। उसने चाहा कि नियम न बदले पर परमेश्वर सिंहों को बदल डाले। परमेश्वर पर और परमेश्वर की सामर्थ्य पर उसका पूरा–पूरा विश्वास था। दानिय्येल को मालूम था परमेश्वर उसको सिंहों से बचायेगा। वह दिन में तीन बार प्रार्थना करता था सो उस परिस्थिति में भी करता था। उसको मालूम था आग से बचाने वाला सिंहों से भी बचायेगा ।

क्या हुआ– दानिय्येल को सिहों के मान्द में डाल दिया गया। क्योंकि उन्होंने दानिय्येल के संबंध में यह कह कर शिकायत की कि, **''यहूदी बन्धुओं में से जो दानिय्येल है, उसने, हे राजा, न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया, और तेरे हस्ताक्षर किये हुए आज्ञा पत्र की ओर, वह दिन में तीन बार विनती किया करता है'' (दानि.6:13)** । यह षड्यन्त्र रचाने वालों ने सोचा, राजा क्रोधित हो जायेंगे और तुरन्त दानिय्येल को सिंहों के मान्द में डालने की आज्ञा देंगे। परन्तु मामला ऐसा हुआ नहीं। बल्कि उसके बदले राजा काफी उदास हुआ लिखा है, **''यह वचन सुनकर, राजा बहुत उदास हुआ, और दानिय्येल को बचाने के उपाय सोचने लगा; सूर्य के अस्त होने तक उसे बचाने का यत्न करता रहा। इसके अलावा अधिकारियों ने नियम की आड़ में उसका फायदा उठाते हुए राजा को डराने लगे– कहा, ''तब वे पुरुष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे, हे राजा, यह जान रख, कि मादियों और फारसियों में यह व्यवस्था है कि जो मनाही व आज्ञा राजा ठहराए, वह नहीं बदल सकती'' (दानि.6:14,15)** ।

राजा के द्वारा दानिय्येल को बचाने का उपाय निष्फल हो गया। राजा ने आज्ञा दी कि दानिय्येल को सिंहों के मान्द में डाल दिया जाए (दानि. 6:16)। याद रखिये दानिय्येल को राजा नहीं बचा सकते परन्तु परमेश्वर

बड़े आराम से बचा सकता है। राजा के पास दानिय्येल को बचाने के संबंध में सैकड़ों मजबूरियां हो सकती हैं पर परमेश्वर के पास ऐसी कोई मजबूरी नहीं है इसी कारण वचन में यह वर्णन आया है, **"यहोवा की शरण लेनी, प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है"** (भजन–118:8,9)।

दानिय्येल को शाम के समय सिंहों की मान्द में डाल दिया। उसके ऊपर का ढक्कन बन्द करके मुहर भी लगा दी गयी। रातभर दानिय्येल ने सिंहों के बीच में आनन्द के साथ समय बिताया। परन्तु दारा राजा अपने महल के सुन्दर मुलायम गद्दे पर सो नहीं पाया। परमेश्वर के दासों को सताने वाले तुम्हारी नींद तुमसे छीन ली जायेगी। निद्रा देवी तुमसे रूठ कर चली जायेगी। किसी प्रकार से राजा रात बिताई। भोर को उठा और सिंहों के मान्द के द्वार पर आ खड़ा हुआ। पुकार कर रोती हुई आवाज़ में दानिय्येल से पूछता है, **"राजा गड्डे के निकट आया, तब शोक भरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानिय्येल से कहा, हे दानिय्येल हे जीवित परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है"?** (दानि.6:20) ।

दानिय्येल रात को बिना किसी हानि से सोया। मैं सोचता हूं दानिय्येल के गड्डे के भीतर पहुंचने से पहले स्वर्गदूत वहां पहुंच गया और एक कक्षा चलाई और उन सिंहों को समझाया, देखो अभी एक वयोवृद्ध को, एक बूढ़े आदमी को यहां डालने वाले हैं उसके शरीर में हड्डी और चमड़ी है ज्यादा से ज्यादा चार–पांच किलो मटन होगा। उसे खाना मत। इतना ही नहीं वह 88 साल का है सो उनकी हड्डी काफी मजबूत है, इस कारण तुम लोगों के दांत भी टूटने की संभावना है। इसलिये उनको खाना नहीं। कल बहुत से लोग सपरिवार यही डाले जायेंगे। वे जवान हैं और हट्टे–कट्टे हैं बढ़िया जेवनार होगा। सो आज रात और रुक जाओ।

इस प्रकार दण्ड देकर मनुष्यों को सिंहों के मान्द में डालते हैं तो उन सिंहों को चार–पांच दिन भूखा रखते हैं, ताकि जो व्यक्ति डाला जाए वह तुरन्त उनका शिकार बन जाए। यदि ऐसा है तो एक और दिन परमेश्वर की आज्ञा से सिंहों के लिये उपवास घोषित हो गया। जब परमेश्वर का आदेश हुआ तो वे मान गये और उस रात शान्त रहे। दानिय्येल नीचे पहुंचा तो

उन्होंने बड़े प्रेमभाव से दानिय्येल का स्वागत किया। परमेश्वर ने अपने दूतों को भेजकर अपने दास को बचाया। सिंहों के मुंह को बन्द रखा। दानिय्येल एक सिंह के पेट के मुलायम बालों पर सिर रखकर आराम से सोया मानों तकिये पर सिर रखकर सो रहा हो। प्यारे भाई–बहन जहां मनुष्य आपकी सहायता नहीं कर सकता। आपको बचा नहीं सकता वहां परमेश्वर आपको बचा सकता है। राजा सहायता न कर पाने से निराश मत हो जाइये, और क्रूर सिंहों को याद करके आतंकित भी मत हो जाइये, परमेश्वर उठेगा और शत्रु तितर–बितर हो जायेंगे ।

रात भर सुरक्षित रहने के पश्चात दानिय्येल ने यह कहकर अपनी गवाही दी कि, **"तब दानिय्येल राजा से कहा, हे राजा, तू युग–युग जीवित रहे मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की, इसका कारण यह है, कि मैं उसके सामने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैंने कोई भूल नहीं की। तब राजा ने बहुत आनन्दित होकर, दानिय्येल को गड्डे में से निकाला गया, और उस पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था"** (दानि.6:21–23) । इतना ही नहीं राजा ने आज्ञा दी कि जिन पुरुषों ने दानिय्येल की चुगली खाई थी, वे अपने–अपने लड़के वालों और स्त्रियों समेत लाकर सिंहों के गड्डे में डाल दिये जाएं; और वे गड्डे की पैंदी तक भी न पहुँचे कि सिंहों ने उन पर झपटकर सब हड्डियों समेत उनको चबा डाला (दानि.6:24)। सिंह परमेश्वर के लोगों को और बगैर परमेश्वर के जीने वाले लोगों को बराबर पहचानते हैं। दानिय्येल को हानि नहीं पहुँचाई पर दानिय्येल के विरोधियों के हड्डियों को भी चबा डाला ।

याद रखिये परमेश्वर के भय मानने वालों को और किसी चीज़ से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप परमेश्वर का भय मानेंगे तो परमेश्वर आपके लिये अपनी महानता को प्रकट करेगा। आपकी रक्षा करेगा। दानिय्येल सिंहों के बीच में भी आराम से सोया क्योंकि परमेश्वर अपने भक्त को नीन्द दान देता है।

उसके बाद राजा ने एक और आज्ञा पत्र लिखकर तैयार किया और

उसमें लिखा है, "**तब दारा राजा ने सारी पृथ्वी के रहने वाले देश-देश और जाति-जाति के सब लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों के पास यह लिखा, तुम्हारा कुशल हो। मैं यह आज्ञा देता हूँ कि जहां-जहां मेरे राज्य का अधिकार है, वहां के लोग दानिय्येल के परमेश्वर के सम्मुख कांपते और थरथराते रहें, क्योंकि जीवित और युगानुयुग तक रहने वाला परमेश्वर वही है। उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर रहेगी। जिसने दानिय्येल को सिंहों से बचाया है, वही बचाने वाला और छुड़ाने वाला है; और स्वर्ग में और पृथ्वी पर चिन्हों और चमत्कारों को प्रकट करने वाला है**" (दानि. 6:25-27) ।

यह क्या ही अद्भुत बात है जिसने दानिय्येल के खिलाफ आज्ञा पत्र तैयार किया वही अब दानिय्येल के अनुकूल दूसरा आज्ञा पत्र तैयार कर रहा है और उसके द्वारा दानिय्येल के परमेश्वर का सम्मान कर रहा है। समस्त अधीनस्थ लोगों से दानिय्येल के परमेश्वर से डरने का आदेश दे रहा है। ऐसा शासनकर्ता जो जीवित परमेश्वर को मानने वाला और उसको अंगीकार करने वाला और उसका भय मानने वाला किसी भी देश के लिये एक आशीष का कारण बनेगा। काश कि सब अधिकारीगण जीवित ईश्वर की आराधना करने वाले बन जाते और भ्रम से बचते और अपने लोगों को, देशवासियों को भी भ्रम से बचा लेते और सच्चे परमेश्वर की आराधना के लिये प्रोत्साहित करते तो कितना अच्छा होता।

अन्त में यह लिखकर इस अध्याय को समाप्त किया है कि दानिय्येल, दारा और कुस्रु फारसी, दोनों के राज्य के दिनों में भाग्यवान रहा। परमेश्वर को मानने वाला, उसका भय मानने वाला, उससे प्रार्थना करने वाला कभी भी लज्जित नहीं होगा। वह भाग्यवान एवं कुशल रहेगा। प्रिय पाठक आप इस मामले में कहां है? क्या आपने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण कर पिता परमेश्वर को प्रसन्न किया है? यदि नहीं तो आज का दिन आप उसके लिये उपयोग करें। आपका भी जीवन विपरीत परिस्थितियों से गुजरने के पश्चात् भी भाग्यशाली होगा। प्रभु आपकी सहायता करे।

अध्याय 7

दानिय्येल द्वारा "जन्तुओं का स्वप्न"

इस अध्याय का वर्णन फिर हमें पीछे की ओर ले जाता है। लिखा है, **"बाबुल के राजा बेलशस्सर के पहले वर्ष में दानिय्येल ने पलंग पर स्वप्न देखा। तब उसने उस स्वप्न को लिखा, और बातों का सारांश भी वर्णन किया" (दानि–7:1)**। 6 अध्याय के अंतिम भाग में जब हम आते हैं तो वहां बेलशस्सर की मृत्यु के बारे में वर्णन आया है फिर सात अध्याय में आगे का वर्णन आना चाहिये। मादी फारसी साम्राज्य का वर्णन आना चाहिये। लेकिन यहां ऐसा न करते हुए हमें काफी पीछे की ओर ले जाते हैं। पाठक इस वर्णन से कुछ कठिनाई महसूस कर सकते हैं परन्तु यहां उसकी आवश्यकता नहीं है। याद रखिये इस भविष्यवाणी में एक साधारण सी बात है विषय को बहुत आगे ले जाने के पश्चात् किसी बात को बताने के लिये लोगों का ध्यान पीछे की ओर ले जाते हैं विषय को या समय को दोहराता है।

प्रकाशितवाक्य में भी यही बात दोहराई गयी है। अधिक जानकारी के लिए लेखक द्वारा लिखित पुस्तक "प्रकाशितवाक्य का अध्ययन" पढ़िए। यहां, सात अध्याय से भविष्यवाणी का वर्णन आरंभ होता है अभी तक दानिय्येल अन्य लोगों के स्वप्न की व्याख्या कर रहा था। पर यहां से आगे वह स्वयं स्वप्न एवं दर्शन देख रहा है और उसका अर्थ स्वर्गदूतों से हासिल कर रहा है। यहां दानिय्येल ने जो स्वप्न देखा उसका समय बता रहा है। दानिय्येल बेलशस्सर के राज्य के पहले वर्ष में पलंग पर था रात के समय आराम कर रहा था। राज्य संबंधी कोई जवाबदार पद उसके पास नहीं था। आराम का जीवन था।

इस समय वह परमेश्वर के वचन के जो मूसा की व्यवस्था, भजन की पुस्तकों और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें और अन्य जो भी साहित्य उपलब्ध था, उनका अध्ययन और प्रार्थना में समय व्यतीत करता था । इस सेवानिवृत जीवन में वह मृत्यु का रास्ता देखता हुआ पलंग पर पड़ा हुआ आराम नहीं कर रहा था। पर परमेश्वर के वचन पर ध्यान मनन और प्रार्थना में समय व्यतीत कर रहा था। उसके लोगों की बन्धुवाई समाप्त होने और स्वदेश लौटने से संबंधित विचार भी उसके मन में था (दानि-9:1,2) सेवानिवृत जीवन आराम से काटने का उत्तम तरीका यही है।

यह स्वप्न लगभग B.C.541 का है और उसम दानिय्येल 84 साल का रहा होगा । नबूकदनेस्सर राजा की मृत्यु के कुछ 23 वर्ष की बात हो सकती है। दानिय्येल स्वयं परमेश्वर द्वारा भविष्य में किये जाने वाले कार्यों को दर्शन में देख रहा है। पहले छः अध्यायों के बिना इन अन्तिम अध्यायों का अर्थ समझना मुश्किल है, पहले भाग में इन्हीं बातों का एक बाहरी एवं सांसारिक अर्थ बताया गया है। दानिय्येल यहां वही बात जो नबूकदनेस्सर ने मूर्ति के द्वारा देखा जो चार साम्राज्यों से संबंधित था, दूसरे रूप में कहा जाए तो कुछ स्पष्ट एवं विस्तृत रूप में देख रहा है।

इस बात में एक बहुत बड़ा अन्तर हम देखते हैं। जब परमेश्वर ने साम्राज्यों का स्वप्न नबूकदनेस्सर को दिखाया तो एक मनुष्य के रूप में दिखाया, पर वह कई प्रकार के धातुओं से बना हुआ था। सोने से आरंभ होकर मिट्टी से अन्त होता है। एक आकर्षक वस्तु से आरंभ होकर एक साधारण वस्तु में जिसमें स्वभाविक रूप में कोई आकर्षण नहीं, समाप्त होता है। मानवीय दृष्टि से यह साम्राज्य बड़ा आकर्षक था । परन्तु ध्यान देने पर यह देखा जा सकता है कि वह उन्नति की ओर नहीं पर अवनति की ओर उतरते और विनाश की ओर जा रहे हैं। याद रखिये आज का शासन उन्नति नहीं कर रहा है पर अवनति की ओर उतर रहे हैं। एक दिन परमेश्वर इन्हें चकनाचूर करेगा और हवा में उड़ा देगा।

इस साम्राज्यवाद को जो बड़े आकर्षक वस्तु के रूप में सांसारिक व्यक्ति, नबूकदनेस्सर राजा ने देखा, वहीं बात एक आत्मिक व्यक्ति को, एक भविष्यवक्ता को, दानिय्येल को दिखाई गई तो उसको असली रूप में

दिखाया गया। चार साम्राज्यों को चार पशुओं के रूप में दिखाया गया। मतलब मानव के लिये जो अच्छा और आकर्षक लगता है वही एक आत्मिक व्यक्ति असली रूप में देखता है। मतलब संसार की शासन प्रणाली और शासनकर्ता पशु समान है सो जो चीज नबूकदनेस्सर को मूर्ति द्वारा दिखाया वही परमेश्वर ने अपने दास दानिय्येल को पशुओं को अलग–अलग लेकर अध्ययन करने का प्रयास करतें हैं।

ये चारों पशु समुद्र के पानी से निकल कर आ रहे हैं। यह समुद्र भूगोल के अनुसार भूमध्य सागर है। लेकिन यहां भविष्यवाणी की भाषा में वर्णन किया गया है, सो हमें यह देखना पड़ेगा कि यह समुद्र और पानी भविष्यवाणी की भाषा में किस बात को दर्शाता है। भविष्यवाणी में समुद्र और पानी, लोग और जातियां और भाषाओं को दर्शाता है (प्र.वा–17:15; यशा–17:12,13)। यहां लिखा है, **"मैंने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चौमुखी आंधी चलने लगी। तब समुद्र में से चार बड़े–बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न थे, निकल आए " (दानि–7:2,3)।** यह आंधी राजनैतिक आन्दोलन को दर्शाती है। लोगों के बीच में वर्तमान शासन प्रणाली में परिवर्तन लाने के क्रान्तिकारी आन्दोलन को दर्शाती है। चौमुखी आंधी का मतलब है पृथ्वी की चारों दिशा से, सब लोगों और जातियों एवं भाषाओं से एक सही शासन की मांग करते हुए किये जाने वाले क्रांन्तिकारी कार्य को यह आंधी संकेत करती है। उस समय जनसमुदाय रूपी सागर में उथल–पुथल हुई और उस समय तक संसार में चल रहे शासन प्रणाली में बड़ा परिवर्तन आया और साम्राज्यवाद संसार में प्रारंभ हो गया। इस साम्राज्यवाद को ये चार पशु संकेत देते हैं। इन पशुओं के स्वभाव के अनुसार इन साम्राज्यों का शासन और शासन का स्वभाव रहा है।

एक प्रकार की शासन प्रक्रिया कुछ समय तक चलने के पश्चात लोगों में असन्तुष्टि का अहसास होने लगता है और वे दूसरे प्रकार के शासन के लिये मांग करते हुए क्रान्तिकारी कार्य में उतर आते हैं यह दुनिया के इतिहास की एक सत्यता है। रूस में जार बादशाहों का शासन बहुत दिनों तक चलता रहा। लोग थक गये और बड़ी क्रान्ति खड़ी की। उसके फलस्वरूप वहां मजदूरों की पार्टी का शासन, साम्यवाद का शासन आ गया। भारत में लोग हर 5 साल बाद नयी पार्टी का शासन लाने में इच्छुक

रहते हैं। कोई भी एक पद्धति से मनुष्य सदा सहयोग देना नहीं चाहते हैं। सदा परिवर्तन के विचार में लोग रहते हैं। लेकिन यहां किसी एक देश का नहीं परन्तु पूरे संसार में आए परिवर्तन का वर्णन करता है। उस समय तक चले राजाओं का शासन खत्म करके साम्राज्यवाद आरंभ कर दिया। इस साम्राज्यवाद में संसार पर शासन किये गये 4 प्रमुख साम्राज्य हैं। बाबुल, मादी, फारसी, यूनान और रोमी बादशाहत। इन चारों साम्राज्यों को चार जन्तुओं द्वारा प्रस्तुत किया गया है। अब हम एक–एक पशु के बारे में दिये गये वर्णन के अनुसार इन साम्राज्यों के स्वभाव को समझने का प्रयास करेंगे।

1. सिंह

(बाबुल साम्राज्य - B.C. 606-536)

इनमें प्रथम पशु सिंह है। इस पशु के स्वभाव के बारे में अध्ययन करें तो हमें पता चलेगा कि इस साम्राज्य का स्वभाव क्या है। यहां लिखा है, **"तब समुद्र में चार बड़े–बड़े जन्तु, जो एक दूसरे से भिन्न थे, निकल आए। पहला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे। और मेरे देखते–देखते उसके पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर से उठाकर, मनुष्य की नाई पांवों के बल खड़ा किया गया, और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया" (दानि–7:3–4)**। इसके भेद की चर्चा करने से पहले हम सिंह के बारे में थोड़ा सा विचार करें। सिंह जंगली जानवरों का राजा है। यह अन्य जंगली जानवरों में सबसे ज्यादा बलवान, शूरवीर एवं हिम्मतवाला है। इसका सिर गोल एवं मोटा है और उसका कान गोल एवं अग्नि समान आंखें भी हैं। उसका मुंह काफी चौड़ा है और उसके दांत काफी मजबूत हैं। लम्बी पूंछ, चौड़ा सीना एवं मोटे–मोटे एवं बलवान पांव एवं पांवों में आवश्यकतानुसार निकालने और अन्दर दबाने वाले मुड़े हुए और मजबूत नाखून हैं। नर सिंह की गर्दन के दोनों तरफ बाल पाये जाते हैं। मादा को ऐसा नहीं है। बहुत दूर से ही अन्य जानवरों को सूंघ कर पता लगाने की शक्ति इनके पास है। बिल्ली के समान आधी आंखें खोल कर कुछ समय वे सोते हैं। इसकी गर्जन बिजली के गर्जन के समान ही है। सभी जानवर इनसे डरते हैं। नर अक्सर गुफा में सोता रहता है। 95% शिकार मादा सिंह करती है। नर केवल 5% शिकार करते हैं। बाकी उसका

काम सन्तान उत्पत्ति में मन लगाना और सोते रहना है। इन्हें अपने बच्चों से बहुत अधिक प्यार है।

खैर हमारा विषय ये सब नहीं है। यहां जो वर्णन पाया जाता है, उसके अनुसार हम हमारे अध्ययन मे आगे बढ़ेंगे। यहां दानिय्येल ने जो सिंह का दर्शन देखा है वह समुद्र से निकल कर आ रहा है। यह उस प्रथम साम्राज्य को दर्शाता है। यहां लिखा है, **"पहला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे। और मेरे देखते-देखते उसके पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर से उठा कर, मनुष्य की नाई पांवों के बल खड़ा किया गया, और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया" (दानि-7:4)**। इसी अध्याय के 15 पद से लेकर 18 पद तक इसकी व्याख्या या इसका अर्थ बताया गया है। उससे यह पता चलता है कि ये चारों जन्तु संसार के चार साम्राज्यों का संकेत करता है। यदि ऐसा है तो यह पहला पशु, साम्राज्यों की सूची में पहला साम्राज्य है। जैसे धातुओं में सबसे सुन्दर और कीमती धातु के द्वारा बाबुल साम्राज्य का संकेत नबूकदनेस्सर को दिया गया है ठीक इसी प्रकार पशु जगत में सबसे बड़ा पशु, पशुओं का राजा, सिंह के द्वारा बाबुल का संकेत दिया।

सो यह सिंह बाबूल साम्राज्य को दर्शाता है परमेश्वर के वचन में सम्राट नबूकदनेस्सर को सिंह की संज्ञा दी गयी है। आप पढ़कर देखिये, **"सिय्योन के मार्ग में झंडा खड़ा करो, अपना सामान बटोर के भागो, खड़े मत रहो, क्योंकि मैं उत्तर की दिशा से विपत्ति और सत्यनाश ले आया चाहता हूं। एक सिंह अपनी झाड़ी से निकला, जाति-जाति का नाश करने वाला, चढ़ाई करके आ रहा है......." (यिर्मयाह-4:6,7)**।

इसके अलावा उकाब पक्षी का वर्णन भी बाबुल के साथ जुड़ा हुआ है। लिखा है: यहोवा का वचन मेरे पास पहुंचा है, मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के घराने से यह पहेली और दृष्टान्त कह ; प्रभु यहोवा यों कहता है, एक लम्बे पंख वाले, परों से भरे और रंग-बिरंगे बड़े उकाब पक्षी ने लबानोन जाकर एक देवदार की फुनगी नोच ली। तब उसने उस फुनगी की सबसे ऊपर की पतली टहनी को तोड़ लिया, और उसे लेन-देन करने वालों के देश में ले जाकर व्यापारियों के एक नगर में लगाया (यहेज-17:1-4)।

फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, उस बलवा करने वाले घराने से कह, क्या तुम इन बातों का अर्थ नहीं समझते ? फिर उसने कहा, बाबुल के राजा ने यरूशलेम जाकर उसके राजा और प्रधानों को लेकर अपने यहां बाबुल में पहुंचाया (यहेज–17:11,12)।

इन दोनों वर्णनों में उकाब पक्षी का भी संबंध बाबुल से है। सो यहां के वर्णन के अनुसार सिंह बाबुल साम्राज्य का संकेत है।

उकाब

उकाब, पक्षियों में राजा है। यह ऊंचाई को पसन्द करता है। वह ऊंचे स्थान पर अपना घोंसला बनाता है। वह चट्टान में रहता है और चट्टान की चोटी और दृढ़ स्थान में बसेरा करता है। उसकी आंखें बहुत तेज है और वह दूर से अपना भोजन वस्तु देख सकता है। जितनी ऊंचाई की ओर जाता है उतनी सफाई से उसका चारा दिखाई देता है। उसके बच्चे भी खून चूस लेते हैं।

उकाब जब बूढ़ा हो जाता है तो वह कुछ समय के लिये किसी ऊंचे पहाड़ पर जाकर बैठता है और अपनी चोंच से अपने शरीर के परों को नोंच डालता है और काफी दिनों तक बैठ जाता है। कुछ समय के पश्चात् उसके शरीर में नया पर और पंख तैयार हो जाता है। वह अपनी जवानी को फिर हासिल कर लेता है। यह प्रक्रिया उसके जीवन में कई बार दोहराती है। इस कारण बाइबल धर्मशास्त्र में भी विश्वासियों की आत्मिक जवानी की चर्चा करते समय उकाब का उदाहरण दिया है (भजन–103:5)।

उकाब पक्षी की दूसरी विशेषता यह है अर्थात उसके बच्चों को उड़ने का प्रशिक्षण देने की विधि। पहले ही कहा कि वह अपना घोंसला किसी ऊंचे स्थान में रखता है। जब बच्चा बड़ा होता जाता है और उड़ने लायक होता है तो माता–पिता घोंसले की एक–एक लकड़ी को निकालते जाते हैं। अन्त में एक लकड़ी पर वह बैठा रहेगा। उस स्थिति में बैठकर वह अपना पंख चलाना सीखता है। कुछ दिन बाद वह एक लकड़ी को भी निकाल लेते हैं और बच्चा ऊंचाई से नीचे की ओर जाता है और लगता है अब नीचे गिरकर

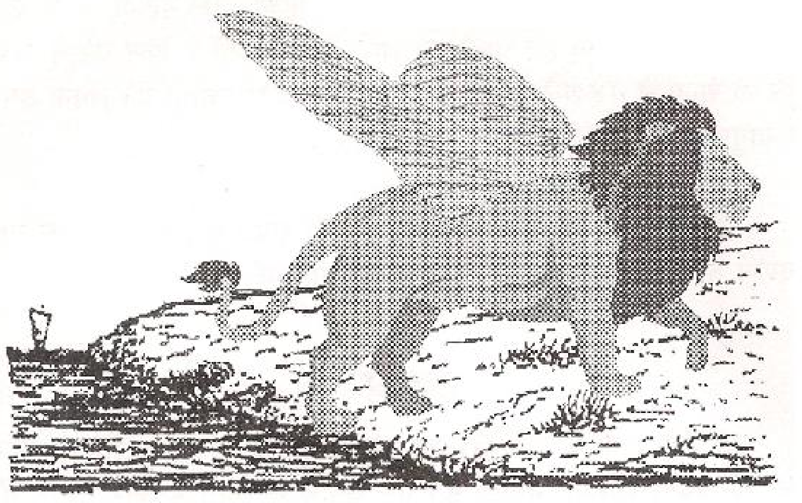

सिंह (बाबुल साम्राज्य)
दानि. 7 : 1 - 4

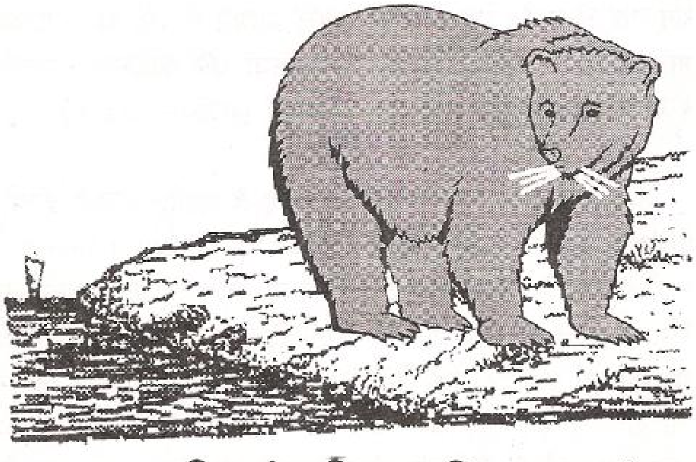

रीछ (मादी फारसी साम्राज्य)
दानि. 7 : 5

मर जायेगा तो मां एकदम तेजी से नीचे की ओर उड़कर बच्चे को अपने पंख के ऊपर उठा लेती है। फिर ऊंचाई की ओर उड़ने लगती है । ऊपर जाकर फिर गिरा देती है। यह प्रक्रिया कई बार दोहराती है। अन्त में वह बच्चा भी आकाश की ऊंचाई में उड़ने लगता है। इस अनुभव को ध्यान में रखकर मूसा लिखता है परमेश्वर ने उकाब के पंखों में उठाया (निर्ग–19:4; व्यवस्था–32:10,11)। आत्मिक लोगों के बल और शक्ति के लिये एवं जवानी के लिये उकाब को ही उदाहरण में लिया है (यशा–40:31)।

सो उकाब पक्षी ऊंचाई की ओर उड़ने वाला पक्षी है और तेज उड़ने वाला पक्षी है। बाबुल के लिये पशुओं में सिंह और पक्षियों में उकाब के पंख की संज्ञा बहुत ही ठीक जमती है। सिंह शक्तिशाली पशु और उकाब तेज उड़ने वाला पक्षी। सिंह बाबुल साम्राज्य को संकेत करता है तो उकाब पक्षी उस साम्राज्य के सैन्य बल और तेजी से सारे राष्ट्रों पर आक्रमण कर उन्हें अपने अधिकार में लेने के विचार को व्यक्त करता है। दानिय्येल के देखते–देखते उसके पंखों के पर नोचे गये और वह भूमि पर गिर पड़ा। यह नबुकदनेस्सर राजा के घमण्ड के कारण उसको अधिकार और सिंहासन से निकाल कर पागल बनाकर जंगल भेजने की ओर संकेत करता है। फिर सात साल के पश्चात् उसको दण्ड से मुक्त कर वापस अधिकार में लेने के लिये यह कहा गया है कि **"वह भूमि पर से उठाकर, मनुष्य की नाईं पांवों के बल खड़ा किया गया; और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया" (दानिय्येल–7:4)**। यह विवरण मूर्ति के स्वप्न में प्रकट नहीं किया गया है।

2. रीछ

(मादी फारसी साम्राज्य – B.C. 536-330)

दानिय्येल ने अपने रात्रि दर्शन में एक और पशु को देखा। यह सब दर्शन दानिय्येल ने एक ही रात में देखे हैं। यह दूसरा पशु रीछ के समान था । लिखा है: **"फिर मैंने एक और जन्तु देखा जो रीछ के समान था, और एक पांजर के बल उठा हुआ था, और उसके मुंह में दांतों के बीच में तीन पसली थी; और उससे कह रहे थे, उठकर बहुत मांस खा" (दानि–7:5)**।

यह दूसरा जन्तु मादी फारसी साम्राज्य का संकेत है। यह मूर्ति के सीना और हाथों के भाग से बताया गया था। दानिय्येल जब देख रहा था तो इस जन्तु ने अपना एक पांव उठाकर रखा था। यह उठा हुआ पांजर मादी साम्राज्य का संकेत है। यह दूसरा साम्राज्य दो राष्ट्रों का एक संयुक्त शासन रहा है। दो शक्ति एक साथ मिलकर शासन में आई। एक कमजोर और दूसरा शक्तिशाली रहा। मादी लोगों ने पहले शासन किया जो तुलनात्मक दृष्टिकोण से कमजोर थे। यह मूर्ति में स्पष्ट दिखाई देता था। मूर्ति का बाया हाथ उस कमज़ोर राज्य को और दाहिना हाथ शक्तिशाली फारसी राज्य को संकेत कर रहा है।

दांतों तले तीन पसली का संकेत उन राज्यों का है जिन पर यह साम्राज्य विजयी हुए थे। ये राज्य लीबिया, मिस्र, बाबुल आदि है। यह एक विजयी राज्य के रूप में धीरे–धीरे राज्यों पर विजय प्राप्त करते हुए आ रहे थे। उन लड़ाइयों में बहुत से राज्य पराजित हुए। उनमें से प्रमुख तीन राज्य हैं और वे ये तीनों राज्य हैं जिनको तीन परालियों के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यह रीछ तीन पसलियों को मुंह में रखकर आने का मतलब है, वे शक्तिशाली राज्यों पर विजयी है।

यह जन्तु रीछ देखने में न तो सुन्दर है न ही उसकी चाल में तेजी है। यह बहुत धीमी गति से चलने वाला पशु है। उसका शरीर बड़ा भारी है। इससे यह प्रकट है कि मादी फारसी लोग अपनी कार्यकुशलता, तेज रफ्तार या योग्यता के कारण नहीं जीते बल्कि वे अपनी सेना की बहुतायत के कारण ही जीते हैं। वे अपनी लड़ाईयां सेना की बड़ी संख्या के कारण जीत पाए। कुछ आंकड़े इस प्रकार से बताते हैं कि यूनान के खिलाफ क्षयर्ष राजा जो फारसी साम्राज्य का सम्राट था, लड़ने गया तो उन्होंने अपने साथ 25,00,000 सेना को ले गये। यह कुछ हद तक अतिश्योक्ति या आयुक्ति कहा जा सकता है। पर यह उस वर्णन की पुष्टि करता है जहां इस पशु के लिये यह वर्णन आया है कि, **"उठकर बहुत मांस खा"**।

यह साम्राज्य एक संपूर्ण साम्राज्यवादी या राजतन्त्र (absolute monarchy) देश नहीं था। बल्कि यह एक प्रकार से प्रतिनिधि सभा या

संसदों द्वारा चलाया जाता था। इस प्रतिनिधि सभा (Parliament) में नियम बनाया जाता था जिसको दुरुस्त करने का अधिकार सम्राट को था। परन्तु एक बार नियम बन जाए तो उसको सम्राट भी बदल नहीं सकता था। इसी कारण दानिय्येल के विरुद्ध सिंहों के मान्द में डाले जाने वाले नियम को दारा राजा बदलने में असमर्थ रहे।

उठकर मांस खाने का अर्थ यह है कि वे खूब लड़ाईयां करेंगे और बहुत से देशों के ऊपर विजय प्राप्त करेंगे और लाखों लोगों को लड़ाई में मार डालेंगे। उनके भारी विजय की ओर संकेत करता है।

3. तीसरा पशु – चीता (यूनान साम्राज्य B.C. 330-146)

दानिय्येल ने एक चौथा पशु देखा और इस प्रकार वर्णन किया गया है: **"इसके बाद मैंने देखा, कि चीते के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पक्षी के से चार पंख हैं; और उस जन्तु के चार सिर थे; और उसको अधिकार दिया गया"।**

जब दानिय्येल को साम्राज्यवाद का दर्शन दिया गया तो जन्तुओं के द्वारा दिया गया जिसका उद्देश्य प्रारंभ में हम देख चुके हैं। यहां एक और विशेष बात देख सकते हैं। जैसा कि मूर्ति में दिखाया गया और यहां भी वही बात देख सकते हैं। मूर्ति में साम्राज्यवाद का दर्शन दिया तो बहुमूल्य धातु से प्रारंभ होकर मिट्टी अर्थात मूल्य रहित वस्तु की ओर उतरते जाते हैं। ठीक इसी प्रकार यहां जन्तुओं द्वारा प्रकट किया तो भी वही क्रम हम देख सकते हैं। पहले सिंह जो पशुओं में महत्वपूर्ण पशु अर्थात् पशुओं में राजा है और उकाब पक्षियों में सर्वश्रेष्ठ पक्षी है। फिर उससे कम दर्जे के पशु दिखाए गये हैं। मतलब साम्राज्यवाद उन्नति की ओर नहीं बल्कि अवनति की ओर जाते हैं। यह साम्राज्यवाद की पराजय या पतन की ओर संकेत करता है।

यही यूनान (Greece) साम्राज्य को बताते हुए चीते को दर्शाया है। चीता देखने में बहुत ही सुन्दर है। उसकी चमड़ी पर सुन्दर–सुन्दर रेखाएं बनी हैं। पीले रंग की पीठ पर काली–काली रेखाएं देखने में बहुत ही सुन्दर

हैं। यह बहुत ही क्रूर, तेज रफ़्तार से दौड़ने वाला और किसी प्रकार से नियन्त्रित नहीं किया जाने वाला पशु है। चीता फलस्तीन देश में बहुतायत से पाए जाते थे। यह दिखने में ज्यादा बड़ा नहीं पर अपने हाथ से जानवरों को मार डालने में तेज और शक्तिशाली है। यह गुप्त रूप में आक्रमण करने वाला और बदले की भावना से भरपूर है।

यहां यूनान को संकेत करने वाला चीता कुछ अजीब रूप में बताया गया है। इस रूप का चीता किसी भी जंगल में नहीं पाया जाता है। इसकी पीठ पर चार पंख हैं। 4 संख्या 4 दिशा का संकेत है। पंख यूनानी सैनिकों के तीव्र गति से दुनियां के चारों दिशाओं में जाकर आक्रमण करने की गति को दर्शाता है। चीते के शरीर पर जो रंग है वह यूनान देश के विभिन्न रंगों का संकेत है। मूर्ति में यह साम्राज्य का भाग पीतल से बने पेट और कमर का भाग है। यूनान साम्राज्य की सेना के युद्ध के लिये उपयोग किया जाने वाले शस्त्र और हथियार पीतल के बने थे। पीठ पर दर्शाए गये चार पंख नीचे उड़ने वाले (मुर्गी जैसे) पक्षियों के पंख हैं। अंग्रेजी अनुवाद से यह पता चलता है। यूनान की सेना ने जो भी युद्ध किये वह सब निचले स्थानों में (low land war) रहा हैं। इसके लिये इतिहास में हमें प्रमाण मिलता है। लेकिन उनकी लड़ाईयां आकस्मिक एवं तेज रफ्तार की होने से चन्द समय के अन्दर उन्होंने पूरी दुनियां को अपने अधीन कर लिया। चीता यूनान साम्राज्य के पहला शासनकर्ता सिकन्दर महान को दर्शाता है। चीते के चार सिर सिकन्दर महान के देहान्त के पश्चात् साम्राज्य के चार भागों में विभाजित होने की बात का संकेत है। सिकन्दर महान के वियोग के बाद देश चार भागों में विभाजित हो गया अर्थात सीरिया, मिस्र, मकिदूनिया और एशिया माइनर। ये सब राष्ट्र आज स्वतन्त्र राष्ट्र हो गये।

1. एशिया माइनर	–	लिसिमाकस के अधीन हो गया जो वर्तमान में तुर्की (Turkey)
2. मकिदूनिया	–	कासन्डर के अधीन (Macidonia)
3. मिस्र	–	टोलमी के अधीन जो 1930 में स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया (Egypt)
4. सीरिया	–	सेल्यूकस के अधीन वर्तमान में ईरान 1794 में स्वतन्त्र हुआ (Iran)

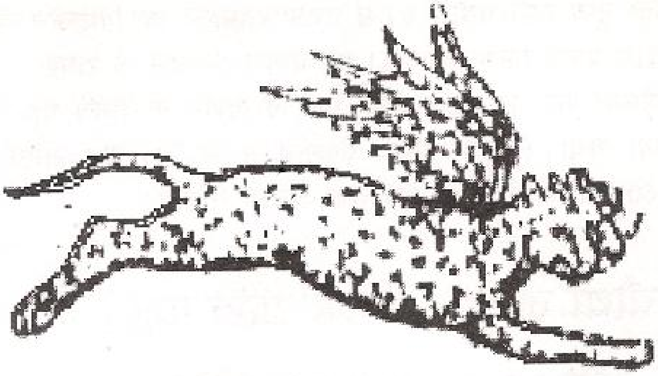

चीता (यूनान साम्राज्य)
दानि. 7 : 6

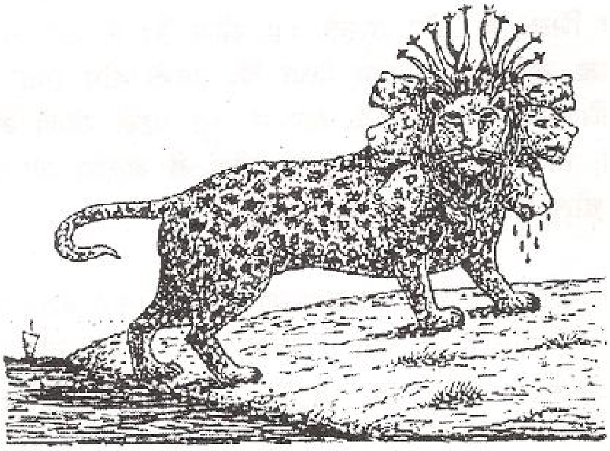

भयंकर और डरावना पशु (रोमी साम्राज्य)
दानि. 7 : 9 - 10

इस विभाजन का रहस्य नबूकदनेस्सर की मूर्ति में नहीं दर्शाया गया है। वहां यह बात गुप्त रखी गयी है। इस प्रकार साम्राज्य का विभाजन चीते के चार सिरों द्वारा प्रकट किया गया है। यह बात दानिय्येल के समझ में न आने से वह परेशान रहा पर मेंढक और बकरे के दर्शन के समय यह भेद उसको समझाया गया (इसका वर्णन अध्याय 8 में है)। यह साम्राज्य B.C.330 से 150 तक अर्थात 180 वर्ष तक शासन में रहा।

4. चौथा जन्तु – (नाम रहित पशु)

रोम (B.C.146 A.D.4760)

उसी रात दानिय्येल को एक अलग दर्शन में यह चौथा पशु दिखाया गया। यह पशु रोम साम्राज्य का संकेत है। यह नबूकदनेस्सर की मूर्ति के लोहे के भाग से संकेत किया गया है। उसका वर्णन यूं आया है: **"फिर इसके बाद मैंने स्वप्न में दृष्टि की ओर देखा, कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है; और उसके बड़े-बड़े लोहे के दांत है। वह सब कुछ खा डालता है और चूर-चूर करता है और जो बच जाता है, उसे पैरों से रौंदता है। और वह सब पहले जन्तुओं से भिन्न है; और उसके 10 सींग है। मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा सींग निकाला और उस के बल से उन पहले सींगों में से तीन उखाड़े गये; फिर मैंने देखा कि इस सींग में मनुष्य की सी आँखें, और बड़ा बोल बोलने वाला मुंह भी है"**।

यह चौथा जन्तु चौथे साम्राज्य का संकेत है। इस दर्शन की व्याख्या का पद 19 में वर्णन किया गया है। वहां लिखा है कि यह वह अन्तिम मानवीय साम्राज्य है। लेकिन इस जन्तु के बारे में समझने से पहले एक और दर्शन दानिय्येल को दिखाया गया। वह परमेश्वर द्वारा इस संसार में स्थापित होने वाले साम्राज्य की चर्चा है। सो हम इस चौथे साम्राज्य के बारे में पहले चर्चा कर लेते है।

यह चौथा जन्तु एक विशेष शक्ल नहीं रखने वाला है। इस प्रकार का एक जन्तु संसार के किसी भी जंगल में नहीं पाया जाता है। दानिय्येल ने उसको भयंकर और डरावना जन्तु बताया है। लेकिन यह भयंकर और डरावना इसलिये है क्योंकि यह तीन जानवर मिलकर एक है। यह समझने के लिये हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का सहारा लेना पड़ेगा। प्र.वा. 13:1,2 में लिखा है: **"और मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे; और उसके सिरों पर निन्दा के नाम लिखे हुए थे। और जो पशु मैंने देखा, वह चीते की नाई था; और उसके पांव भालू के से, और मुंह सिंह का सा था"।**

इस प्रकार का एक पशु यदि आज निकल कर आए और आपने उसे देख लिया तो क्या आपके लिये वह भयंकर और डरावना नहीं होगा? कई लोग रोज़ दिखने वाले कुत्ते से डरते हैं तो फिर इस प्रकार के भयंकर जानवर से क्यों नहीं डरेंगे। बेहोश न हो जाए तो गनीमत है।

सो यह चौथा पशु रोम साम्राज्य का संकेत देता है। यह चौथा साम्राज्य अन्य तीनों साम्राज्य के स्वभाव कठोर और क्रूरता को अपने में समेटे हुए है। वह चार शक्ल अपने में रखे हुए है। मुंह सिंह का सा है जो बाबुल साम्राज्य का संकेत है। फिर शरीर चीते के समान है जो तीसरा साम्राज्य यूनान को दर्शाता है। रीछ या भालू का पांव मादी फारसी साम्राज्य का संकेत है। तो तीनों पहले के साम्राज्य के स्वभाव को अपने में समाया हुआ यह भयंकर स्वरूप, रोमी साम्राज्य को प्रतिनिधित्व करता है। इस पशु के दांत लोहे के थे जो नबूकदनेस्सर की मूर्ति में लोहे के जांघ और पैरों का भाग है जो रोम साम्राज्य को संकेत किया है। वह इस लोहे के दांत से सब कुछ खा डालता है और चूर–चूर करता है और बच जाने पर पैरों से रौंद डालता है। यह उसके कठोरतम शासन प्रणाली का संकेत है। रोमी शासन अन्य सभी साम्राज्य और शासन से लोहे के समान कठोर रहा।

नबूकदनेस्सर की मर्ति में जांघ और पैरों का भाग है। जैसे पांव लम्बे हैं, ठीक इसी प्रकार रोमी साम्राज्य के शासनकाल बहुत लम्बा रहा। वे संसार पर अपना शासन B.C.146-A.D.476 तक करते रहे। जिस प्रकार मर्ति में कमर के बाद दो पैर अलग–अलग दिखाई देते हैं ठीक इसी प्रकार

रोमी साम्राज्य आगे चलकर दो भाग में विभाजित हो गया। B.C.146 में आरंभ हुए रोमी साम्राज्य A.D. पहली शताब्दी में आकर बहुत ही उन्नति प्राप्त कर लिये। लेकिन A.D. चौथी शताब्दी में पहुंच कर वह विभाजित हो गया और पश्चिमी रोम और पूर्वी रोमा के नाम से जाना गया। A.D.15 वीं शताब्दी में पश्चिमी रोमा साम्राज्य कई जातियों के अधीन हो गये। A.D. 15 वीं शताब्दी में पूर्वी रोम तुर्कियों के आक्रमण के पश्चात् तुर्की राज्य में परिणित हो गया। इस प्रकार दोनों विभाग साम्राज्य शासन से लोप हो गये।

लेकिन आज भी रोमी साम्राज्य का प्रभाव पूरे यूरोप में साया कर रहा है बल्कि सारे संसार में असर कर रहा है। आधुनिक यूरोपीय राष्ट्र लगभग सभी राष्ट्र रोमी साम्राज्य के नियम संहिता के अनुसार ही शासन कर रहे हैं। रोमी नियम संहिता सारे विश्व राष्ट्र को नियंत्रित कर रहा है। लेकिन रोमी शक्ति आज एक दस संयुक्त राज्य के रूप में संसार में नहीं है। रोमी साम्राज्य आज सारे संसार में अपने प्रभाव को डालते हुए जन समुदाय रूपी सागर में डूबा पड़ा है। वह एक समय जन समुदाय रूपी सागर से बाहर निकलने के संबन्ध में बाईबल की भविष्यवाणी पूर्व सूचना दे चुकी है। मतलब एक समय रोमी साम्राज्य फिर से एक साम्राज्य के रूप में प्रकट होने वाला है।

परमेश्वर का राज्य

चौथे जन्तु का दर्शन देखकर उसकी व्याख्या कर समझाने से पहले एक और दर्शन उससे एकदम लगा हुआ दिखाया गया था। दानिय्येल ने उस दृश्य को भी बड़े स्पष्ट रूप में देख लिया। वह दृश्य परमेश्वर पिता से राज्य और शासन का अधिकार प्राप्त करने का दृश्य था। वह वर्णन इस प्रकार आया है, **"मैंने देखते-देखते क्या देखा, कि सिंहासन रखे गये, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे। उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हज़ार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे, फिर न्यायी बैठ गये, और पुस्तकें खोली**